@Qpatrika
@qaumipatrika hindi
instagram.com/qaumipatrika

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित
मंगलवार, 29 अप्रैल 2025

VISIT:
www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 168 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

पहलगाम हमले को लेकर अफरीदी के बेतुके बयान पर बिफरे ओवैसी

नई दिल्ली, 28 अप्रैल। पाकिस्तान क्रिकेट टीम के पूर्व खिलाड़ी शाहिद अफरीदी के पहलगाम हमले को लेकर दिए बतुके बयान पर असदुद्दीन ओवैसी ने करारा हमला बोला है। एआईएमआईएम के मुखिया ओवैसी ने अफरीदी को जमकर फटकार लगाई और दुत्कारने वाले लहजे में उन्हें जोकर करार दिया। जब एक संवाददाता ने ओवैसी से शाहिद अफरीदी को लेकर सवाल पूछा तो ओवैसी ने कहा, कौन है ये? नाटक है। मेरे सामने क्या जोकरों का नाम ले रहे हो। इसके साथ ही ओवैसी ने पाकिस्तान को फाइनेंसिएल एक्शन टास्क फोर्स की ग्रे लिस्ट में डालने की मांग की। उन्होंने कहा कि सरकार क्या करेगी और क्या नहीं करेगी, यह सरकार को तय करना है। मेरी मांग है कि पाकिस्तान को फिर से एफएटीएफ की ग्रे लिस्ट में डालना चाहिए। यह जरूरी है। पाकिस्तान बहाने से ऐंठे गए पैसे से आतंकवाद को पाल रहा है। अफरीदी ने पाकिस्तानी मीडिया के सामने भारत के खिलाफ जमकर जहर उगला था। उन्होंने बेतुका दावा करते हुए कहा था कि हमला हुआ नहीं कि 10 मिनट के अंदर नई दिल्ली ने इस्लामाबाद को इस हमले के लिए जिम्मेदार ठहरा दिया। इस्लाम शांति से रहना सिखाता है। पाकिस्तान इस तरह की हरकतों का समर्थन नहीं करता है। भारत को खुद को दोषी ठहराना चाहिए। वहां अगर पटाखा भी फट जाता है तो आरोप पाकिस्तान पर लगता है। इसके बाद अफरीदी ने भारतीय मीडिया पर भी बेबुनियाद आरोप मढ़े। उन्होंने कहा, हैरानी की बात है कि हमले के एक घंटे के अंदर ही उनका मीडिया बॉलीवुड में बदल गया। हर चीज को बॉलीवुड मत बनाओ। मैं हैरान हो गया, जिस तरह की वो बातें कर रहे थे। मैंने कहा देखो इनकी सोच, ये अपने आप को पढ़े लिखे लोग कहते हैं।

सिंधु जल संधि तोड़ने से पाकिस्तान के कंटेंट पर बैन तक

सिम्मी कौर बब्बर

नई दिल्ली, 28 अप्रैल। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद लोगों में गुस्सा है। सरकार ने अलग-अलग स्तर पर कई कदम उठाए हैं। इस पूरे घटनाक्रम के बीच भारत कूटनीतिक स्तर पर पाकिस्तान को घेरने में जुटा है। भारत के इन कदमों को दुनिया के कई देशों का भी समर्थन मिला है। भारत के सख्त तेवर से पाकिस्तानी बौखलाए हुए हैं। इस बौखलाहट में कई बेतुके बयान भी सीमा पार से आ रहे हैं। यहां तक कि एक पूर्व पाकिस्तानी क्रिकेटर ने तो यहां तक कह दिया कि यह हमला भारत ने खुद कराया है। ऐसे में यह जानना अहम है कि पहलगाम आतंकी हमले के बाद से अब तक क्या-क्या हुआ है? भारत ने कौन-कौन से कदम उठाकर जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद फैलाने वाले पड़ोसी को घेरा है? इस सिलसिले में भारत की सबसे ताजा कार्रवाई क्या है? राजनीतिक स्तर पर कैसे नेता और सियासी दल एकजुट हुए हैं? आइये जानते हैं... भारतीय नौसेना ने पश्चिमी समुद्री क्षेत्र (अरब सागर) में गाइडेड मिसाइल विध्वंसक पोत आईएनएस सूरत से मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल का सफलतापूर्वक परीक्षण किया। दूसरी तरफ सबसे उन्नत विमानवाहक पोत आईएनएस विक्रांत को भी अरब सागर में तैनात कर दिया। वहीं, वायुसेना ने मध्यक्षेत्र में राफेल और सुखोई-30 जंगी जहाजों के साथ युद्धाभ्यास 'आक्रमण' शुरू किया है। इसके तहत पहाड़ी और जमीनी लक्ष्यों पर हवाई हमलों का अभ्यास भी किया। वायुसेना के उपकरणों को पूर्वी सेक्टर से सेंट्रल सेक्टर के लिए रवाना किया गया। इस युद्धाभ्यास में पायलट असली युद्धक परिस्थितियों में अभ्यास किया, जिससे जंग के हालात का अनुभव हासिल हो सके। यह अभ्यास वायुसेना के दो स्क्वाड्रन की अगुवाई में हुआ और इसमें सुखोई एसयू-30 भी शामिल हैं। राफेल विमान हरियाणा के अंबाला और पश्चिम बंगाल के हाशिमपुरा में तैनात हैं। अभ्यास में हवा से हवा में मार करने वाले अति उन्नत मीटियोर और लंबी दूरी तक सटीक निशाना लगाने वाले मिसाइल संयक्ष का इस्तेमाल किया जा रहा है। साथ ही वायुसेना के अन्य स्क्वाड्रन भी बड़े स्तर पर तैयारी में जुटे बताए जा रहे हैं। इनमें खासतौर पर मिराज-2000 युद्धक विमान को तैयार किया जा रहा है। इसके अलावा भारत ने पाकिस्तान की सीमा से लगते क्षेत्रों में सुरक्षा कड़ी कर दी। गुजरात से लगे समुद्री तट पर चौकसी बढ़ा दी गई। इसके अलावा राजस्थान में पाकिस्तान से लगते बॉर्डर पर सुरक्षा व्यवस्था चाक-चौबंद कर दी गई। पहलगाम हमले के बाद भारत की पूरी फिल्म इंडस्ट्री एक साथ आ गई। सलमान खान, शाहरुख खान, आमिर खान से लेकर अक्षय कुमार, संजय दत्त ने पीड़ितों और उनके परिजनों के प्रति संवेदना जताई। इसके अलावा दक्षिण भारत से भी जूनियर एनटीआर, अल्लू अर्जुन समेत कई बड़ी हस्तियों ने इन हमलों पर दुख जताया और न्याय की उम्मीद जताई। दूसरी तरफ खेल के क्षेत्र में भारत के साथ-साथ दुनियाभर की हस्तियों ने पहलगाम हमले पर दुख जताया। आईपीएल के मैच में देश के साथ-साथ विदेशी खिलाड़ी भी मृतकों को श्रद्धांजलि देने के लिए काली पट्टी बांधकर खेलने उतरे। ऑस्ट्रेलियाई टीम के कप्तान और आईपीएल में हैदराबाद की कप्तानी कर रहे पैट कमिंस ने कहा कि यह हमारे लिए भी दिल दहला देने वाला है, हमारी संवेदनाएं पीड़ितों और उनके परिवारों के साथ हैं। दूसरी तरफ भारत ने पाकिस्तान के इस्लामाबाद में होने वाले सेंट्रल एशियन वॉलीबॉल चैंपियनशिप से भी नाम वापस ले लिया। इसके अलावा खबरें आईं कि भारत पुरुष हॉकी एशिया कप के लिए पाकिस्तानी खिलाड़ियों को वीजा न देने की तैयारी कर रहा है। यह टूर्नामेंट हॉकी वर्ल्ड कप के लिए क्वालिफायर के तौर पर भी अहम होंगे। पहलगाम में बर्बर आतंकी हमला मामले में अमेरिका, रूस, इस्त्राइल, ब्रिटेन, फ्रांस, जापान जैसे देश पहले ही भारत के रुख का समर्थन कर चुके हैं। वहीं मुस्लिम देशों में धमक रखने वाले सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात जैसे देश आर्थिक और कूटनीतिक कारणों से विश्व व्यवस्था (ग्लोबल ऑर्डर) में तेजी से हो रहे बदलाव के कारण भारत के ज्यादा करीब आए।

26/11 हमले के मास्टरमाइंड तहव्वुर राणा को 12 दिन की हिरासत बढ़ाई

कौमी संवाददाता

नई दिल्ली, 28 अप्रैल। पटियाला हाउस कोर्ट ने 26/11 मुंबई हमलों के आरोपी तहव्वुर हुसैन राणा की हिरासत 12 दिनों के लिए बढ़ा दी है। एनआईए की अर्जी पर सोमवार को कोर्ट ने फैसला सुनाया। राणा को उसकी 18 दिन की एनआईए हिरासत की समाप्ति पर कड़ी सुरक्षा के बीच विशेष एनआईए न्यायाधीश चंद्रजीत सिंह के समक्ष पेश किया गया। वरिष्ठ वकील दयान कृष्णन और विशेष सरकारी अभियोजक नरेन्द्र मान द्वारा चैम्बर कार्यवाही में राष्ट्रीय जांच एजेंसी का प्रतिनिधित्व किया। वहीं दिल्ली विधिक सेवा प्राधिकरण के अधिवक्ता पीयूष सचदेवा तहव्वुर राणा का पक्ष रखा। इससे पहले 11 अप्रैल को कोर्ट ने राणा को 18 दिन की हिरासत में भेजा था। इस दौरान एनआईए ने उससे 2008 के घातक हमलों के

पीछे की पूरी साजिश का पता लगाने के लिए विस्तार से पूछताछ की। बता दें कि इस हमले में 166 लोग मारे गए थे और 238 से अधिक घायल हुए थे। मुंबई आतंकी हमलों के साजिशकर्ता तहव्वुर राणा को अमेरिका से प्रत्यर्पित कर भारत लाया गया। राणा को लेकर दिल्ली पहुंची राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) की विशेष टीम में तीन अधिकारियों का सबसे अहम रोल रहा। जिन अधिकारियों ने राणा को अमेरिका से भारत लाने में अहम भूमिका निभाई है, उसमें 1997 बैच के झारखंड कैडर के आईपीएस आशीष बत्रा, छत्तीसगढ़ कैडर के आईपीएस अधिकारी प्रभात कुमार के अलावा झारखंड कैडर की महिला आईपीएस जया रॉय शामिल हैं। अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने 2023 में उसके प्रत्यर्पण को मंजूरी दी थी, जिसे फरवरी 2025 में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अंतिम रूप से स्वीकृति दी। 26/11 मुंबई हमले में 174 लोगों की जान गई थी और 300 से अधिक लोग घायल हुए थे। इस हमले को पाकिस्तान स्थित आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा ने अंजाम दिया था। राणा पर आरोप है कि उसने इस हमले की साजिश में अहम भूमिका निभाई थी। 2011 में भारतीय अदालत ने उसे दोषी ठहराया था, लेकिन वह उस समय अमेरिका में था। 2009 में अमेरिका में उसकी गिरफ्तारी हुई थी, और तब से वह प्रत्यर्पण के खिलाफ कानूनी लड़ाई लड़ रहा था। तहव्वुर हुसैन राणा एक पाकिस्तानी-कनाडाई नागरिक है, जो पहले पाकिस्तान सेना में डॉक्टर के रूप में कार्यरत था। 1990 के दशक में वह कनाडा चला गया और 2001 में कनाडाई नागरिकता हासिल की। बाद में वह शिकागो में बस गया, जहां उसने कई व्यवसाय शुरू किए, जिसमें एक इमिग्रेशन कंसल्टेंसी भी शामिल थी। राणा पर लश्कर ए तैयबा के साथ संबंधों और आतंकी गतिविधियों में शामिल होने का आरोप है।

हिम्मत है तो भारत आकर दिखाओ

सूरत (गुजरात), 28 अप्रैल। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल ने पाकिस्तानी नेता बिलावल भुट्टो जरदारी के भड़काऊ बयान पर पलटवार किया। पाटिल ने उन्हें चुनौती देते हुए कहा कि ऐसे दहाड़ने का कोई मतलब नहीं है। अगर हिम्मत है तो भारत आकर दिखाएं। पहलगाम हमले के बाद सिंधु जल समझौता निलंबित होने के बाद भुट्टो ने धमकी दी थी कि अगर पानी रोका गया तो नदियों में खून बहेगा। सूरत में रविवार को एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पाटिल ने कहा, मोदीजी कहते हैं- जल है तो बल है (पानी है तो ताकत है)। मोदी साहब ने कहा था कि (सिंधु जल संधि के तहत) पाकिस्तान को पानी नहीं मिलना चाहिए। इस पर बिलावल गुस्से में आ गए। वह कहते हैं कि अगर नदी का पानी नहीं मिलेगा तो भारत में खून की नदियां बहेंगी। भाजपा सांसद ने आगे कहा, क्या इससे हम डर जाएंगे? मैं उनसे (भुट्टो) कहता हूं- भाई अगर आपके पास थोड़ी सी हिम्मत है तो यहां आओ। यह दहाड़ पर ध्यान न दो, पानी बचाना हमारी जिम्मेदारी है। पाटिल रविवार को वर्षा जल संचयन के लिए 2,500 से अधिक ढांचों के निर्माण कार्य के शुभारंभ बाद एक कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान जनभागीदारी से जल संरक्षण कार्यक्रम में शामिल लोगों ने पानी बचाने का संकल्प लिया। भुट्टो ने शुक्रवार को कहा था, सिंधु हमारा है और हमेशा हमारा रहेगा। या तो हमारा पानी इसके जरिए बहेगा या खून बहेगा। भारत ने पहलगाम हमले के बाद पाकिस्तान के साथ 1960 की सिंधु जल संधि को निलंबित किया है, जब तक इस्लामाबाद सीमा पार आतंकवाद को अपना समर्थन स्थायी रूप से बंद नहीं कर देता। सिंधु जल समझौते में छह नदियां शामिल हैं- सिंधु, रावी, ब्यास, सतलुज, झेलम और चेनाब।

आयुष्मान भारत वय वंदना योजना का शुभारंभ

सौरभ शर्मा

नई दिल्ली, 28 अप्रैल। विकास पुरी के मोहन गार्डन निवासी राम सिंह नेगी दिल्ली में आयुष्मान वय वंदना कार्ड के पहले लाभार्थी बने। उन्हें केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी और दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता सहित अन्य मंत्री ने कार्ड देकर सम्मानित किया। इस दौरान उन्होंने कई अन्य बुजुर्गों को भी कार्ड वितरित किया। आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (एबी पीएम-जेएवाई) के तहत आयुष्मान वय वंदना कार्ड की मदद से 70 साल या इसे अधिक उम्र के बुजुर्गों को निःशुल्क स्वास्थ्य सुविधा मिलेगी। इन बुजुर्ग नागरिकों को एबी पीएमजेएवाई पैनल वाले अस्पतालों में इलाज के लिए प्रति वर्ष ? 10 लाख तक का स्वास्थ्य कवर मिलेगा। इसका लाभ दिल्ली का कोई नागरिक ले सकता है। हालांकि उसके पास कोई दूसरी योजना न हो। दिल्ली में इनकी संख्या 6 लाख से अधिक मानी जा रही है। दिल्ली में आयुष्मान भारत वय वंदना योजना के शुभारंभ पर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि दिल्ली में पहली बार ट्रिपल इंजन की सरकार का कार्यक्रम है। अब दिल्ली में किसी का अधिकार मारा नहीं जाएगा। दिल्ली में बहाना नहीं चलेगा। दिल्ली में हर काम पूरा होगा। बच्चों का ज्ञान नहीं अब कार्ड है। 10 लाख तक का इलाज मिलेगा। केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा कि कोरोना काल में केंद्र सरकार ने ग्रुप ऑफ मिनिस्टर बनाया। उस समय वान की मून आए थे। उन्हें मोहल्ला क्लीनिक दिखाने ले गए। इस मोहल्ला क्लीनिक में फर्जी जांच हुई। दवाइयां एक्सपायर वाली दे रहे थे। आप भ्रष्टाचार को खत्म करने का नाम लेकर आए थे। लेकिन अब ये ही भ्रष्टाचार में फंस गए हैं। इन्होंने फेस 3 और फेस 4 मेट्रो का काम रोक दिया था। त्रश्शद्दयद्द क्क्यड्ड4 स्ह्लश्शह्द से एप डाउनलोड करें, लाभार्थी के रूप में लॉग इन करें और पंजीकरण प्रक्रिया का पालन करें। ईकेवाईसी प्रक्रिया पूरी करें और फॉर्म जमा करें। स्वीकृति के बाद कार्ड को एप्लीकेशन से डाउनलोड किया जा सकता है। आधिकारिक एबी पीएम-जेएवाई वेबसाइट या आयुष्मान वय वंदना पोर्टल पर जाएं, लॉग इन करें या रजिस्टर करें, ई केवाईसी पूरा करें और फॉर्म जमा करें। स्वीकृति के बाद आयुष्मान वय वंदना कार्ड डाउनलोड किया जा सकता है। दिल्ली ने आधिकारिक तौर पर 5 अप्रैल को आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (एबी पीएम-जेएवाई) को लागू किया। इस दिन एनएच के साथ एबी पीएम जेएवाई के लिए समझौता किया गया। 10 अप्रैल 2025 को एबी पीएम जेएवाई कार्ड वितरण शुरू हुआ और 28 अप्रैल से बुजुर्ग के लिए पीएम वीवीवाई कार्ड का वितरण शुरू किया गया।

कांग्रेस नेताओं के बयान असंवेदनशील और बेशर्मी भरे: रविशंकर प्रसाद

तेजिन्दर कौर बब्बर

नई दिल्ली, 28 अप्रैल। भाजपा ने सोमवार को कुछ कांग्रेस नेताओं के पहलगाम हमले को लेकर दिए बयानों पर पार्टी के नेताओं राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खरगे को घेर लिया। भाजपा के वरिष्ठ नेता रवि शंकर प्रसाद ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कांग्रेस नेताओं के बयानों को असंवेदनशील और बेशर्मी भरा बताया। दरअसल कुछ कांग्रेस नेताओं ने पहलगाम हमले के पीड़ितों के उस दावे पर सवाल उठाए, जिसमें उन्होंने कहा था कि लोगों के धर्म पूछकर गोली मारी गई। रविशंकर प्रसाद ने कहा कि एक तरफ राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खरगे पहलगाम हमले पर एकजुटता की बात करते हैं तो दूसरी तरफ उनके नेता इस तरह के बयान दे रहे हैं। प्रसाद ने पूछा कि क्या राहुल गांधी और खरगे के बयान महज औपचारिकता ही हैं। पूर्व केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने कहा कि कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया का बयान पाकिस्तान के न्यूज चैनलों द्वारा दिखाया जा रहा है। जब पूरी दुनिया के देश भारत के साथ हैं, तो कर्नाटक जैसे अहम राज्य के सीएम ऐसा बयान दे रहे हैं। भाजपा नेता ने महाराष्ट्र कांग्रेस के नेता विजय वडेट्टीवार, कर्नाटक कांग्रेस के नेता आरबी तिम्मापुर और प्रियंका गांधी के पति रॉबर्ट वाड्रा के बयानों का जिक्र किया और कांग्रेस पार्टी को जमकर लताड़ा। रविशंकर प्रसाद ने कहा कि क्या राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खरगे का अपनी पार्टी पर कोई नियंत्रण नहीं है? या सिर्फ दोनों खुद औपचारिकता करके अन्य नेताओं को मन मुताबिक कुछ भी बोलने की आजादी दे रहे हैं? प्रसाद ने कहा कि कांग्रेस नेताओं के बयान पाकिस्तानी मीडिया द्वारा भारत को बदनाम करने के लिए इस्तेमाल किए जा रहे हैं। उन्होंने कांग्रेस नेताोओं के बयानों को असंवेदनशील और बेशर्मी भरा बताया। उल्लेखनीय है कि कर्नाटक के सीएम सिद्धारमैया से जब आतंकी हमले पर भारत की प्रतिक्रिया के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि युद्ध की कोई जरूरत नहीं है। हम इसके पक्ष में नहीं हैं। हमें कड़े कदम उठाने चाहिए। सुरक्षा बढ़ाई जानी चाहिए। कांग्रेस नेता विजय वडेट्टीवार ने अपने बयान में कहा था कि सरकार को पहलगाम हमले की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। वे (सरकार) कह रहे हैं कि लोगों से पूछकर (उनका धर्म पूछकर) गोलियां मारी गईं..लेकिन क्या आतंकियों के पास इतना समय था? आतंकियों का कोई धर्म और जाति नहीं होती। सरकार को उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करनी चाहिए। कर्नाटक कांग्रेस के नेता आरबी तिम्मापुर ने भी ऐसा ही बयान दिया था।

पीएम मोदी वही करते हैं जिससे भारत को होता है फायदा: अनिल विज

अंबाला, 28 अप्रैल। अंबाला में प्रदेश के ऊर्जा, परिवहन और श्रम मंत्री अनिल विज ने सिंधु जल समझौते का पानी छो?ने को लेकर पत्रकारों से बातचीत के दौरान कहा कि पाकिस्तान की किस्मत में तो रोना ही रोना है, अगर हम पानी रोकते हैं तो भी रोता है अगर हम पानी छोड़ते हैं तो भी रोता है। उन्होंने कहा यह हमारा पानी है, हम इसे जैसे भी इस्तेमाल करें। उन्होंने इस मामले में पूर्व की कांग्रेस सरकार को घेरते हुए कहा कि यह तो साल 1960 में हमारे कुछ पाक परस्त नेताओं ने हिंदुस्तान का ध्यान न रखकर पाकिस्तान को फायदा पहुंचाने के लिए यह ट्रीटी की थी। मगर अब देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हैं। वो वही करते हैं जिससे भारत को फायदा होता है। गौरतलब है कि भारत द्वारा सिंधु जल समझौता रद्द करने के बाद पाकिस्तान को जाने वाला पानी बंद कर दिया गया था। जिसके बाद पाकिस्तान में इस को लेकर हो-हल्ला मच गया है, लेकिन अब जब पानी छोड़ दिया गया तब भी पाकिस्तान इस मुद्दे पर खूब हल्ला मचा रहा है। वहीं उन्होंने कहा कि पाकिस्तान ही आतंकियों की जन्मभूमि है। बता दें की कश्मीर के पहलगाम में बीते 22 अप्रैल को पर्यटकों पर आतंकी हमला हुआ था जिसमें 26 पर्यटकों की मौत हो गई। इस घटना के बाद देश के लोगों में गुस्सा है। वहीं, केंद्र सरकार ने घटना के तुरंत बाद सिंधु जल समझौते को रद्द कर दिया था।

26 साल में पहली बार लोगों को ऐसे बाहर आते देखा: मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला

नरेश मल्होत्रा

जम्मू, 28 अप्रैल। पहलगाम आतंकी हमले के बाद आज जम्मू विधानसभा का एक दिन के लिए विशेष सत्र बुलाया गया है। सत्र में हमले की निंदा करने के साथ आतंकी हमले में जान गंवाने वालों को श्रद्धांजलि दी गई। पढ़ें पल-पल का अपडेट जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा, आतंकवाद और उग्रवाद तभी खत्म होगा जब लोग हमारा समर्थन करेंगे। यह इसकी शुरुआत है... हमें ऐसा कुछ नहीं कहना या दिखाना चाहिए जिससे इस आंदोलन को नुकसान पहुंचे... हम बंदूकों के बल पर उग्रवाद को नियंत्रित कर सकते हैं, यह तभी खत्म होगा जब लोग हमारा समर्थन करेंगे। और अब ऐसा लगता है कि लोग उस बिंदु पर पहुंच रहे हैं। जम्मू-कश्मीर के सीएम उमर अब्दुल्ला ने कहा कि मैं इस मौके का इस्तेमाल राज्य का दर्जा मांगने के लिए नहीं करूंगा। पहलगाम के बाद मैं किस मुंह से जम्मू-कश्मीर के लिए राज्य का दर्जा मांग सकता हूं? मेरी क्या इतनी सस्ती सियासत है? हमने पहले भी राज्य के दर्जे की बात की है और भविष्य में भी करेंगे, लेकिन अगर मैं केंद्र सरकार से कहूं कि 26 लोग मर चुके हैं, अब मुझे राज्य का दर्जा दे दो, तो यह मेरे लिए शर्मनाक होगा। सीएम उमर ने कहा कि कठुआ से लेकर कुपवाड़ा तक शायद ही ऐसा कोई शहर या गांव ऐसा होगा, जहां लोगों ने घरों से बाहर आकर इस हमले की निंदा नहीं की... सीएम ने कहा कि बंदूक से आतंकवाद को कंट्रोल कर सकते हैं, लेकिन खत्म नहीं कर सकते। आतंकवाद तब खत्म होगा, जब लोग हमारे साथ होंगे। विधानसभा में मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा कि कश्मीरी ये हमले नहीं चाहते हैं। कोई कश्मीरी इस हमले के साथ नहीं है। इस हमले ने हमें खोखला कर दिया है। सैलानियों को हमने बुलाया था। उनको सुरक्षित भेजने की जिम्मेदारी मेरी थी। 26 साल में कश्मीरियों को ऐसे नहीं देखा।उन्होंने कहा कि बहुत मुश्किल है इन हालात में रोशनी ढूंढना। पीड़ितों से माफी मांगने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। उन बच्चों और पत्नियों को सांत्वना नहीं दे पाया। ये समझ से परे है कि क्या कहकर माफी मांगूं। पीड़ितों से माफी मांगने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। जम्मू-कश्मीर के सीएम उमर अब्दुल्ला ने कहा, कोई भी इस हमले का समर्थन नहीं करता है। इस हमले ने हमें खोखला कर दिया है। हम इसमें उम्मीद की किरण तलाशने की कोशिश कर रहे हैं... पिछले 26 सालों में मैंने कभी लोगों को इस तरह के हमले के खिलाफ प्रदर्शन करते नहीं देखा। जम्मू-कश्मीर के सीएम उमर अब्दुल्ला ने कहा कि इस घटना ने पूरे देश को प्रभावित किया है। हमने पहले भी ऐसे कई हमले देखे हैं... बायसरन में 21 साल बाद इतने बड़े पैमाने पर हमला किया गया है। मुझे नहीं पता था कि मृतकों के परिवारों से कैसे माफी मांगूं, मेजबान होने के नाते, पर्यटकों को सुरक्षित वापस भेजना मेरा कर्तव्य था। मैं ऐसा नहीं कर सका। मेरे पास माफी मांगने के लिए शब्द नहीं हैं। विधानसभा के सदस्यों ने 22 अप्रैल को हुए हमले में मारे गए 26 लोगों को श्रद्धांजलि देने के लिए दो मिनट का मौन भी रखा। प्रस्ताव दस्तावेज के अनुसार, यह सदन पहलगाम में निर्दोष नागरिकों पर किए गए बर्बर और अमानवीय हमले पर गहरा सदमा और पीड़ा व्यक्त करता है। यह सदन इस जघन्य, कायरतापूर्ण कृत्य की स्पष्ट रूप से निंदा करता है जिसके परिणामस्वरूप निर्दोष लोगों की जान चली गई। प्रस्ताव में इस हमले को कश्मीरियत, संविधान और जम्मू-कश्मीर में एकता, शांति और सद्भाव की भावना पर हमला बताया गया और पीड़ितों और उनके परिवारों के साथ पूरी एकजुटता व्यक्त की गई तथा प्रभावित लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त की गई। प्रस्ताव में आतंकी हमले की निंदा की गई और पीड़ितों के साथ एकजुटता व्यक्त की गई। जम्मू-कश्मीर विधानसभा ने सोमवार को पहलगाम आतंकी हमले की निंदा की और सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति की बैठक के बाद केंद्र सरकार द्वारा घोषित कूटनीतिक उपायों का समर्थन किया। उपमुख्यमंत्री सुरिंदर चौधरी ने पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले के संबंध में विशेष सत्र के दौरान जम्मू-कश्मीर विधानसभा में एक प्रस्ताव पेश किया।

प्रधानमंत्री से पूछिए, पाकिस्तान को क्या जवाब देना है?: फारूक अब्दुल्ला

जम्मू, 28 अप्रैल। सोमवार को जम्मू-कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस के प्रमुख फारूक अब्दुल्ला ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले पर पाकिस्तान को क्या जवाब देना चाहिए। जब उनसे पूछा गया कि इस हमले के बाद भारत को पाकिस्तान के प्रति क्या रुख अपनाना चाहिए, जेकेएनसी प्रमुख ने राज्य विधानसभा के विशेष सत्र से पहले कहा, प्रधानमंत्री से पूछिए, पाकिस्तान को क्या जवाब दिया जाए। नेशनल कॉन्फ्रेंस के मुख्य मुबारक गुल ने इस हमले की कड़ी निंदा करते हुए कहा यह एक बर्बर हमला था। निर्दोष व्यक्ति को मार डालना पूरी मानवता को मार डालने के बराबर है। यह हमारी संस्कृति का हिस्सा नहीं है। इस हमले की पूरे कश्मीर ने निंदा की है। कांग्रेस विधायक निजामुद्दीन भट ने जम्मू-कश्मीर कांग्रेस अध्यक्ष तारिक हमीद कर्रा के बयान का उल्लेख किया। कर्रा साहब के बयान का मतलब यह नहीं कि हम आतंकवाद के खिलाफ नहीं हैं। हम देश के साथ हैं क्योंकि यह देश की सुरक्षा का मामला है। लेकिन एक और विचार है कि जब हम सब कुछ कर चुके हैं, तो फिर से कोशिश क्यों नहीं की जाए? भट ने यह भी कहा कि कांग्रेस सरकार पर नियंत्रण नहीं कर रही है, संघीय सरकार कोई भी कदम उठा सकती है। कांग्रेस पहले ही कह चुकी है कि आतंकवाद के खिलाफ सरकार जो भी कार्रवाई करे, हम उसके साथ हैं। लेकिन विकल्प क्यों छोड़ दें?

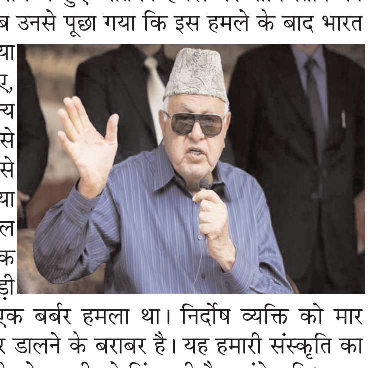

नेपाल इस कठिन समय में खड़ा है भारत के लोगों के साथः डा. राणा

एजेंसी

काठमांडू। भारत के कश्मीर स्थित पहलगाम में आतंकवादी हमले में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि देने के लिए नेपाल के भारतीय दूतावास में सभा का आयोजन किया गया। इसमें नेपाल के उप प्रधानमंत्री विष्णु पौडेल, विदेश मंत्री डा. आरजू राणा देउवा सहित सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। सभी ने इस कायराना हमले की कड़ी निंदा की। विदेश मंत्री डा. राणा ने कहा कि नेपाल आतंकवाद के सभी रूपों और अभिव्यक्तियों की कड़ी निंदा करता है। नेपाल किसी भी आतंकवादी गतिविधि के खिलाफ दृढ़ता से खड़ा है। नेपाल इस कठिन समय में भारत सरकार और लोगों के साथ खड़ा है। आतंकवाद से निपटने के दौरान कोई दोहरा मानक नहीं होना चाहिए। किसी भी आतंकवादी समूह द्वारा किसी भी देश या उसके लोगों के खिलाफ किसी भी उद्देश्य के लिए अपने क्षेत्र का उपयोग नहीं करने दिया जाएगा। श्रद्धांजलि सभा में नेपाली कांग्रेस के वरिष्ठ नेता डॉ. शेखर कोइराला, प्रधानमंत्री के प्रमुख सलाहकार विष्णु रिमाल, माओवादी के राष्ट्रीय सचिव छविलाल विश्वकर्मा, पूर्व विदेश मंत्री एनपी साउद, लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष महंथ ठाकुर, राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी के शिशिर खनाल आदि मौजूद रहे। इनके अलावा नेपाल के राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल, प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली और विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं ने आतंकवादी हमले की निंदा की है।

ईरान के बंदरगाह पर हुए विस्फोट में 40 की मौत, 1000 लोग घायल

ईरान। ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन ने एक बंदरगाह पर ह विस्फोट की घटना में घायल हुए लोगों से मुलाकात की। दक्षिणी ईरान के शाहिद राजेई बंदरगाह पर मिसाइल प्रणोदक बनाने में इस्तेमाल आने वाले रासायनिक घटक की खेप से कथित तौर पर जुड़े भीषण विस्फोट में अब तक 40 लोगों की मौत हो गई और करीब 1000 लोग घायल हो गए हैं। ईरान की सेना ने इस बात से इनकार कर दिया है कि चीन से अमोनियम परक्लोरेट आयात किया गया है। सोशल मीडिया पर घटनास्थल का नया वीडियो सामने आया है, जिसमें बंदरगाह पर एक गड्ढा दिखाई दे रहा है, जो करीब एक मीटर गहरा है। अधिकारियों ने इस क्षेत्र में स्कूल और व्यवसायिक प्रतिष्ठान बंद कर दिए। ईरान के सरकारी टेलीविजन पर प्रसारित वीडियो में अधिकारियों के साथ बैठक के दौरान पेजेशकियन ने कहा कि हमें यह पता लगाना होगा कि ऐसा क्यों हुआ।'' अधिकारियों ने बताया कि आग पर अब काबू पा लिया गया है तथा आपातकालीन कर्मचारियों को उम्मीद है कि रविवार तक आग पूरी तरह से बुझा दी जाएगी। 'प्लैनेट लैब्स पीबीसी' द्वारा ली गई और समाचार एजेंसी प्रेस' द्वारा विश्लेषित उपग्रह तस्वीरों से पता चला कि घटनास्थल पर अभी भी काले धुएं का विशाल गुबार उठ रहा है।

गाजा में इजरायली हवाई हमले में 43 फिलिस्तीनी मारे गये

गाजा। गाजा पट्टी में इजरायल की ओर से किये गये हमलों में कम से कम 43 फिलिस्तीनी मारे गए हैं। गाजा के नागरिक सुरक्षा के प्रवक्ता महमूद बसल ने चीन की न्यूज एजेंसी शिन्हुआ को बताया कि दक्षिणी गाजा पट्टी में खान यूनिस के उत्तर-पश्चिम में हमाद शहर के पास विस्थापित व्यक्तियों के एक तंबू पर इजरायली विमान के हमले में तीन बच्चों और एक महिला सहित आठ लोगों की मौत हो गई। उन्होंने कहा कि एक अन्य इजरायली हवाई हमले में मध्य गाजा के डेर-अल-बलाह में पांच फिलिस्तीनी मारे गए और कई अन्य घायल हो गए, जिनमें से कुछ गंभीर रूप से घायल हुए हैं। उन्होंने बताया कि मध्य गाजा पट्टी में नुसेरात और बुरेज शरणार्थी शिविरों के प्रवेश द्वार के पास एक कैफे पर इजरायली हवाई हमले में छह लोग मारे गए और 20 अन्य घायल हो गए। श्री बसल ने कहा कि मध्य गाजा पट्टी के अल-जवेदा शहर में बच्चों के एक समूह पर इजरायली ड्रोन हमले में कम से कम चार बच्चे मारे गए। गाजा शहर के उत्तर-पूर्व में तुफ़ाह पड़ोस में फ़िलिस्तीनियों की एक सभा को निशाना बनाकर इज़रायली विमानों द्वारा किए गए हमले में तीन बच्चों सहित आठ लोगों की मौत हो गई। श्री बसल के अनुसार, गाजा शहर के पूर्व में शुजाय्या, अल-ज़ैतून और अल-तुफ़ाह पड़ोस में कई घरों पर इज़रायली हवाई और तोपखाने के हमलों में कम से कम 12 फ़िलिस्तीनी मारे गए।

पाकिस्तान में अभियान में दो सैनिक और 15 आतंकवादियों की मौत

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिमी प्रांत खैबर पख्तूनख्वा में अलग-अलग अभियानों में दो सैनिक मृत्यु हो गयी, जबकि 15 आतंकवादी मारे गए।सेना ने यह जानकारी दी। पाकिस्तानी सेना की मीडिया शाखा इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस (आईएसपीआर) ने एक बयान में कहा कि सुरक्षा बलों ने प्रांत के करक, उत्तर और दक्षिण वजीरिस्तान जिलों में खुफिया जानकारी के आधार पर अभियान चलाया। आईएसपीआर के बयान में कहा गया कि करक जिले में सुरक्षा बलों और आतंकवादियों के बीच हुयी मुठभेड़ के दौरान आठ आतंकवादी मारे गए। आईएसपीआर ने कहा कि उत्तरी वजीरिस्तान में चार आतंकवादी मारे गए, साथ ही आतंकवादियों के साथ भीषण गोलीबारी में दो पाकिस्तानी सैनिकों की भी जान चली गई।

सिंधु नहर प्रोजेक्ट : एक बार फिर पीपीपी ने दी शरीफ सरकार से बाहर निकलने की धमकी

एजेंसी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) ने कहा कि अगर कॉमन इंटरेस्ट्स काउंसिल (सीसीआई) की आगामी बैठक में सिंधु नहर संबंधी मुद्दे का समाधान नहीं हुआ तो वह संघीय सरकार से बाहर निकल जाएगी और अपना समर्थन वापस ले लेगी। स्थानीय मीडिया की रिपोर्ट के अनुसार, सिंधु नदी पर छह नहरों के निर्माण के मुद्दे पर आम सहमति बनाने के लिए 2 मई को सीसीआई की बैठक बुलाई गई थी। बता दें सिंधु नदी पर नहरों के निर्माण का भारी विरोध हो रहा है विशेष तौर पर सिंध प्रांत ने जहां प्रदर्शनों का सिलसिला रुक नहीं रहा है। पीपीपी नेता और सिंध के ऊर्जा मंत्री नासिर शाह ने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा, अगर सीसीआई की बैठक में नहरों का मुद्दा नहीं सुलझा तो पीपीपी सरकार से

अलग हो जाएगी। ट्रिब्यून के अनुसार, नासिर शाह के नेतृत्व में पीपीपी प्रतिनिधिमंडल ने सरकार में अपने गठबंधन सहयोगी मुत्ताहिदा कौमी मूवमेंट पाकिस्तान (एमक्यूएम-पी) के साथ बैठक की। उन्होंने एमक्यूएम नेताओं से अनुरोध किया कि वे रिक्त सीट के लिए आगामी सीनेट उपचुनाव से अपना उम्मीदवार वापस ले लें। एमक्यूएम-पी के साथ बैठक के बाद शाह ने कहा कि नहर मुद्दे ने पूरे प्रांत के लोगों को एकजुट कर दिया है, क्योंकि यह सिंध के लिए काफी अहम है। शाह ने कहा, हम जानते हैं कि अगर पीपीपी सरकार से बाहर निकलती है, तो वह चल नहीं सकती है। इसलिए हम उम्मीद करते हैं कि सरकार नहर मुद्दे पर अपना वादा पूरा करेगी। पाकिस्तानी सरकार ने ग्रीन पाकिस्तान इनिशिएटिव के तहत 3.3 अरब डॉलर की लागत से छह नहरों का निर्माण करने की योजना बनाई है, जिससे दक्षिण पंजाब में 12 लाख एकड़ कथित बंजर भूमि को सिंचित किया जाएगा। हालांकि, सिंध प्रांत ने इस फैसले पर कड़ा विरोध जताया है। सिंध सरकार और प्रांत को को आशंका है कि इन नहरों के निर्माण से सिंधु नदी से उसके हिस्से का पानी कम हो जाएगा।

जेल में बंद नेपाल के पूर्व उपप्रधानमंत्री लामिछाने की मुसीबत बढ़ी, एक और घोटाला, मुकदमा दर्ज

एजेंसी

काठमांडू। जेल में बंद नेपाल के पूर्व उप प्रधानमंत्री रवि लामिछाने की मुसीबत और बढ़ गई है। इस बीच उनके खिलाफ एक और को-ऑपरेटिव बैंक घोटाला सामने आया है। इस पर सोमवार को मुकदमा दायर हुआ है। बीरगंज के पाइला को-ऑपरेटिव बैंक में 112 करोड़ रुपये से अधिक के घोटाला सामने आने के बाद सरकार के तरफ से पर्सा जिला अदालत में रवि लामिछाने सहित 30 लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया गया है। बीरगंज के सिटी एसपी गौतम मिश्र ने कहा कि घोटाला को लेकर जिला अदालत में चार्जशीट दाखिल कर दी गई है। इसमें पूर्व उपप्रधानमंत्री रवि लामिछाने सहित कुल 30 लोगों को प्रतिवादी बनाया गया है। एसपी मिश्र ने बताया कि इस चार्जशीट में को-ऑपरेटिव बैंक में कुल 112.65 करोड़ रुपये की अनियमितता का प्रमाण दिया गया है। रवि लामिछाने

पर पहले से ही चार अलग-अलग जिलों के को-ऑपरेटिव बैंक घोटाला का मुकदमा चल रहा है। उनके खिलाफ यह पांचवां केस दर्ज हुआ है। रवि लामिछाने जमानत के लिए सुप्रीम कोर्ट में अपील दायर की है।

पुतिन-जेलेंस्की दो सप्ताह में करें शांति समझौता

एजेंसी

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और यूक्रेन के राष्ट्रपति व्लादिमीर जेलेंस्की दो सप्ताह के भीतर शांति समझौता करें। हालांकि उन्होंने बाद में कहा कि समझौते के लिए थोड़ा और समय स्वीकार्य हो सकता है। ट्रंप ने इससे पहले 26 अप्रैल को वेटिकन सिटी में पोप फ्रांसिस के अंतिम संस्कार के अवसर पर यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की से मुलाकात की थी। एबीसी न्यूज के अनुसार, ट्रंप ने वाशिंगटन लौटने से पहले न्यू जर्सी के मॉरिसटाउन म्यूनिसिपल एयरपोर्ट पर संवाददाताओं से बातचीत में यह इच्छा जताई। उन्होंने कहा कि जेलेंस्की के साथ उनकी मुलाकात अच्छी रही। अब देखना यह है कि अगले कुछ दिनों में क्या होता है। उन्होंने कहा कि वह इस बात से बेहद निराश हैं कि रूस ने यूक्रेन में मिसाइल और ड्रोन हमले जारी रखे हैं। यह तब है, जब उन्होंने पुतिन से बातचीत जारी रहने के दौरान हमलों को रोकने का अनुरोध किया था। ट्रंप से पूछा गया कि जेलेंस्की ने किस बारे में बात की। उन्होंने कहा कि जेलेंस्की ने और हथियारों की जरूरत पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पुतिन को गोलीबारी बंद कर समझौते पर हस्ताक्षर करना चाहिए। राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा कि हालांकि यूक्रेन के लिए क्रीमिया में अपने क्षेत्र को पुनः प्राप्त करना जटिल होगा। इस पर रूस का 2014 से कब्जा है। उन्होंने इसके लिए पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा को रूस को इस क्षेत्र पर कब्जा करने की

अनुमति देने के लिए दोषी ठहराया। इससे पहले विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने कहा कि ट्रंप की जेलेंस्की से मुलाकात के बाद रूस और यूक्रेन समझौते के करीब पहुंच गए हैं। उन्होंने कहा कि अब अमेरिका को यह सोचना होगा कि क्या वह मध्यस्थता करने के लिए आगे आए। रुबियो ने मीट द प्रेस के दौरान कहा कि उन्हें लगता है कि पिछले तीन सालों की तुलना में रूस और यूक्रेन आम तौर पर समझौते के करीब पहुंच गए हैं।

पुलिस के साथ हड़ताली शिक्षकों की हिंसक झड़प, 63 शिक्षक घायल

एजेंसी

काठमांडू। नेपाल में पिछले 27 दिनों से सड़क पर आंदोलन कर रहे शिक्षकों और पुलिस के बीच हिंसक झड़प होने से 63 शिक्षक घायल हो गए हैं। बैरिकेडिंग तोड़ने का प्रयास कर रहे हड़ताली शिक्षकों पर पुलिस लाठीचार्ज किए जाने के बाद दोनों पक्षों के बीच टकराव हुआ। नया बानेश्वर क्षेत्र में शिक्षकों का शांतिपूर्ण प्रदर्शन हिंसक हो गया। पुलिस के साथ यह टकराव तब हुआ जब शिक्षकों ने एक प्रतिबंधित क्षेत्र में जबरन प्रवेश की कोशिश की और बैरिकेडिंग तोड़ने का प्रयास किया। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को तितर-बितर करने के लिए पानी की बौछार के साथ लाठीचार्ज किया। जवाब में नाराज प्रदर्शनकारियों ने सुरक्षा बलों पर पथराव शुरू कर दिया, जिससे स्थिति तनावग्रस्त बन गई। नेपाल शिक्षक महासंघ के महासचिव तुला बहादुर थापा ने बताया कि पुलिस के साथ झड़प में 63 शिक्षक घायल हुए हैं। इनमें करीब एक दर्जन से अधिक शिक्षकों की अवस्था गंभीर बताई गई

है। थापा के मुताबिक घायल शिक्षकों को पास के ही सिविल हॉस्पिटल में दाखिल कराया गया। सामान्य रूप से घायल शिक्षकों का सड़क पर ही उपचार किया गया। इसी बीच शिक्षक महासंघ ने आकस्मिक बैठक बुलाई। संगठन के महासचिव थापा के मुताबिक उनका आंदोलन निरंतर जारी रहेगा। हड़ताल पर रहे शिक्षक महासंघ और सरकार के बीच कई चरणों की वार्ता हुई लेकिन सभी बेनतीजा निकली।

पहलगाम आतंकी हमला : 'निष्पक्ष जांच' की पाकिस्तानी मांग का चीन ने किया समर्थन

एजेंसी

नई दिल्ली। चीन ने पहलगाम आतंकी हमले को लेकर पाकिस्तान की ओर से की मांग का समर्थन करते हुए निष्पक्ष जांच की वकालत की है। लगातार पाकिस्तान की ओर से भी इसे लेकर दलील पेश की जा रही है। वह डिमांड कर रहा है कि इसकी जांच भारत-पाक नहीं बल्कि तीसरे पक्ष के तौर पर अंतरराष्ट्रीय समिति करे। 22 अप्रैल 2025 को पहलगाम के बैसरन घाटी में हुए आतंकी हमले में 26 निहत्थे लोगों की हत्या कर दी गई थी। ग्लोबल टाइम्स के अनुसार, चीन के विदेश मंत्री वांग यी ने पाकिस्तान के डिप्टी पीएम और विदेश मंत्री मोहम्मद इशाक डार से फोन पर बात कर समर्थन दिया है। रिपोर्ट के मुताबिक चीन, कश्मीर क्षेत्र में आतंकवादी हमले के बाद पाकिस्तान और भारत के बीच तनाव की स्थिति पर बारीकी से नजर रख रहा है और निष्पक्ष जांच

की शीघ्र शुरुआत का समर्थन करता है। वह उम्मीद करता है कि दोनों पक्ष संयम बरतेंगे, एक-दूसरे की ओर बढ़ेंगे और तनाव कम करने के लिए काम करेंगे। वांग ने कहा कि आतंकवाद से लड़ना सभी देशों की साझा जिम्मेदारी है और चीन लगातार पाकिस्तान की आतंकवाद विरोधी कार्रवाई का समर्थन करता है। उन्होंने कहा कि एक मजबूत दोस्त और हर मौसम में रणनीतिक सहयोगी साझेदार के तौर पर चीन पाकिस्तान की वैध सुरक्षा चिंताओं को पूरी तरह समझता है और उसकी संप्रभुता और सुरक्षा हितों को बनाए रखने के उसके प्रयासों का समर्थन करता है। पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय ने भी बताया कि इशाक डार ने वांग यी को वर्तमान क्षेत्रीय स्थिति के बारे में जानकारी दी। डार ने चीन के निरंतर और अटूट समर्थन की प्रशंसा की और सभी क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग सुदृढ़ करने में पाकिस्तान की प्रतिबद्धता का उल्लेख किया। चीन की ओर से यह समर्थन शहबाज शरीफ के उस बयान के बाद आया जिसमें उन्होंने पहलगाम आतंकी हमले की 'स्वतंत्र जांच' या निष्पक्ष जांच की मांग की थी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पहले ही कह चुके हैं कि ये दोनों देश के बीच का मामला है और वह इस मामले में हस्तक्षेप करने का इरादा नहीं रखते हैं।

लंदन में पाकिस्तानी उच्चायोग पर हमले को लेकर पाकिस्तान ने उठाई आवाज, ब्रिटिश सरकार से त्वरित कार्रवाई की मांग

एजेंसी

लंदन। ब्रिटेन में पाकिस्तान के उच्चायुक्त डॉ मोहम्मद फैसल ने लंदन स्थित पाकिस्तानी उच्चायोग पर हुए हमले को लेकर गहरी चिंता व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि इस गंभीर मुद्दे को औपचारिक रूप से ब्रिटिश विदेश कार्यालय के समक्ष उठाया गया है। डॉ फैसल ने एक बयान जारी कर कहा कि किसी भी देश के राजनयिक मिशनों की सुरक्षा सुनिश्चित करना मेजबान देश यानी ब्रिटेन की जिम्मेदारी है। उन्होंने बताया कि हमलावर बड़े पत्थर लेकर आए थे और उच्चायोग के चांसरी कार्यालय को नुकसान पहुंचाया। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि पुलिस अब तक हमलावरों की पहचान उजागर नहीं कर पाई है। उच्चायुक्त ने इस हमले को अत्यंत गंभीर चिंता का विषय बताते हुए ब्रिटिश सरकार से आग्रह किया कि हमलावरों को शीघ्र गिरफ्तार कर उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। यह घटना अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राजनयिक सुरक्षा से जुड़े प्रोटोकॉल पर सवाल खड़े कर रही है। पाकिस्तान ने स्पष्ट किया है कि वह इस मामले में आवश्यक कार्रवाई की उम्मीद कर रहा है ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। ब्रिटिश अधिकारियों ने फिलहाल घटना की जांच शुरू कर दी है और उच्चायोग की सुरक्षा बढ़ा दी गई है।

खालिस्तान समर्थक गुरपतवंत सिंह पन्नू पाकिस्तान के मीडिया में भारत के खिलाफ उगल रहा जहर

एजेंसी

इस्लामाबाद। खालिस्तान समर्थक और 'सिख फॉर जस्टिस'संगठन का संस्थापक गुरपतवंत सिंह पन्नू ने पाकिस्तान के मीडिया में भारत के खिलाफ फिर जहर उगला है। वाशिंगटन में पंजीकृत 'सिख फॉर जस्टिस' को भारत सरकार पहले ही आतंकवादी संगठन घोषित कर चुकी है। ऐसा पहली बार नहीं है कि उसने भारत के खिलाफ विष वमन किया हो। पन्नू का विष वमन भारत के जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद उपजे हालात के बीच आया है। पाकिस्तान के 'एआरवाई न्यूज' चैनल को दिए इंटरव्यू में गुरपतवंत सिंह पन्नू ने भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ भी जहर उगला है। उसने इंटरव्यू में अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद और कश्मीर में चल रहे संघर्ष जैसे मुद्दों पर बात की है। उसने खुलकर कहा कि वह

पाकिस्तान के साथ एकजुटता व्यक्त कर रहा है। उसने कहा कि वह पाकिस्तान के पंजाब में भारत की सेना के प्रवेश करने के किसी भी प्रयास का दृढ़ता से विरोध करेगा। पन्नू ने टिप्पणी की कि उसकी संयुक्त राज्य अमेरिका में हत्या कराने की कोशिश की गई। खालिस्तान समर्थक पन्नू ने कहा कि कश्मीर के लोगों को दुनिया भर में भारतीय दूतावासों के बाहर विरोध प्रदर्शन करना चाहिए। गुरपतवंत सिंह पन्नू ने इंटरव्यू में क्लिंटन की भारत यात्रा का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि इस दौरान भारत में सिखों का नरसंहार करवाया गया।उसने कहा कि पाकिस्तान को वैश्विक मंच पर भारत के खिलाफ मोर्चा खोलना चाहिए। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, पेशे से वकील पन्नू का परिवार पहले भारत के पंजाब के नाथू चक गांव में रहता था। बाद में परिवार अमृतसर के पास खानकोट में बस गया। पन्नू के पिता महिंदर सिंह पंजाब मार्केटिंग बोर्ड के सचिव रह चुके हैं। पन्नू के एक भाई और एक बहन हैं। 1990 के दशक में पन्नू ने पंजाब यूनिवर्सिटी से कानून की पढ़ाई की। साल 1991-92 वे पन्नू अमेरिका चला गया। वहां एमबीए किया और न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी से कानून की डिग्री ली। साल 2007 में पन्नू ने सिख फॉर जस्टिस की स्थापना की।संगठन का पंजीकृत कार्यालय अमेरिका के वॉशिंगटन में है। पन्नू न्यूयॉर्क के ऑफिस से काम करता है। वहां उसकी लॉ फर्म भी है।

वैंकूवर फिलिपिनो फेस्टिवल में भीड़ में घुसी कार, 11 लोगों की मौत

एजेंसी

वैंकूवर। कनाडा के वैंकूवर शहर में फिलिपीनो विरासत महोत्सव के दौरान देर रात हुए भीषण हादसे ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया। एक व्यक्ति ने अपनी काली ऑडी एसयूवी से भीड़ में घुसकर 11 लोगों की जान ले ली, जबकि 15 से अधिक लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने घटना में आतंकवादी हमले की आशंका से इनकार करते हुए कहा है कि आरोपित मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से ग्रसित रहा है। यह हादसा रात करीब 8 बजे लापू लापू डे महोत्सव के दौरान उस समय हुआ, जब लोग सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद ले रहे थे। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, आरोपित ने पहले धीरे-धीरे बैरिकेड को पार किया और फिर अचानक तेजी से वाहन दौड़ाते हुए लोगों को कुचल दिया। वैंकूवर पुलिस के अंतरिम प्रमुख स्टीव राय ने प्रेस वार्ता में कहा, यह वैंकूवर के इतिहास का सबसे काला दिन है। उन्होंने बताया

कि आरोपित का मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े मामलों में पहले भी पुलिस और स्वास्थ्य अधिकारियों से संपर्क रहा है। महोत्सव में अपना स्टॉल लगाने आए क्रिस पांगिलिनन ने बताया कि उन्होंने वाहन को बैरिकेड पार करते देखा। पहले वह धीमा चला, फिर अचानक जोर से एक्सिलरेटर दबाया, उन्होंने कहा। शरीर हवा में ऐसे उड़ रहे थे जैसे बॉलिंग गेंद से पिंस उड़ते हैं। यह दृश्य कभी नहीं भूल पाएंगे।पांगिलिनन ने कहा कि घटना के बाद के दृश्य बेहद भयावह थे। एक संकरी गली में जहां खाद्य स्टॉल लगे थे, वहां मृत और घायल लोग बिखरे पड़े थे। हमले में इस्तेमाल वाहन का अगला हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त पाया गया।

सहकारी घोटाले की आरोपित सत्तारूढ़ दल नेपाली कांग्रेस की सांसद माया गिरफ्तार

काठमांडू। नेपाल पुलिस की केन्द्रीय अनुसंधान ब्यूरो (सीआईबी) ने सहकारी घोटाले के एक मामले में आरोपित सत्तारूढ़ दल नेपाली कांग्रेस की सांसद माया राई को बीती रात गिरफ्तार कर लिया।

कौमी पत्रिका

संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।

Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002

फोन : 011-41509689, 23315814

मोबाइल नंबर : 9312262300

E - mail address :
qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in

R.N.I. No.
UP-HIN/2007/21472

Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

अलविदा पोप फ्रांसिस...बेसिलिका डी सांता मारिया मैगीगोर में दी गई अंतिम विदाई

एजेंसी

सना। यमन की हूती-नियंत्रित राजधानी सना पर हाल में हुए अमेरिकी हवाई हमलों में आठ लोगों की मौत हो गई। हूती-संचालित स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने एक बयान में यह जानकारी साझा की। अधिकारियों ने बताया कि प्रारंभिक अनुमान के अनुसार, इस हमले में दर्जनों लोग घायल हो गए हैं। उत्तरी सना के बानी अल-हरिथ जिले में अमेरिकी लड़ाकू विमानों की बमबारी में तीन घरों के मलबों में दबे लोगों की तलाश बचाव दल द्वारा की जा रही है। एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, हूती संचालित अल-मसीरा टीवी ने बताया कि पूरे उत्तरी यमन में राजधानी सहित कई स्थानों पर लगभग 20 अमेरिकी हवाई हमले किए गए। दावा किया गया कि इस हवाई हमले में दक्षिणी और उत्तरी सना में दो घरों को निशाना बनाया गया था, जिसमें कथित तौर पर दो लोगों की मौत हो गई और 10 अन्य घायल हो गए थे। अमेरिकी सेंट्रल कमांड ने पहले कहा था कि हूती नेतृत्व को टारगेट करने के उद्देश्य से यह हमला था। 15 मार्च को वाशिंगटन की ओर से यमन में हूती ठिकानों पर हवाई

हमले फिर से शुरू करने के बाद से हूती समूह और अमेरिकी सेना के बीच तनाव तेजी से बढ़ गया है।

इन हमलों का उद्देश्य हूती विद्रोहियों को लाल सागर और अरब सागर में इजरायल और अंतर्राष्ट्रीय शिपिंग को निशाना बनाने से रोकना था। इससे पहले, हूती नियंत्रित स्वास्थ्य अधिकारियों ने बताया कि यमन की हूती-नियंत्रित राजधानी सना पर रात को अमेरिकी हवाई हमलों में दो लोगों की मौत हो गई और 10 अन्य घायल हो गए। अधिकारियों ने बताया कि सना में कई जगहों पर हमले किए गए। घायलों में दो महिलाएं और तीन बच्चे भी शामिल हैं। सभी घायलों को इलाज के लिए स्थानीय अस्पतालों में ले जाया गया।

हूती संचालित अल-मसीरा टीवी ने बताया कि अमेरिकी सेना ने कई उत्तरी प्रांतों में अतिरिक्त हमले किए। तीन अमेरिकी हमलों में गैलेक्सी लीडर नामक मालवाहक जहाज को भी निशाना बनाया गया था जो हूती समूह के नवंबर 2023 में इजरायल से जुड़े लाल सागर शिपिंग पर हमलों के दौरान जब्त किया गया एक मालवाहक जहाज था।

जेएनयू छात्रसंघ चुनाव में अभाविप का शानदार प्रर्दशन, वैभव मीणा संयुक्त सचिव निर्वाचित

काउंसिल की 42 में से 23 सीटों पर विजय

एजेंसी

नई दिल्ली। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) छात्रसंघ चुनाव में शानदार प्रदर्शन किया। हालांकि वामपंथी गठबंधन ने चार में से तीन शीर्ष पदों पर अपना दबदबा कायम रखा। अभाविप के हिस्से में एक पद आया। आइसा के नीतीश कुमार को अध्यक्ष, डीएसएफ की मनीषा को उपाध्यक्ष, डीएसएफ की मुन्तेहा फातिमा को महासचिव और अभाविप के वैभव मीना को संयुक्त सचिव निर्वाचित किया गया।मतगणना के दौरान अधिकांश समय अभाविप के उम्मीदवार सभी केंद्रीय पैनल पदों पर आगे रहे। यह जेएनयू में पारंपरिक वामपंथी प्रभुत्व के लिए एक मजबूत चुनौती को दर्शाता है। नतीजों में हार का अंतर बहुत कम रहा। यह कैंपस में महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत है। अभाविप के नवनिर्वाचित संयुक्त

सचिव वैभव मीणा ने कहा कि संगठन ने एक दशक के बाद यह जीत हासिल की है।

अगले चुनाव में संगठन सभी शीर्ष चार पदों पर जीत हासिल करेगा। कैंपस हिंसा के कारण देरी के बाद 25 अप्रैल को हुए चुनाव में लगभग 5,500 विद्यार्थियों ने मताधिकार का प्रयोग किया। अभाविप जेएनयू के इकाई अध्यक्ष राजेश्वर कांत दुबे ने बताया कि रविवार को अभाविप ने जेएनयूएसयू काउंसिल में 42 में से 23 सीटों पर विजय प्राप्त कर काउंसिल में पचास प्रतिशत से अधिक की उपस्थिति पर कब्जा कर लिया है। जेएनयूएसयू के फैसलों में अब अभाविप को अहम जगह प्राप्त हो सकेगी। यह विजय अभाविप के रूप में उस सकारात्मक बदलाव की विजय है जिसे जेएनयू के छात्रों ने चुना है। अभाविप का 1999 के बाद यह सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। संगठन ने स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग में जीत हासिल की और स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज, इंटरनेशनल स्टडीज और संस्कृत और इंडिक स्टडीज में उल्लेखनीय बढ़त हासिल की।

अभाविप का प्रदर्शन

-स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज की 5 में से 2 सीटों पर जीत।
-स्कूल ऑफ सोशल साइंस की 5 में से 2 सीटों पर जीत।
-स्कूल ऑफ बायोटेक्नोलॉजी की 2 में से 1 सीट पर जीत।
-स्पेशल सेंटर फॉर मॉलिक्यूलर मेडिसिन की 1 में से 1 सीट पर जीत।
-स्कूल ऑफ कम्प्यूटेशनल एंड इंटीग्रेटिव साइंस की 2 में से 1 सीट पर जीत।
-स्कूल ऑफ कंप्यूटर एंड सिस्टम साइंस की 3 में से 2 सीटों पर जीत।
-स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग की 4 में से 4 सीटों पर विजय।

रोड रेज में दो टैक्सी ड्राइवर को मारा चाकू, आरोपित गिरफ्तार

एजेंसी

नई दिल्ली। उत्तर पूर्वी जिले की खजूरी खास इलाके में रोडरेज में चाकू से हमला करने का मामला सामने आया है। हमले में दो लोग घायल हो गए। सूचना के बाद पुलिस ने घायलों को अस्पताल पहुंचाया और मामला दर्ज कर जांच के दौरान एक आरोपित को गिरफ्तार किया। उत्तर पूर्वी जिलेके डीसीपी हरेश्वर वी स्वामी ने बताया कि आरोपित की पहचान जय कुमार के रूप में हुई है। इसके अलावा वारदात में इस्तेमाल चाकू भी बरामद कर लिया है। पुलिस पकड़े गये आरोपित से पूछताछ करके वारदात में शामिल उसके अन्य साथियों के बारे में पता लगाने की कोशिश कर रही है।पुलिस के मुताबिक, गत 24 अप्रैल रात करीब 9.45 बजे खजूरी चौक के पास रोडरेज में चाकूबाजी की सूचना मिली। सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस टीम को घायल हालत में दो पीड़ित इकराम व शहजाद मिले। दोनों खजूरी खास इलाके के ही रहने वाले हैं। पीड़ितों ने बताया कि जब आरोपी पुराना थाना कट के पास पहुंचे तो उनकी कारें बाइक सवारों के साथ टकरा गईं। कहासुनी के दौरान अज्ञात

पुलिस के मुताबिक, गत 24 अप्रैल रात करीब 9.45 बजे खजूरी चौक के पास रोडरेज में चाकूबाजी की सूचना मिली।

बाइक सवारों ने इकराम और शहजाद पर चाकू से हमला कर उन्हें घायल कर दिया और फरार हो गए। इसके बाद इंस्पेक्टर राकेश यादव की टीम ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। सीसीटीवी कैमरों की फुटेज व स्थानीय सूत्रों की मदद से आरोपितों में से एक की पहचान 23 वर्षीय जय कुमार उर्फ अनुज पंडित निवासी गली संख्या नौ, शिव विहार के रूप में की और फिर उसे गिरफ्तार कर लिया।

कोंडली नहर में डूबे दो युवक, एक की मौत

एजेंसी

नई दिल्ली। पूर्वी दिल्ली के न्यू अशोक नगर स्थित कोंडली नहर में शनिवार शाम नहाने गए दो युवक डूब गए। शोर शराबा हुआ तो एक युवक को राहगीरों ने सुरक्षित निकाल लिया, जबकि दूसरा युवक गहरे पानी में डूब गया। बाद में मामले की सूचना पुलिस, दमकल विभाग और बोट क्लब को दी गई। सूचना मिलते ही बचाव दल मौके पर पहुंच गया। काफी देर तक डूबे युवक की तलाश की गई। बाद में उसका शव नहर से बरामद कर लिया गया। मृतक की पहचान सतपाल (38) के रूप में हुई है। पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद सतपाल का शव परिजनों को सौंपा। पुलिस भोपाल से पूछताछ कर मामले की छानबीन कर रही है। पुलिस के मुताबिक सतपाल परिवार के साथ राजवीर कालोनी, न्यू अशोक नगर में रहता था। वह कारपेंटर का काम करता था। शनिवार को वह अपने घर पर मौजूद था। इस बीच उसका दोस्त भोपाल वहां पहुंचा। दोनों नहर में नहाने निकल गए। नहर में गहरे पानी में जाने की वजह से दोनों डूबने लगे। शोर शराबा हुआ तो कुछ लोग दोनों को बचाने नहर में कूद गए। लोगों ने भोपाल को सकुशल बाहर निकाल लिया जबकि सतपाल वहां डूब गया। बाद में बोट क्लब के इंचार्ज हरीश अपनी टीम के साथ वहां पहुंचे। काफी देर चले रेस्क्यू ऑपरेशन के बाद टीम ने सतपाल का शव नहर से निकाल लिया।

झुग्गियों में लगी आग, दो मासूम की मौत

नई दिल्ली। रोहिणी जिले के रोहिणी सेक्टर-17 स्थित श्री निकेतन अपार्टमेंट के पास बनी झुग्गियों में दोपहर अचानक आग लग गई। सूखा कबाड़ अधिक होने के कारण आग तेजी से फैली। हादसे में दो मासूम बच्चों की जिंदा जलकर दर्दनाक मौत हो गई। जबकि एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। मामले की सूचना के बाद मौके पर पहुंचे दमकल 20 गाड़ियों ने दोपहर करीब साढ़े तीन बजे आग पर काबू पाया। दमकल अधिकारी के अनुसार झुग्गियों में आग के दौरान करीब डेढ़-दो दर्जन छोटे गैस सिलेंडर धमाकों के साथ ब्लास्ट हुए। गनीमत रही कि दमकल कर्मियों को चोट नहीं आई, लेकिन रेस्क्यू ऑपरेशन में दिक्कत जरूर पेश आई। इस घटना में करीब दो सौ से अधिक झुग्गियां जलकर खाक हो गई हैं। यहां रहने वाले करीब एक हजार से अधिक लोग खुले आसमान नीचे आ गए। पुलिस का कहना है कि अभी आग लगने के कारणों का पता नहीं चल सका है। पुलिस एफएसएल की मदद से आग लगने के कारणों का पता लगाने का प्रयास कर रही है। पुलिस के मुताबिक रविवार दोपहर करीब 11.55 बजे रोहिणी सेक्टर-17 स्थित झुग्गियों में आग लगने की सूचना मिली थी। पुलिस, दमकल और एंबुलेंस की गाड़ियां तुरंत मौके पर पहुंच गईं। घटना के दौरान आग में फंस जाने से दो बच्चों की मौत हुई है, जबकि 28 वर्षीय शाबुल शेख घायल हुआ है।

घर से लापता तीन किशोरियों को परिजनों से मिलाया

नई दिल्ली। घर से लापता तीन किशोरियों को साउथ वेस्ट जिला पुलिस ने बरामद कर परिजनों से मिलाया है। उनकी तलाश में पुलिस ने सोशल मीडिया से लेकर मैनुअल स्तर तक सभी संभावित प्रयास किए। किशोरियों के परिजनों व दोस्तों से भी जानकारी हासिल की गई। साउथ वेस्ट डीसीपी सुरेंद्र चौधरी ने बताया कि सागरपुर इलाके से 17 वर्षीय किशोरी के लापता होने की शिकायत मिली थी। पुलिस ने तत्काल मामला दर्ज कर उसकी तलाश आरंभ की। कोई सफलता न मिलने पर एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट के प्रभारी बलबीर सिंह की देखरेख में टीम गठित की गई। इस दौरान टीम ने बच्ची के परिजनों व दोस्तों से जानकारी हासिल की। इसके अलावा विभिन्न ग्रुपों में फोटो भी साझा किए गए। काफी खोजबीन के बाद लापता किशोरी को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से बरामद कर लिया गया। कानूनी औपचारिकताओं के बाद किशोरी को परिजनों को सौंप दिया गया। इसके अलावा नेब सराय इलाके में 14 और 16 वर्षीय किशोरियों के लापता होने की शिकायत मिली थी। एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट की टीम ने मामले की जांच की तो पता चला कि लापता एक किशोरी के पास मोबाइल फोन है। वह दो नंबरों का इस्तेमाल कर रही थी।

पुलिस ने हथियार के साथ दो बदमाशों को किया गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने हाशिम बाबा गैंग के दो शातिर बदमाशों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इनके कब्जे से तीन सेमी-ऑटोमैटिक पिस्तौल और छह जिंदा कारतूस बरामद किए हैं। क्राइम ब्रांच के डीसीपी हर्ष इंदौरा ने रविवार को बताया कि गिरफ्तार बदमाशों की पहचान संभल उप्र निवासी रिहान और जाफराबाद निवासी सलमान अहमद के रूप में हुई है। जांच में पता चला है कि पकड़ा गया रिहान पहले एक निजी अस्पताल में नौकरी करता था। सलमान के संपर्क में आने के बाद उसने नौकरी छोड़ दी और दिल्ली एनसीआर में हाशिम बाबा गैंग के सदस्यों को अवैध हथियारों की सप्लाई करने लगा। जबकि सलमान आठवीं तक पढ़ा है।

रोहिणी अग्निकांड पर सीएम रेखा गुप्ता ने प्रकट किया दुख, हर संभव मदद का आश्वासन

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली के रोहिणी इलाके की झुग्गी-बस्ती में आग लगने के कारण दो बच्चों की मौत हो गई। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने घटना पर दुख प्रकट करते हुए पीड़ित परिवार को हर संभव मदद करने का आश्वासन दिया।

हादसे पर दुख प्रकट करते हुए दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर लिखा, रोहिणी में आग लगने की दुखद घटना से बहुत दुखी हूं। जिन परिवारों ने अपने प्रियजनों को खो दिया है, उनके प्रति हार्दिक संवेदना। मेरी संवेदनाएं और प्रार्थनाएं इस दुर्भाग्यपूर्ण त्रासदी से प्रभावित सभी लोगों के साथ हैं।पीड़ित परिवार के लिए हर संभव प्रयास की बात कहते हुए उन्होंने लिखा, घटना के बाद, दिल्ली सरकार पीड़ितों की सहायता के लिए सभी आवश्यक उपाय कर रही है। स्थानीय विधायक और एसडीएम तुरंत राहत प्रयासों का समन्वय करने के लिए घटनास्थल पर पहुंचे, जिसमें प्रभावित निवासियों

के लिए मोबाइल शौचालय, चिकित्सा सहायता और भोजन का प्रावधान शामिल है। विस्थापित परिवारों को पास के स्कूलों में स्थानांतरित किया जा रहा है, जहां उनके कल्याण के लिए अस्थायी आश्रय और सभी आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था की जा रही है। हम यह सुनिश्चित करने के लिए स्थिति की निगरानी कर रहे हैं कि हर प्रभावित व्यक्ति को समय पर सहायता और पुनर्वास दिया जाए। दिल्ली सरकार इस कठिन समय में प्रभावित सभी लोगों के साथ मजबूती से खड़ी है। बता दें कि आग श्रीनिकेतन अपार्टमेंट के पास की एक झुग्गी में लगी और इसके कारण खाना पकाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले 5 किलो के कई रसोई गैस सिलेंडर फट गए।

दिल्ली हाईकोर्ट ने पीएफआई नेता ओएमए सलाम को दी 3 दिन की कस्टडी पैरोल

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने प्रतिबंधित संगठन पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) के पूर्व अध्यक्ष ओएमए सलाम को केरल जाने के लिए 3 दिन की कस्टडी पैरोल मंजूर की है। कोर्ट ने यह फैसला सलाम की अर्जी पर सुनवाई के बाद दिया, जिसमें उसने परिवार से मिलने के लिए केरल जाने की अनुमति मांगी थी। हालांकि, केंद्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने इस अर्जी का कड़ा विरोध किया था। हाईकोर्ट ने सख्त शर्तों के साथ पैरोल मंजूर की। कोर्ट ने कहा कि सलाम को अपनी और सुरक्षाकर्मियों की यात्रा का खर्च खुद उठाना होगा। साथ ही, पैरोल के दौरान वो मोबाइल फोन, इंटरनेट का इस्तेमाल नहीं कर सकेगा और न ही कोई फोटो या वीडियो ले सकेगा। इसके अलावा, वो केवल अपने परिवार के सदस्यों से मिल सकता है और किसी अन्य व्यक्ति से बातचीत या मुलाकात नहीं कर सकता। कोर्ट ने यह भी सुनिश्चित किया कि उसकी हर गतिविधि पर नजर रखी जाए। एनआईए ने कोर्ट में सलाम

की अर्जी का विरोध करते हुए कहा कि 3 दिन की कस्टडी पैरोल दिल्ली जेल नियमों के तहत सूचीबद्ध नहीं है। एनआईए के वकील ने तर्क दिया कि एक दिन की पैरोल ठीक हो सकती है, लेकिन तीन दिन की अनुमति देना उचित नहीं। उन्होंने सलाम के पीएफआई के पूर्व अध्यक्ष होने का हवाला देते हुए कहा कि उनकी रिहाई से कानून-व्यवस्था बिगड़ सकती है। एनआईए ने बताया कि सलाम की गिरफ्तारी के बाद हिंसा की घटनाओं में 300 मामले दर्ज हुए थे। एजेंसी ने यह भी दावा किया कि पीएफआई का मकसद शरिया कानून लागू करना था, जिसे केरल हाईकोर्ट भी मान चुका है। कोर्ट ने एनआईए के तर्कों पर विचार किया, लेकिन सलाम को मानवीय आधार पर 3 दिन की कस्टडी पैरोल देने का फैसला किया।

भारत सरकार का एक्शन : डॉन, एआरवाई और जियो न्यूज समेत कई पाकिस्तानी यूट्यूब चैनलों पर लगाया बैन

एजेंसी

नई दिल्ली। पहलगाम हमले के बाद भारत लगातार पाकिस्तान के खिलाफ कार्रवाई कर रहा है। इस बीच, भारत सरकार ने पाकिस्तान के कई यूट्यूब चैनलों पर कार्रवाई करते हुए उन पर प्रतिबंध लगा दिया है।

भारत सरकार के गृह मंत्रालय की सिफारिशों पर कई पाकिस्तानी यूट्यूब चैनलों पर प्रतिबंध लगाया गया है। ये चैनल जम्मू-कश्मीर में दुखद पहलगाम आतंकी घटना की पृष्ठभूमि में भारत, उसकी सेना और सुरक्षा एजेंसियों के खिलाफ भड़काऊ और सामुदायिक रूप से संवेदनशील सामग्री, गलत और भ्रामक कथन प्रसारित कर रहे थे। भारत ने जिन पाकिस्तानी यूट्यूब चैनलों पर कार्रवाई की है, उनमें डॉन न्यूज (19.6 लाख सब्सक्राइबर), इरशाद भट्टी (8.27 लाख सब्सक्राइबर), समा टीवी (1.27 करोड़ सब्सक्राइबर), एआरवाई

न्यूज (1.46 करोड़ सब्सक्राइबर), बोल न्यूज (78.5 लाख सब्सक्राइबर), रफ्तार (8.04 लाख सब्सक्राइबर), द पाकिस्तान रेफरेंस (2.88 लाख सब्सक्राइबर), जियो न्यूज (1.81 करोड़ सब्सक्राइबर), समा स्पोर्ट्स (73.5 हजार सब्सक्राइबर), जीएनएन (35.4 लाख सब्सक्राइबर), उजैर क्रिकेट (2.88 लाख सब्सक्राइबर), उमर चीमा एक्सक्लूसिव (1.25 लाख सब्सक्राइबर), अस्मा शिराजी (1.33 लाख सब्सक्राइबर), मुनीब फारूक (1.65 लाख सब्सक्राइबर), सुनो न्यूज एचडी (13.6 लाख सब्सक्राइबर) और राजी नामा (2.70 लाख सब्सक्राइबर) पर प्रतिबंध लगाया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट कमेटी ऑन सिक्योरिटी (सीसीएस) की बैठक में भारत ने सिंधु जल समझौते को रोकने का फैसला किया है। विदेश सचिव विक्रम मिस्त्री ने बताया कि भारत ने सिंधु जल समझौते को फिलहाल रोकने का निर्णय लिया है। यह कदम भारत-पाकिस्तान संबंधों में बढ़ते तनाव के मद्देनजर उठाया गया है। इसके साथ ही, सरकार ने पाकिस्तानी नागरिकों को सार्क के तहत जारी किए गए सभी वीजा छूट रद्द करने का फैसला भी किया है। इसके अलावा भारत में मौजूद पाकिस्तानी दूतावास को बंद करने की प्रक्रिया शुरू की जा रही है। केंद्र सरकार ने पाकिस्तानी राजनयिकों को 48 घंटे के भीतर भारत छोड़ने का निर्देश दिया है। इस फैसले के साथ ही अटारी बॉर्डर चेकपोस्ट को भी बंद किया जाएगा, जिससे भारत और पाकिस्तान के बीच जमीनी संपर्क भी समाप्त हो जाएगा। ये सभी फैसले भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और आंतरिक स्थिरता को ध्यान में रखते हुए लिए गए हैं। भारत ने कश्मीर के पहलगाम में हुए भीषण आतंकी हमले के मद्देनजर ये कदम उठाया है। इस हमले में 25 भारतीय नागरिकों और एक नेपाली नागरिक की मौत हो गई, जबकि कई अन्य घायल हुए हैं।

सेंथिल बालाजी ने मंत्री पद से दिया इस्तीफा

नई दिल्ली, 28 अप्रैल। तमिलनाडु सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को बताया है कि डीएमके नेता वी सेंथिल बालाजी ने मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया है और राज्यपाल ने उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया है। सरकार ने जमानत शर्तों के उल्लंघन मामले में कोर्ट को यह जवाब दिया। जस्टिस अभय एस ओका और ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने तमिलनाडु राजभवन की प्रेस विज्ञप्ति का अवलोकन किया। इसे राज्य सरकार ने अदालत में पेश किया था। पीठ ने कहा कि हमें एक प्रेस विज्ञप्ति सौंपी गई है, जिसमें दर्ज है कि उन्होंने अपना इस्तीफा दे दिया है जिसे राज्यपाल ने स्वीकार कर लिया है। इसलिए अब इस आवेदन पर विचार करने का कोई अवसर नहीं है। वहीं कोर्ट ने मामले की सुनवाई पूरी होने तक बालाजी को पद पर बने रहने से रोकने की ईडी की याचिका को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने डीएमके नेता वी सेंथिल बालाजी से 23 अप्रैल को कहा कि उन्हें पद और आजादी में से किसी एक को चुनना होगा। शीर्ष अदालत ने उन्हें चेतावनी दी कि यदि उन्होंने तमिलनाडु में मंत्री पद नहीं छोड़ा तो उनकी जमानत रद्द कर दी जाएगी। जस्टिस अभय एस ओका व जस्टिस एजी मसीह की पीठ ने इस तथ्य पर आपत्ति जताई कि नौकरी के लिए नकदी घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में जमानत के कुछ दिनों बाद ही बालाजी को तमिलनाडु के कैबिनेट मंत्री के रूप में बहाल कर दिया गया था। बालाजी को 26 सितंबर, 2024 को शीर्ष अदालत ने जमानत दी थी। बालाजी को पिछले साल 29 सितंबर को तमिलनाडु के राज्यपाल आरएन रवि ने मंत्री के रूप में शपथ दिलाई थी। उन्हें प्रमुख विभाग बिजली, गैर-पारंपरिक ऊर्जा विकास, निषेध और उत्पाद शुल्क सौंपे गए थे, जो पहले स्टालिन कैबिनेट में उनके पास थे।

PUBLIC NOTICE

Information is given to general public at large that our client Mr. Jai Bhagwan S/o Late Mr. Rameshwar Dayal is the owner of Freehold Residential half Share East Side proportionate undivided share rights House MC No. 671/16, MCG Property ID-IC4AM7C5, area measuring 71.6 Sq. Yds. Situated in the Residential Colony Known as Nai Basti, Gurugram Tehsil & District Gurugram, Haryana. by virtue of Relinquishment Deed dated 18.04.2024., Vide Doc. No. 650, Book No. 1, SR- Gurugram., In the chain documents below mentioned document not available i.e. Death Certificate of Late Mr. Rameshwar Dayal Died on 23.02.1976 & Regd. Details of Sale Deed dated 06.10.1971 executed by Mr. Nand Lal in favour of Mr. Rameshwar Dayal, Our client is declaring that any other Person does not have any right over the said property, and same property sold too be Ms. Bhawana Alreja which is to be financed by Piramal Capital & Housing Finance Ltd. Branch-Dwarka New Delhi. If any person(s) have any objection(s) or claim(s) with respect to the` right, title or interest in the Said Property then contact us within 07 days from the date of Publication of this notice and or the same to the undersigned if found by anyone. Thereafter no claim shall be entertained

[NAVEEN KUMAR VERMA]
Advocate
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad
Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

PUBLIC NOTICE

Be it known to all concerned that my clients Shri Satya Pal Toor and his wife namely Smt. Santosh Devi both R/o C-104, Dashrathpuri, Gali No.6, Palam Dabri Road, New Delhi-110045, disowned and disinherited their son PANKAJ KUMAR S/O SH. SATYA PAL TOOR and daughter-in-law JYOTI VERMA W/O SH. PANKAJ KUMAR from all their movable and immovable properties situated in Delhi, due to their adamant arrogant, disobedience misconduct and misbehavior towards my clients. Henceforth, anybody dealing with them, may do so at his/her own risk and consequences and my above said clients shall not be held liable for any of the acts, deeds and things done by them.

PRABHA RANI Advocate
Seat No.32, Hall No.1, Lawyers' Chamber Dwarka Court Complex, Sector-10, Dwarka, New Delhi-110075 (INDIA)

सार्वजनिक सूचना

मेरे मुक्किल गीता गुप्ता पत्नी श्री लेट श्री अशोक गुप्ता पता मकान न 71,1 फ्लोर, ज ब्लाक, गली न 4, लक्ष्मी नगर न्यू दिल्ली–110092 दूसरा पता मकान न 1414, गली न चूले वाली पान मंडी सदर बाजार दिल्ली–110006 with shop से अपने पुत्र रीतेश गुप्ता व उसकी पत्नी शिल्पा कश्यप को उनके बुरे व्यहवार के कारण मैं अपनी अचल व चल संपति से बेदखल कर रही हु । भविष्य में मेरा इनसे किसी तरह का कोई लेना देना नहीं है और नाही भविष्य में इन के लेन देनो की मेरी कोई जिम्मेदारी नहीं होगी ।

DR. RADHA PARIHAR & ASSOCIATES ADVOCATE
CH.NO D-603 KARKARDOOMA COURT DELHI-110032

NAME CHANGE

I kamni kapoor W/o Gurvinder singh kapoor R/o C-135a motinagar 3rd floor Delhi-110015 Have changed my name to kamini kapoor

NAME CHANGE

I, VARSHA DAVI W/O HITANSHU SACHDEVA R/O B 132, DUGGAL COLONY, KHANPUR, PUSHPA BHAWAN, SOUTH DELHI, DELHI-110062 have changed my name VARSHA DAVI to VARSHA for all future purposes.

NAME CHANGE

I, hitherto known as FIROJ KHAN S/O AMINUDDIN R/O A-20, GALI NO-7, BALBIR NAGAREXTN, BALBIR NAGAR, NORTH EAST DELHI, DELHI-110032 have changed my name and shall hereafter be known as FIROJ CHOUDHARY. I have changed my name not my religion.

PUBLIC NOTICE

NOTICE is hereby given to public at large that my client **Mr. Rajesh Agarwal** is the owner of House no. 12, admeasuring 533.33 Sq. Yard, Road no. 43 Class- C, Punjabi Bagh, Delhi . Mr. Rajesh Agarwal acquired the property in 3 ways 1/3rd of the property vide WILL executed by Mr. Rajesh Agarwal, 1/3rd share inherent as he is the legal heir of Late Mrs. Rami Devi Aggarwal & 1/3rd share by Gift Deed dated 29.03.2022 and intend to get the financial assistance from **Godrej Finance Limited.** If any person(s) /Institution has/have any objection(s) or claim(s) with respect to the right, title or interest in the said property may please contact us within 07 days from the date of this notice on the address mentioned herein below, failing which my client(s) shall not be held responsible in any manner whatsoever.

Khaitan & Khaitan
A-38 Kailash Colony, New Delhi-110048, Ph. No: 011-49774545

PUBLIC NOTICE

GENERAL PUBLIC AT LARGE IS INFORMED THAT MY CLIENTS NAMELY SHRI MADAN LAL BAIRWA, AGED 43 YEARS S/O LATE GAINDA RAM BAIRWA AND HIS WIFE NAMELY SMT. RAMOTI DEVI BAIRWA W/0 SHRI MADAN LAL BAIRWA, BOTH PERMANENT RESIDENT OF NAPA KA BAS, AMRABAD, DAUSA, LALSOT, RAJASTHAN-303510, PRESENTLY RESIDING AT HOUSE NO.1-17, DHARAM COLONY, GURUGRAM, (HARYANA), HAS DISOWNED AND DEBARRED THEIR DAUGHTER NAMELY MS. KANCHAN, FROM ALL THEIR MOVEABLE AND IMMOVEABLE PROPERTIES AND ALSO SEVERED ALL RELATIONS FROM HER AS SHE IS NOT UNDER THE CONTROL OF MY CLIENTS. MY CLIENTS ARE NOT RESPONSIBLE FOR ANY ACT COMMITTED BY HER. ANYONE DEALING WITH HER MAY DO SO AT HIS/HER OWN RISK, COSTS AND CONSEQUENCES AND MY CLIENTS SHALL NOT BE RESPONSIBLE FOR THE SAME IN ANY MANNER.

Surendra Kr. Chaudhary Advocate
Ch. No. 836, Lawyer's Chamber Block Dwarka Court, Sec-10, Dwarka, New Delhi-75
Mob: 9990416778

NAME CHANGE

It is for general information that I MANNYA SHARMA D/O SANJEEV KUMAR SHARMA R/O RZ- 84, GALI NO-13, TUGHLAKABAD EXTENSION AALI, P O: DISTRICT SOUTH DELHI, DELHI-110019, declare that name of my mother and father has been wrongly written as SUNEETA SHARMA and SANJEEV SHARMA in my 10th and 12th class educational documents. The actual name of my mother and father are SUNITA SHARMA and SANJEEV KUMAR SHARMA respectively which may be amended accordingly.

NAME CHANGE

I, SANTOSHI DEVI M/O NO.4009034N, Rank HAV, Name SHAM LAL R/O VILL-BHAGWAL, NEAR SHIV MANDIR, PO-HAMIRPUR, TEH-MARHEEN, DIST-KATHUA (J&K)-184144 have changed my name from SANTOSHI DEVI to GUDDO DEVI for all future purposes. Vide Affidavit dated 25/04/2025 before Notary Public Dehradun.

NAME CHANGE

I, Mahnaz Khan W/O Akbar Mehdi R/O Flat No-2306, Tower Nirala Estate Phase-2, Techzone-4, Greater Noida Gautam Budh Nagar Uttar Pradesh-201306 Have changed my name to Mahnaz Akbar Mehdi for all future purposes.

NAME CHANGE

I, HARDEEP GULSIA W/0 LATE Shri UDESH GULSIA R/0 D 69 East of Kailash south Delhi 110065 have CHANGE MY NAME TO HARDIP GULSIA FOR ALL PURPOSES

NAME CHANGE

I, SATENDER S/o SHIVJI SINGH R/o 45/4, PIRU VIHAR, SADAR BAZAR, DELHI CANTT, SOUTH WEST DELHI, DELHI-110010, have changed my name from SATENDER to SATYENDER SINGH for all future purposes.

NAME CHANGE

I, No-17030664F Rank-NK Name-ROHIT KUMAR Father of ASHWANI KUMAR Presently residing at VILL-KATAIYA, PO-BAIRKA, DIST-GAYA, BIHAR-823311, have changed my minor son's name from ASHWANI KUMAR to ASHWINI KUMAR for all future purposes vide Affidavit dated 28/04/2025 before Notary Public, Delhi.

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I, Mohit Raj Chaudhary S/O Padam Singh R/O 248-C DG-2 Vikas Puri, Vikas Puri, West Delhi-110018 declare that name of mine has been wrongly written as Mohit Raj in my PPPO NO 349201611479 The actual name of mine is Mohit Raj Chaudhary which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I, Gauri Devi W/O Singheshwar Yadav R/O Jhuggi No-95, Road No-77, D D U Camp , Punjabi Bagh, PO: Punjabi Bagh, Punjabi Bagh, Dist: West Delhi, Delhi -110026, declare that name of mine has been wrongly written as Gori Devi in my Ration card No. 077000162807, the actual name of mine is Gauri Devi

सार्वजनिक सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किलों श्री अनिल कुमार पुत्र श्री चन्द्रभान व श्रीमती रेणु बिन्दल पत्नी श्री अनिल कुमार पता प्लाट नं0 155 डी–ब्लाक अजय पार्क, नया बाजार, नजफगढ, दक्षिण–पश्चिम दिल्ली, दिल्ली–110043 ने अपने पुत्र मिहुल बिदंल आयु करीब 24 वर्ष को उसके अभद्र व्यवहार व नियंत्रण में नहीं होने के कारण अपनी चल व अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया है और अपने सारे सम्बन्ध विच्छेद कर लिये है अगर भविष्य में उपरोक्त पुत्र नैतिक व अनैतिक व अपराधिक कार्य करता है तो वह उसका स्वयं का जोखिम होगा इसमें मेरे मुविक्कलों का कोई लेना देना नहीं होगा।

मनोज कुमार अधिवक्ता
चैम्बर नं0 639, जिला न्यायालय, द्वारका कोर्ट, द्वारका, नई दिल्ली 110075

NAME CHANGE

I, hitherto known as UMED SINGH KADAM S/O GOPAL SINGH KADAM R/O H NO-N-50A, KH NO-78, 1st FLOOR, HARGOBIND ENCLAVE RAJPUR KHURD CHATTARPUR, RAJ PUR KHURD, SOUTH DELHI, DELHI-110068 have changed my name and shall hereafter be known as UMAID SINGH KADAM.

PUBLIC NOTICE

I hitherto known as I, BABBAN MAHTO alias BABAN MAHTO alias BABAN MAHATO S/O JAGLAL MAHTO R/O Qtr. No. 22, Type-II, G B Pant Politechnic, Okhla Phase-3, Okhla industrial estate, S.O, South Delhi, Delhi - 110020, have changed my name and shall hereafter be known as BABBAN MAHTO

अभियुक्त की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा

धारा **84 BNSS** देखिए

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि **ओम प्रकाश पुत्रः जनार्दन, पताः** मकान नं. 322, ए–ब्लॉक इन्द्रा विहार, खोड़ा कॉलोनी, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश ने **FIR No. 551/2016, U/s 33/52 Delhi Excise Act,** दिनांक : 28.09.2016, थानाः जैतपुर, दिल्ली के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है) और उस पर जारी किए गए गिरफ्तारी के वारण्ट को यह लिख कर लौटा दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **ओम प्रकाश** मिल नहीं रहा है और मुझे समाधानप्रद रूप में दर्शित कर दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **ओम प्रकाश** फरार हो गया है (या उक्त वारण्ट की तामील से बचने के लिए अपने आप को छिपा रहा है)। इसलिए इसके द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि **FIR No. 551/2016, U/s 33/52 Delhi Excise Act,** थानाः जैतपुर, दिल्ली के उक्त अभियुक्त **ओम प्रकाश** से अपेक्षा की जाती है कि वह इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **24.07.2025** को या इससे पहले हाजिर हो।

आदेशानुसार
छवी बंसल, एलडी ।।
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी
कोर्ट नं. 09, साकेत कोर्ट, नई दिल्ली

DP/5318/SE/2025 (Court Matter)

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I, Suman W/O Raja Ram R/O 201/65, Krishna Gali No. -5, Adarsh Mohalla, Maujpur , Maujpur, North East Delhi, Delhi -110053, declare that name of my minor daughter and my Husband has been wrongly written as Gunjan and Rajaram in my minor daughter namely Gunjan Kumari aged 15 years in her School record. The actual name of my minor daughter and my husband are Gunjan Kumari and Raja Ram

NAME CHANGE

I, PHOOL SINGH PARMAR S/O DHIR SINGH PARMAR residing at H NO-422-A, 1ST FLOOR, SHANTI MARG, MANDAWALI FAZALPUR, DELHI-110092. Have changed my name to PHOOL SINGH for all future purposes.

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I Mani Mala Prasad W/O Late Rajesh Prasad, R/O Plot No-8, Kh. No-147/15, 24/1, 25/1,, Block-C, Laxmi Vihar,, Najafgarh, South West Delhi, Delhi-110043,declare that name of mine has been wrongly written as Mani Mala in my minor daughter namely Anupama Kumari aged 16 years in her 10th class educational document.The actual name of mine is Mani Mala Prasad,which may be amended accordingly.

मनचलों के खिलाफ नियमानुसार कार्यवाही करके सिखाया सबक

गुरुग्राम। पुलिस महानिदेशक शत्रुजीत कपूर के आदेशानुसार महिलाओं की सुरक्षा को अधिक प्रभावी बनाने के उद्देश्य से चलाए जा रहे सेफ सिटी कैम्पेन के तहत पुलिस आयुक्त विकास अरोड़ा के निर्देशन में कार्य करते हुए महिला थाना पश्चिम की दुर्गा शक्ति पुलिस टीम ने 5 मनचलों बस स्टैण्ड गुरुग्राम से काबू करके उसके खिलाफ नियमानुसार निवारक कार्यवाही की गई। पुलिस टीम द्वारा काबू किए गए उपरोक्त मनचलों के परिजनों को बुलाया गया। मनचलों के परिजनों की उपस्थिति में उससे लिखित में माफीनामा लिया गया व भविष्य में इस प्रकार की कोई गतिविधि ना करने की चेतवानी देकर परिजनों के हवाले किया गया। गुरुग्राम पुलिस द्वारा महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने व मनचलों को रंगेहाथ काबू करने के उद्देश्य से महिला पुलिकर्मियों को सादे कपड़ों (सिविल ड्रेस) में चिन्हित स्थानों पर तैनात किया जाता है। सादे कपड़ों में तैनात महिला पुलिसकर्मी मनचलों की गलत गतिविधियों पर तत्परता से कार्यवाही करते हुए उन्हें रंगेहाथ काबू करती है और सम्बन्धित पुलिस थाना में ले जाकर उनके परिजनों को थाना में बुलाया जाता है और उनके खिलाफ नियमानुसार निवारक कार्यवाही की जाती है। महिलाओं का सम्मान करने व महिला सुरक्षा बारे में बताते हुए महिला विरुद्ध अपराधों के लिए कानून में दिए गए प्रावधानों के अनुसार होने वाली कार्यवाही/सजा के बारे में जानकारी दी जाती है, ताकि वे भविष्य में महिलाओं का सम्मान करें और किसी गलत गतिविधि का हिस्सा ना बने।

गर्मी के चलते बढ़ी कूलरों की मांग

नांगल चौधरी। गर्मी की धमक के साथ ही इलेक्ट्रिकल्स की दुकानों पर कूलरों की बयार दिखाई पडने् लगी है। एकाएक तापमान में हुई बढ़ोतरी से इन दुकानों पर कूलर खरीदारी के लिए भी लोग पहुंचने लगे है। इस धंधे से जुड़े व्यापारियों का कहना है कि मौसम अगर इसी तरह रंग दिखाता रहा तो आने वाले पंद्रह दिनों में ही इनकी बिक्री चरम पर होगी। दुसरे व्यवसायी भले ही मंदी होने का रोना रो रहे हो, लेकिन कूलर विक्रेताओं ने अपनी पूरी तैयारी कर ली है। इस संबंध में दुकानदार राकेश बंसल ने बताया कि इन दिनों कूलर की मांग धीरे-धीरे बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि अचानक गर्मी की धमक बढ़ने से दर्जनों कूलर रोजाना बिक रहे है। उन्होंने बताया कि बाजार में पोलर, खेतान, वीडियोकॉन, केनस्टार का कूलर 8000 से 14000 रुपये की रेंज में व छोटा कूलर 4500 से 5500 रुपये तक की रेंज में उपलब्ध है। उन्होंने बताया कि बाजार में लोहे के कूलर 3500 से 4000 तक के बिक रहे है तथा ग्राहक भी स्थापित कंपनियों द्वारा निर्मित कूलरों को ही खरीदनें में अपनी रुचि दिखा रहे है। उन्होंने उम्मीद जताई कि कूलर व अन्य बिजली उपकरण के व्यापारियों का यह सीजन अच्छा जाना चाहिए क्योंकि इस बार समय से पहले तापमान में बढ़ोतरी देखी जा रही है। जिसके कारण कूलरों की मांग भी अगले कुछ दिनों में और अधिक बढ़ने की संभावना है।

फांसी का फंदा लगाकर दो बच्चों के पिता ने जीवन लीला समाप्त की

नारनौल। स्थानीय सदर थाना के गांव सुराना में एक व्यक्ति ने फांसी का फंदा लगाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। मृतक के परिजनों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को फंदे से उतारकर अपने कब्जे में लिया। जिसके बाद नारनौल के नागरिक अस्पताल से मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया। सदर थाना में पुलिस को दी शिकायत में परिजनों ने बताया कि गांव सुराना निवासी 39 वर्षीय गजेंद्र कुमार का करीब डेढ़ साल पहले एक्सीडेंट हुआ था। इस एक्सीडेंट में गजेंद्र को काफी चोट लगी थी। इसके बाद उसका पांव का ऑपरेशन भी हुआ था। इस ऑपरेशन के बाद से गजेंद्र परेशान रहने लग गया था। परिजनों का कहना है कि वह पिछले कुछ दिन से डिस्टर्ब भी चल रहा था। मानसिक रूप से परेशान होने के कारण वह अक्सर अपने घर के चौबारे में ही रहता था। मृतक गजेंद्र के भाई अजीत सुराना ने बताया कि उसके भाई का एक ओर ऑपरेशन होना था। इसी से वह परेशान रहता था। शनिवार शाम को जब चौबारे में कोई नहीं था, तब उसने फांसी का फंदा लगा लिया। इसकी सूचना जब परिजनों को लगी तो शव को फंदे से उतारकर अस्पताल पहुंचाया गया। जहां चिकित्सकों ने उसको मृत घोषित कर दिया। मृतक गजेंद्र के 18 साल की लडक़ी तथा 14 साल का लडक़ा है।

अटेली सलीमपुर फ्लाईओवर के समीप व्यक्ति से अवैध 13 शराब की बोतल बरामद

मंडी अटेली। अटेली सलीमपुर फ्लाईओवर के समीप एक व्यक्ति से अवैध 13 शराब की बरामद की है। अटेली पुलिस को गुप्त सूचना मिली कि सलीमपुर निवासी सीताराम अटेली सलीमपुर फ्लाईओवर के समीप अवैध शराब बेच रहा है। अगर फोरी रेड की जाये तो शराब सहित काबु किया जा सकता है। पुलिस ने रैडिंग पार्टी तैयार करके सलीमपुर फ्लाईओवर के समीप पहुंची तो एक व्यक्ति सफेद कट्टे के साथ खड़ा था। तभी वह व्यक्ति पुलिस पार्टी को देखकर कट्टे को उठाकर तेज तेज कदमो से चलने लगा। पुलिस ने उसको काबू कर उसका नाम पता पूछा तो उसने अपना नाम सलीमपुर निवासी सीताराम बताया। पुलिस ने कट्टे को चैक किया तो उसमें कुल 13 बोतल शराब देशी बरामद हुई। तभी पुलिस ने उसे व्यक्ति से शराब बेचने का लाइसेंस मांगा तो उसके पास शराब बेचने का लाइसेंस नहीं था। अटेली पुलिस ने उसे व्यक्ति पर एक्साइज एक्ट का मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी।

हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण ने बंधाया विनय के परिवार को ढांढस

बोले-आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होने की जरूरत

एजेंसी

करनाल। हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष श्री हरविन्द्र कल्याण आज दक्षिण कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले में जान गंवाने वाले लेफ्टिनेंट विनय नरवाल के परिवार को ढांढस बंधाने करनाल में उनके निवास स्थान सेक्टर-7 पहुंचे। उन्होंने ईश्वर से विनय को अपने चरणों में स्थान देने की प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ने के लिए सभी को एकजुट होने की जरूरत है। इसके बाद पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि इस घटना को लेकर केंद्र व राज्य सरकार बेहद गंभीर है। प्रधानमंत्री ने कहा है कि घटना को अंजाम देने वालों के खिलाफ ऐसी कार्रवाई की जाएगी जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। उन्होंने कहा कि देश की मजबूती, अखंडता अथवा माहौल को नुकसान पहुंचाने वालों के खिलाफ सरकार ठोस कदम उठाएगी। उन्होंने कहा कि यह समाज की भी जिम्मेदारी है कि ऐसे समय में पीड़ित परिवार को सहयोग करे। चूंकि विनय नरवाल का गांव भूसली घरौंडा विधानसभा क्षेत्र में है, इसलिए उनके लिए यह एक तरह से पारिवारिक मामला है। वे इस परिवार से लगातार संपर्क में हैं। उन्होंने कहा कि विनय की हत्या से परिवार को जो क्षति हुई उसकी पूर्ति तो कोई नहीं कर सकता पर जनप्रतिनिधि व समाज के नाते सब इस परिवार के साथ खड़े हैं। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने भी विनय नरवाल के परिवार को 50 लाख रुपये और एक सदस्य को नौकरी देने की घोषणा की है।

गेहूं की पेमेंट करने में सरकार फेलः दुष्यंत चौटाला

एजेंसी

जींद। उचाना हलके के पालवां, अलीपुरा गांव में पूर्व डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला पहुंचे। यहां कार्यकर्ताओं से मिले ओर उनका हालचाल जाना। पत्रकारों से बातचीत में दुष्यंत चौटाला ने कहा कि उन्हें नारनौंद, उचाना मंडी में जाने का अवसर मिला। दोनों मंडियों में दो-दो मंजिल गेहूं के ढेर लगे हैं। पिछले 15 दिनों में किसानों की पेमेंट के जो हालात वो पिछले पांच दशकों में भी नहीं हुई। 72 घंटे छोड़ो आज रिकॉर्ड है दस से पंद्रह दिन पहले किसी भी किसान की पेमेंट खातों में नहीं आ रही है। सरसों की पेमेंट को कितने दिन हो गएए लास्ट पेमेंट गेहूं की कब आई है। ये फेलियर है। फेलियर सिर्फ ट्रांसपोर्ट के टेंडर ना होने की वजह से हुआ है। आज मंडियों के अंदर किसान पीड़ित हैं, जब वो सरकार को फसल बेच चुका है। उसके बावजूद भी सरकार पिछले 15 दिनों से उनकी मेहनत की कमाई उनके खातों में नहीं डाल रही है। सीएम नायब सिंह सैनी द्वारा 24 फसलों पर

एमएसपी दिए जाने के बयान पर दुष्यंत चौटाला ने कहा कि एमएसपी देने का काम हमने किया था भाजपा ने तो इसे आगे बढ़ाया है लेकिन कोई ऐसी फसल आई जो पहले किसान की एमएसपी पर नहीं बिकती हो अब एमएसपी पर खरीदी गई हो तो बताए। पहलगाम में हुए हमले पर बोलते हुए दुष्यंत चौटाला ने कहा कि यह निंदनीय है।

नये भारत में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में है आतंकवाद का मुंहतोड़ जवाब देने की ताकत- आरती राव

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा की स्वास्थ्य मंत्री सुश्री आरती सिंह राव ने कहा कि दुश्मनों को समझ लेना चाहिए कि भारत अब हर मोर्चे पर आतंकवाद और देशद्रोहियों से निपटने में सक्षम है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत को अपने दुश्मनों को मुंहतोड़ जवाब देना भली भांति आता है। पीएम श्री नरेंद्र मोदी का आतंकवाद को जड़ मूल से मिटा देने का संकल्प है। उन्होंने दोहराया कि देश के गद्दारों और आतंकियों को पनाह देने वालों के ठिकानों को भी जमींदोज कर दिया जाएगा। आतंकवाद को मानवता पर सबसे बड़ा हमला बताते हुए मंत्री आरती राव ने कहा कि मोदी सरकार इस हमले का मुंहतोड़ जवाब देने के लिए पूरी तरह कटिबद्ध है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने वैश्विक मंच पर अपनी ताकत और इच्छाशक्ति का प्रदर्शन किया है। आज भारत सिर्फ प्रतिक्रिया नहीं देता, बल्कि दुश्मन को मुँह तोड़ जवाब भी देता है। जो भी देश की अखंडता और संप्रभुता पर आंख उठाएगा, उसे कठोरतम कार्रवाई का सामना करना पड़ेगा। जनता से आह्वान करते हुए स्वास्थ्य मंत्री ने कहा, हर देशवासी प्रहरी है। हर आँख चौकन्नी रहे। जो भी

देशद्रोही गतिविधि नजर आए, उसे कानून के हवाले करें। नया भारत अब न किसी से डरता है, न किसी को छोड़ता है। स्वास्थ्य मंत्री ने प्रदेश सरकार की उपलब्धियों का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि हरियाणा सरकार ने स्वास्थ्य सेवाओं में ऐतिहासिक सुधार किए हैं और विश्वास दिलाया कि आने वाले समय में हरियाणा के हर नागरिक को उच्च गुणवत्ता और सुलभ स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी।

गर्मी व हीट वेव से बचाव के लिए एहतियात बरतें जिलावासी : डीसी

जिला प्रशासन तथा स्वास्थ्य विभाग ने हीट वेव से बचाव के लिए जारी की एडवाइजरी

एजेंसी

गुरुग्राम। जिला आपदा एवं प्रबंधन प्राधिकरण के अध्यक्ष एवं डीसी अजय कुमार ने कहा कि गर्मी के मौसम में हवा के गर्म थपेड़ों और बढ़े हुए तापमान से लू (हीट वेव) लगने का खतरा बढ़ जाता है, खासकर धूप में घूमने वालों, खिलाडियों, बच्चों, बुजुर्गों और बीमार व्यक्तियों को लू लगने का डर ज्यादा रहता है। लू लगने पर उसके इलाज से बेहतर है, हम लू से बचे रहें यानी बचाव इलाज से बेहतर है। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन तथा स्वास्थ्य विभाग द्वारा जनहित में लू से बचाव के लिए एडवाइजरी जारी की गई है, जिसकी सभी को पालना करते हुए स्वास्थ्य सुरक्षा बनाए रखनी है। डीसी ने आमजन से आह्वान किया कि प्रशासन की ओर से जारी की गई एडवाइजरी की पालना करें और हीट वेव से बचे रहें। उन्होंने बताया कि हीट वेव से बचाव के लिए स्थानीय मौसम संबंधी खबरों के लिए रेडियो सुनें, टीवी देखें, समाचार पत्र पढ़ें, गर्मी में हल्के रंग के ढीले सूती कपड़े पहनें, अपना सिर ढककर रखें, कपड़े, हैट अथवा छतरी का उपयोग करें, पर्याप्त मात्रा में पानी पिएं-भले ही प्यास न लगी हो, ओआरएस (ओरल रीहाइड्रेशन सॉल्यूशन), घर में बने पेय जैसे लस्सी, तोरानी (चावल का मांड) नींबू पानी, छाछ आदि का सेवन कर तरोताजा रहें। बच्चों को वाहनों में छोडकर न जाएं उन्हें लू लगने का खतरा हो सकता है, नंगे पांव बाहर न जाएं, गर्मी से राहत के लिए हाथ का पंखा अपने पास रखें, काम के बीच में थोड़ा-थोड़ा विश्राम लें, खेत खलीहान में काम कर रहे हैं तो समय-समय पर पेड़ या छाया में ही आसरा लें। गर्मी के मौसम में जंक फूड का सेवन न करें। ताजे फल, सलाद तथा घर में बना खाना खाएं। खासतौर से दोपहर 12 बजे से सायं 3 बजे के बीच धूप में सीधे न जाए। यदि बच्चे को चक्कर आए, उल्टी घबराहट अथवा तेज सिरदर्द हो, सीने में दर्द हो अथवा सांस लेने में कठिनाई हो तो चिकित्सक को दिखाएं। डीसी ने बताया कि बढ़ती गर्मी में वृद्ध एवं कमजोर व्यक्तियों की खास देखभाल करें, तेज गर्मी, खासतौर से जब वे अकेले हों, तो कम से कम दिन में दो बार उनकी जांच करें, ध्यान रहे कि उनके पास फोन हो, यदि वे गर्मी से बैचेनी महसूस कर रहे हों तो उन्हें ठंडक देने का प्रयास करें, उनके शरीर को गीला रखें, उन्हें नहलाएं अथवा उनकी गर्दन तथा बगलों में गीला तौलिया रखें,उनके शरीर को ठंडक देने के साथ साथ डॉक्टर अथवा एम्बुलेंस को बुलाएं, उन्हें अपने पास हमेशा पानी की बोतल रखने के लिए कहें। डीसी ने बताया कि जानवरों को छाया में रखें और उन्हें पर्याप्त मात्रा में पीने का पानी दें, उन्हें घर के भीतर रखें, पीने के पानी के दो बाउल रखें ताकि एक में पानी खत्म होने पर दूसरे से वे पानी पी सकें, यदि उन्हें घर के भीतर रखा जाना संभव न हो तो उन्हें किसी छायादार स्थान में रखें, जहां वे आराम कर सकें। ध्यान रखें कि जहां उन्हें रखा जाए वहां दिनभर छाया रहे, अपने पालतू जानवर का खाना धूप में न रखें, जानवरों को किसी बंद जगह में न रखें, यदि आपके पास कुत्ता है तो उसे गर्मी में न टहलाएं।

शिकायत निवारण में लापरवाही बर्दाश्त नहींः मनोज कुमार

सोनीपत। उपायुक्त डॉ. मनोज कुमार ने कहा कि आम जनता की शिकायतों का त्वरित समाधान सुनिश्चित करने के लिए हरियाणा सरकार ने सीएम विंडो, जनसंवाद, सोशल मीडिया ग्रीवेंस ट्रैकर (एसएमजीटी) और समाधान शिविर जैसी सुविधाओं की शुरुआत की है। कैंप कार्यालय में आयोजित बैठक में उपायुक्त ने इन प्लेटफार्मों पर लंबित शिकायतों की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिए कि शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर समयबद्ध निपटारा करें, अन्यथा लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। डॉ. मनोज कुमार ने निर्देश दिए कि शिकायतों का निवारण करते समय पोर्टल पर एटीआर समय से अपलोड की जाए। अधूरी या असंगत एटीआर भेजने वालों पर भी कार्रवाई होगी। उन्होंने पेमाईस से संबंधित शिकायतों को लेकर बीडीपीओ को डीजीपीएस मशीनें उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए ताकि खेतों में भूमि की सटीक माप हो सके और शिकायतों का समाधान शीघ्र हो। उन्होंने कहा कि पिछले वर्षों की लंबित शिकायतों का निपटाराएक सप्ताह में किया जाए।

निशुल्क चिकित्सा एवं जांच शिविर में 68 वरिष्ठ नागरिकों की जांच की

एजेंसी

नारनौल।स्थानीय किलारोड स्थित वरिष्ठ नागरिक संगठन के कार्यालय में संवेदना अस्पताल की ओर से निशुल्क चिकित्सा एवं जांच शिविर का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम सरस्वती मा व साध्वी बहन मिश्री देवी के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्वलित करके शिविर का कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। जांच शिविर कैंप में डा. सुरेंद्र मित्तल, जनरल फिजिशियन के मार्ग दर्शन में हड्डी जोड़ रोग विशेषज्ञ डा. अचल मित्तल ने लगभग 24 मरीजों की निशुल्क जांच की और मरीजों को दवा भी निशुल्क वितरित की गई। इसी प्रकार 36 आंखों के मरीजों की निशुल्क जांच करके उनको आवश्यक परामर्श दिया गया और जिन मरीजों को दवा की जरूरत थी उन्हे दवाएं संवेदना अस्पताल की ओर से मुफ्त दी गई। डाक्टर सुरेंद्र मित्तल जनरल फिजिशियन द्वारा 39 मरीजों की निशुल्क जांच की गई और जिन मरीजों का ई.सी.जी. आवश्यक था उन मरीजों की निशुल्क ई.सी.जी. की गई। और आवश्यकतानुसार दवाएं निशुल्क प्रदान की गई। डाक्टर व उनकी टीम का स्वागत करते हुए संगठन के प्रधान दुलीचंद शर्मा ने कहा कि डॉक्टर भगवान का रूप होते हैं। इनका हमें पूर्ण मान सम्मान करना चाहिए। श्री मुखराम सैनी, महासचिव ने मेडिकल टीम का उनके बेहतर कार्य के लिए प्रशंसा की। इस शिविर में वरिष्ठ नागरिकों के अतिरिक्त आम पुरुष और महिलाओं की जांच की गई और उचित परामर्श दिया गया। इस शिविर में मुख्य रूप से बीएल सैनी, सोहनलाल चौहान, भागीरथ, सुरेश जांगिड़, रामनिवास सैनी, रविन्द्र कुमार चौधरी, शिवलाल वर्मा, हरिद्वारीलाल वर्मा, गणपत सैनी, रामबिलास यादव, मोहिंदर शर्मा, अजीत प्रकाश जैन, बद्री प्रशाद गर्ग, रामजीलाल मित्तल एडवोकेट, राजकुमार चौधरी, पूर्व प्रधान सत्यनारायण गुप्ता, बेगराज, विनोद कुमार गर्ग, लक्ष्मीनारायण आर्य, चेतन स्वरूप शर्मा व कृष्ण अवतार जांगिड़ आदि उपस्थित थे।

ऐतिहासिक अग्रोहा टीले पर खुदाई कार्य के बीच लगी आग

एजेंसी

हिसार। जिले के अग्रोहा स्थित ऐतिहासिक टीले पर फैले 125 एकड़ जंगल में आग लगने का समाचार है। आग लगने के कारणों का पता नहीं चल पाया है लेकिन इस समय ऐतिहासिक टीले पर पुरातत्व विभाग की ओर से खुदाई का काम चल रहा है। आग की सूचना के बाद दमकल गाड़ियां मौके पर पहुंची और आग बुझाने के प्रयास शुरू किए। मौके पर प्रशासनिक अधिकारी भी पहुंचे हैं। अग्रोहा टीले पर फैले जंगल मेंरविवार दोपहर को लगी आग बुझाने के लिए राहत एवं बचाव कर्मी जुटे हुए हैं। तेज हवा के कारण आग बुझाने में दिक्कत आ रही है। अग्रोहा थाना प्रभारी का कहना है कि फायर ब्रिगेड गाड़ियां मौके पर हैं लेकिन हादसा स्थल दमकल की गाड़ियां पहुंच नहीं पा रही है। आसपास के गांव में अनाउंसमेंट करवाया है। सभी ग्रामवासी ट्रेक्टर से टैंकरों में पानी लेकर टीले पर पहुंच रहे हैं ताकि आग पर काबू पाया जा सके।प्रशासन के पास टीले तक आग बुझाने का कोई साधन नहीं है, इसलिए ग्रामीणों की टीम तसले लेकर मिट्टी डालकर आग बुझाने में लगी हुई है। खुदाई में लगे नोएडा संस्थान के छात्र दल को उनके हॉस्टल में भेज दिया गया है।

अक्षय तृतीया पर बाल विवाह रोकने के लिए जिला प्रशासन की पैनी नजर

- बाल विवाह एक कानूनी अपराध, दो साल की जेल व एक लाख रूपये जुर्माने का प्रावधान : धीरेन्द्र खडग़टा
- विवाह के लिए लडक़ी की उम्र 18 वर्ष व लडके की शादी की उम्र 21 वर्ष निर्धारित है

एजेंसी

रोहतक। बाल विवाह एक कानूनी अपराध है और इसके लिए दो साल की जेल व एक लाख रूपये का जुर्माने का भी प्रावधान है। अक्षय तृतीया पर बाल विवाह रोकने के लिए जिला प्रशासन पूरी तरह से सर्तक है और प्रशासन ने आमजन से भी बाल विवाह रोकने के लिए सहयोग की अपील की है। उपायुक्त धीरेन्द्र खडग़टा ने कहा कि अक्षय तृतीया के अवसर पर सामाजिक प्रथा अनुसार इस शुभ मुहूर्त पर लोगों द्वारा बड़ी संख्या में विवाह का आयोजन किया जाता है, जिसकी आड़ में लोगों द्वारा काफी संख्या में बाल विवाह को भी संपन्न किया जाता है।

उन्होंने कहा कि बाल विवाह की रोकथाम के लिए जिला प्रशासन पूरी तरह से अलर्ट है। साथ ही लोगों को बाल विवाह निषेध अधिनियम बारे भी जागरूक किया जा रहा है। साथ ही उन्होंने बताया कि विवाह के लिए लडक़ी की शादी की उम्र 18 वर्ष व लडक़े की शादी की उम्र 21 वर्ष निर्धारित की गई है। इससे पूर्व विवाह करना कानूनन अपराध है।

नियम के तहत बाल विवाह के आयोजन में भागीदार सभी लोगों पर कानूनी कार्यवाही किए जाने का भी प्रावधान है, जिसके तहत दो साल की जेल व एक लाख रूपये तक के जुर्माने का भी प्रावधान है। साथ ही उन्होंने अक्षय तृतीया के अवसर पर तीस अप्रैल को विवाह करवाने वाले पुजारी, पाठी, गांव के पंच, सरपंच, नंबरदार व शहरों में नगर पार्षदों एवं सामुदायिक केन्द्र, सार्वजनिक भवन, बैंकट हाल, मैरिज पैलेस, धर्मशाला इत्यादि के मालिक प्रभारियों कार्ड प्रिंटिंग, फोटोग्राफर, बैंड बाजा व टेंट हाउस आदि के संचालकों को निर्देश दिए कि वे अपने क्षेत्र में आयोजित होने वाले विवाह समारोह के संबंध में पहले से दूल्हा व दुल्हन के आयु प्रमाण पत्रों की जांच कर लें व आयु प्रमाण पत्रों की एक प्रति अपने पास भी रखे। साथ ही अपने क्षेत्र में बाल विवाह का आयोजन न होने दें। ऐसा पाए जाने पर इसकी सूचना प्रशासन को दें और बाल विवाह रोकना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा है कि झूठी शिकायत करने वाले व्यक्ति के खिलाफ भी प्रशासन द्वारा सख्त कार्यवाही की जाएगी।

जागरूक होकर पशु-पक्षियों के कल्याण के लिए कार्य करें पशु वैज्ञानिक : डॉ. नरेश जिंदल

एजेंसी

हिसार। लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (डॉ.) नरेश जिंदल ने पशु चिकित्सकों एवं पशु वैज्ञानिकों से आह्वान किया है कि वे जागरूक होकर पशु-पक्षियों के कल्याण के लिए कार्य करें। उन्होंने कहा कि पशु व पक्षी प्रकृति एवं पर्यावरण की सुरक्षा के लिए अति आवश्यक है। कुलपति प्रो. नरेश जिंदल विश्व पशु चिकित्सा दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने विश्वविद्यालय के अधिकारियों, प्राध्यापकों, विद्यार्थियों व कर्मचारियों को विश्व पशु चिकित्सा दिवस की शुभकामनाएं दी और कहा कि इस बार विश्व पशु चिकित्सा दिवस 2025 का थीम 'पशु स्वास्थ्य के लिए टीम की आवश्यकता होती है'है, जिसमें पशु चिकित्सकों, वैज्ञानिकों, सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों और किसानों के सामूहिक प्रयासों पर जोर दिया गया है। उन्होंने कहा कि विश्व पशु चिकित्सा दिवस की शुरुआत विश्व पशु चिकित्सा संघ ने वर्ष 2000 में की थी। इसी कार्यक्रम के विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों व हिसार शहर के 13 स्कूलों के विद्यार्थियों के लिए भाषण, पोस्टर व ड्राइंग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया व 26 अप्रैल को सेमिनार का भी आयोजन किया था जिसमें लुवास के यूजी, पीजी व इंटर्न के छात्रों ने भाग लिया। इस अवसर पर 2025 की थीम 'पशु स्वास्थ्य के लिए टीम की आवश्यकता होती है' के विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता, ड्राइंग प्रतियोगिता व् भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। पोस्टर प्रतियोगिता सेंट कबीर स्कूल की छात्रा सिया प्रथम, द्वितीय ठाकुर दास भार्गव स्कूल की छात्रा चितरंगी व तृतीय पुरस्कार सिद्धार्थ इंटरनेशनल स्कूल की छात्रा नव्या, डीपीएस स्कूल की छात्रा यशिका व सेंट कबीर स्कूल की छात्रा काशवी ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। लुवास के छात्रों के लिए आयोजित ड्राइंग प्रतियोगिता में प्रथम ऋचा, द्वितीय श्रुति व तृतीय रजत रहे। लुवास के विद्यार्थियों के लिए आयोजित भाषण प्रतियोगिता में प्रथम तरुण, द्वितीय खुशी व तृतीय अभिनव रहे।

पानीपत में अंसल प्रॉपर्टीज को हरेरा ने लगाया 70 लाख का जुर्माना

पानीपत। पानीपत की पॉश कालोनियों मे शुमार अंसल सुशांत सिटी एक बार फिर विवादों में है । एनजीटी बाद अब हरियाणा रियल एस्टेट रेगुलेटरी अथॉरिटी (हरेरा) ने अंसल बिल्डर पर सख्ती बरती है। अंसल में बनी गैलेक्सी कोर्ट की तिमाही प्रगति रिपोर्ट अपलोड नहीं करने पर हरेरा ने अंसल पर 70 लाख से अधिक का जुर्माना लगाया है। अंसल ने माफी की अर्जी हरेरा को दी थी। हरेरा ने अर्जी को खारिज करते हुए मामले की अगली सुनवाई तक जुर्माना भरने के आदेश दिए गए है। बता दें कि अंसल प्रॉपर्टीज एंड इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड के खिलाफ प्राधिकरण द्वारा पंजीकृत अपने रियल एस्टेट प्रोजेक्ट गैलेक्सी कोर्ट की तिमाही प्रगति रिपोर्ट अपलोड नहीं करने के लिए दर्ज की गई थी।

PUBLIC NOTICE

I, VINIKA SAINI D/o SHAILENDER SAINI, residing at H. No -17/17, SARAI MOHALLA UDMI PURA, ROHTAK HARYANA 124001, declare that the name of mine has been wrongly written as VINIKA SHAILENDER SAINI in my 10th and 12th Class Educational Documents. The actual name of mine is VINIKA SAINI.

PUBLIC NOTICE

I, hitherto known as NEELAMEGAM VASUDEVAN, S/o NEELAMEGAM KRISHNAMOORTHY, HOUSE NUMBER-13A, FIRST FLOOR INDRAPRASTHA COLONY, FARIDABAD, HARYANA-121003, have changed my name and shall hereafter be known as N K VASUDEVAN.

डंपिंग स्टेशन के विरोध में केंद्रीय मंत्री कार्यालय का किया घेराव

एजेंसी

फरीदाबाद। नगर निगम द्वारा सेक्टर-56 में डंपिंग स्टेशन बनाने और वहां कूड़ा जमा करने को लेकर लोगों में विरोध के स्वर उठने लगे है। इसी कड़ी में स्थानीय लोगों ने भारी संख्या में सेक्टर 28 स्थित केंद्रीय मंत्री कृष्ण पाल गुर्जर के कार्यालय का घेराव किया। इस दौरान पुलिस ने बैरिकेड्स लगाकर लोगों को उनके कार्यालय में प्रवेश करने से पहले ही रोक लिया। विरोध के दौरान केंद्रीय मंत्री कृष्ण पाल गुर्जर खुद अपने कार्यालय से बाहर आए और उन्होंने लोगों से मुलाकात की। लोगों की समस्याओं को सुनते हुए केंद्रीय मंत्री कृष्ण पाल गुर्जर ने उन्हें आश्वासन दिया कि इस डंपिंग स्टेशन को हटवाने की प्रक्रिया उच्च स्तर पर चल रही है और उन्होंने चंडीगढ़ के अधिकारियों से इस बारे में बातचीत की है। मंत्री ने बताया कि डंपिंग स्टेशन को जल्द ही हटा लिया जाएगा और इसे दूसरी जगह शिफ्ट कर दिया जाएगा। केंद्रीय मंत्री ने लोगों से कहा कि सोमवार को पांच लोग उनके कार्यालय में आएंगे और निगम कमिश्नर के साथ बैठक करेंगे ताकि इस समस्या का हल निकाला जा सके। उन्होंने लोगों को भरोसा दिलाया कि इस मुद्दे का समाधान जल्द ही किया जाएगा। सेक्टर-56 निवासी दीपक कुमार पांचाल ने बताया कि यह विरोध पिछले दो साल से चल रहा है। मार्च 2025 में जब कूड़ा लाना शुरू किया गया था,

जेनसोल इंजीनियरिंग के शेयरों में 13वें दिन भी गिरावट, बाजार में फिर लगा लोअर सर्किट

एजेंसी
नई दिल्ली। जेनसोल इंजीनियरिंग के शेयरों में सोमवार को भी गिरावट जारी रही। कंपनी के शेयर पांच प्रतिशत तक टूट गए और इसमें फिर लोअर सर्किट लग गया। कंपनी का शेयर बीएसई पर 5 प्रतिशत गिरकर न्यूनतम स्तर पर पहुंच गया। कंपनी का शेयर बीएसई पर 5 प्रतिशत गिरकर न्यूनतम स्तर कारोबार की स्वीकार्य सीमा तथा 86.50 रुपये के 52 सप्ताह के निम्नतम स्तर पर पहुंच गया। एनएसई में यह 5 प्रतिशत गिरकर 85.65 रुपये पर आ गया। यह शेयर का एक और निचला सर्किट और 52 सप्ताह का निम्नतम स्तर है। सोमवार को लगातार 13वें कारोबारी दिन कंपनी के शेयरों में गिरावट जारी रही है। इस दौरान शेयरों में 47 प्रतिशत की गिरावट आई है। अपने 52 सप्ताह के उच्चतम स्तर 1,125.75 रुपये से कंपनी के शेयर में 92.31 प्रतिशत की गिरावट आ चुकी है। जेनसोल और ब्लूस्मार्ट के प्रमोटर अनमोल सिंह जग्गी और पुनीत सिंह जग्गी भाइयों पर भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) को ईवी खरीद के लिए ऋण राशि के डायवर्जन के आरोपों को लेकर विनियामक कार्रवाई की जा रही है। सेबी ने दोनों पर पूंजी बाजार प्रतिबंध लगा दिया है, जिससे उन्हें सूचीबद्ध कंपनियों में हिस्सेदारी रखने से रोक दिया गया है। जेनसोल इंजीनियरिंग सौर परामर्श सेवाएं, इंजीनियरिंग, खरीद और निर्माण (ईपीसी) सेवाएं, और इलेक्ट्रिक वाहनों को पट्टे पर देने जैसी सेवाएं प्रदान कर रही है।

भारत से सालाना 10 अरब डॉलर का माल जा रहा पाकिस्तान, व्यापार प्रतिबंधों के बाद भी लेन-देन

नई दिल्ली। व्यापार प्रतिबंधों के बावजूद भारत से हर साल 10 अरब डॉलर से ज्यादा का माल दुबई, सिंगापुर और कोलंबो जैसे बंदरगाहों के जरिये अप्रत्यक्ष रूप से पाकिस्तान पहुंच रहा है। कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए बर्बर आतंकवादी हमलों के बाद लगाए गए व्यापार प्रतिबंधों के मद्देनजर आर्थिक थिंक टैंक ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) ने एक नोट में कहा, भारतीय कंपनियां इन बंदरगाहों पर सामान भेजती हैं। वहां एक स्वतंत्र कंपनी खेप को उतारती है और उन्हें बॉन्डेड गोदामों में रखती है। वहां ट्रांजिट के दौरान शुल्क का भुगतान किए बिना माल को रखा जा सकता है। थिंक टैंक ने कहा, ट्रांजिट के बाद गोदामों में रखे गए माल के लेबल और दस्तावेजों को मूल देश (ओरिजिन कंट्री) से अलग दिखाने के लिए संशोधित किया जाता है। ऐसे में लगता है कि माल किसी तीसरे देश से आ रहा है और फिर उसे ऊंची कीमतों पर बेचा जाता है। इस तरीके से कंपनियों को व्यापार प्रतिबंधों को दरकिनार करने और तीसरे देश के रास्ते से ऊंची कीमतों पर माल बेचने में मदद मिलती है। यह तरीका जांच से बचने में भी सहायक है, क्योंकि ऐसा लगता है कि व्यापार अन्य देशों से किया जा रहा है। जीटीआरआई के संस्थापक अजय श्रीवास्तव ने कहा, व्यापार का यह तरीका हमेशा अवैध नहीं होता, लेकिन गुमराह करने जैसा है। इससे पता चलता है कि व्यापार के लिए कैसे रचनात्मक तरीके खोजे जाते हैं। कई बार उनकी चाल सरकारों की प्रतिक्रिया से भी तेज होती है।

आरबीआई गवर्नर ने स्टार्टअप पर दिया जोर, कहा- युवा अब एमएनसी में नौकरी करने की जगह उद्यमी बनना कर रहे पसंद

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के गवर्नर संजय मल्होत्रा ने स्टार्टअप पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ सालों में भारत की युवा पीढ़ी की मानसिकता बदली है। अब युवा बहुराष्ट्रीय कंपनियों (एमएनसी) में नौकरी की तलाश करने के बजाय उद्यमी बनना पसंद कर रहे हैं। वॉशिंगटन डीसी में भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) और अमेरिका-भारत सामरिक भागीदारी मंच (यूएसआईएसपीएफ) द्वारा आयोजित अमेरिका-भारत आर्थिक मंच में अपने भाषण में गवर्नर संजय मल्होत्रा ने कहा कि जब मैंने कॉलेज छोड़ा तो एमएनसी में नौकरी करना मेरा पसंदीदा विकल्प था। किसी ने भी अपना खुद का उद्यम शुरू करने के बारे में नहीं सोचा था। हाल के वर्षों में बड़ी संख्या में इंजीनियरिंग और प्रबंधन स्नातक उद्यमिता और स्टार्ट-अप की ओर रुख कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि उद्यमिता की इस बढ़ती संस्कृति ने भारत को एक मजबूत स्टार्ट-अप इकोसिस्टम बनाने में मदद की है। देश में लगभग 150,000 मान्यता प्राप्त स्टार्ट-अप हैं, जिन्हें स्टार्ट-अप इंडिया, डिजिटल इंडिया और अटल इनोवेशन मिशन जैसी सरकारी पहलों का समर्थन प्राप्त है। आरबीआई गवर्नर ने कहा कि भारत में अब दुनिया में तीसरी सबसे बड़ी संख्या में यूनिकॉर्न हैं, जिनमें से कई आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, फिनटेक और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे उच्च तकनीक क्षेत्रों से उभर रहे हैं।

संसद के मानसून सत्र में पेश किया जाएगा बीमा संशोधन विधेयक, एफडीआई 100 प्रतिशत करने की तैयारी

नई दिल्ली। संसद के आगामी मानसून सत्र में बीमा संशोधन विधेयक पेश किया जा सकता है। विधेयक में बीमा क्षेत्र में एफडीआई की सीमा बढ़ाकर 100 प्रतिशत करने की तैयारी है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, विधेयक का मसौदा तैयार है और इसे जल्द ही मंजूरी के लिए कैबिनेट के सामने पेश किया जाएगा। कैबिनेट की मंजूरी के बाद वित्त मंत्रालय के तहत वित्तीय सेवा विभाग विधेयक को संसद में पेश करने की प्रक्रिया शुरू करेगा। संसद का मानसून सत्र आमतौर पर जुलाई में शुरू होता है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इस साल के बजट भाषण में कहा कि वित्तीय क्षेत्र सुधारों के तहत बीमा क्षेत्र में विदेशी निवेश की सीमा को मौजूदा 74 प्रतिशत से बढ़ाकर 100 प्रतिशत करने का प्रस्ताव रखा।

सर्राफा बाजार में गिरावट जारी, सोना और चांदी की घटी कीमत

एजेंसी
नई दिल्ली। घरेलू सर्राफा बाजार में आज लगातार पांचवे दिन गिरावट का रुख बना हुआ नजर आ रहा है। देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में आज 24 कैरेट सोना 97,530 रुपये से लेकर 97,680 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना आज 89,400 रुपये से लेकर 89,550 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी के भाव में भी आज कमजोरी दर्ज की गई है, जिसके कारण ये चमकीली धातु आज दिल्ली सर्राफा बाजार में 1,00,800 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार कर रही है। दिल्ली में 24 कैरेट सोना 97,680 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 89,550 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 97,530 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 89,400 रुपये

प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 97,580 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 89,450 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 97,530 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 89,400 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 97,530 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 89,400 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 97,680 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 89,550 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 97,580 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 89,450 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। जयपुर में 24 कैरेट सोना 97,680 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 89,550 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी आज सोने के भाव में गिरावट दर्ज की गई है। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना आज 97,530 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है।

विदेशी मुद्रा भंडार 8.3 अरब डॉलर की बढ़ोतरी लेकर 686.1 अरब डॉलर पर

एजेंसी
मुंबई। विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति, स्वर्ण भंडार, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास आरक्षित निधि में जबरदस्त बढ़ोतरी होने से 18 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 8.3 अरब डॉलर के इजाफे के साथ 686.1 अरब डॉलर पर पहुंच गया। इसी तरह इसके पिछले सप्ताह देश का विदेशी मुद्रा भंडार 1.6 अरब डॉलर की बढ़ोतरी लेकर 677.8 अरब डॉलर पर रहा था। रिजर्व बैंक की ओर से जारी साप्ताहिक आंकड़े के अनुसार, 18 अप्रैल को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 3.52 अरब डॉलर की मजबूती के साथ 578.5 अरब डॉलर पर पहुंच गई। इसी तरह इस अवधि में स्वर्ण भंडार 4.6 अरब डॉलर उछलकर 84.6 अरब डॉलर हो गया। आलोच्य सप्ताह एसडीआर 21.2 करोड़ डॉलर की तेजी लेकर 18.6 अरब डॉलर हो गया। इसी तरह इस अवधि में आईएमएफ के पास आरक्षित निधि में 70 लाख डॉलर की बढ़ोतरी हुई और यह पिछले सप्ताह के मुकाबले बढ़कर 4.5 अरब डॉलर पर पहुंच गई।

संसद के मानसून सत्र में बीमा संशोधन विधेयक पेश करने की तैयारी में सरकार

एजेंसी
नई दिल्ली। केंद्र सरकार संसद के आगामी मानसून सत्र में बीमा संशोधन विधेयक पेश करने की तैयारी में है। इस विधेयक का उद्देश्य बीमा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) की सीमा को मौजूदा 74 फीसदी से बढ़ाकर 100 फीसदी करना है। बीमा में ये बढ़ी हुई सीमा उन कंपनियों के लिए होगी, जो भारत में पूरा प्रीमियम निवेश करती हैं। आधिकारिक सूत्रों ने दी जानकारी में बताया कि सरकार बीमा संशोधन विधेयक को संसद के आगामी मानसून सत्र में पेश कर सकती है। प्रस्तावित विधयेक में बीमा क्षेत्र में 100 फीसदी एफडीआई का प्रस्ताव है। इस विधेयक का मसौदा तैयार है, जिसे जल्द ही मंजूरी के लिए मंत्रिमंडल के सामने रखा जाएगा।जानकारी के मुताबिक वित्त मंत्रालय को उम्मीद है कि आगामी मानसून सत्र के दौरान इस विधेयक को संसद में पेश किया जाएगा। केंद्रीय मंत्रिमंडल की मंजूरी के बाद वित्त मंत्रालय के तहत वित्तीय सेवा विभाग इस विधेयक को संसद में पेश

करने की प्रक्रिया शुरू करेगा। संसद का मानसून सत्र आमतौर पर जुलाई में शुरू होता है। उल्लेखनीय है कि वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इस साल के केंद्रीय बजट भाषण में बीमा क्षेत्र में विदेशी निवेश की सीमा मौजूदा 74 फीसदी से बढ़ाकर 100 फीसदी करने का प्रस्ताव रखा था। वित्त मंत्रालय ने बीमा अधिनियम, 1938 के विभिन्न प्रावधानों में संशोधन करने का प्रस्ताव दिया है, जिसमें बीमा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) को बढ़ाकर 100 फीसदी करना, चुकता पूंजी में कमी और समग्र लाइसेंस का प्रावधान शामिल है।

सोया रिफाइंड और पाम ऑयल महंगा

एजेंसी
नयी दिल्ली। विदेशी बाजारों की तेजी के प्रभाव के बीच स्थानीय स्तर पर मांग निकलने से बीते सप्ताह दिल्ली थोक जिंस बाजार में सोया रिफाइंड एवं पाम ऑयल के साथ ही चना और दाल चना महंगी हो गई जबकि अन्य जिंसों के भाव स्थिर रहे।

तेल-तिलहनः वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में पाम ऑयल का मई वायदा सप्ताहांत पर 13 रिंगिट बढ़कर 4145 रिंगिट प्रति टन पर पहुंच गया। इसी तरह मई का अमेरिकी सोया तेल वायदा 3.57 सेंट की तेजी के साथ 51.03 सेंट प्रति पौंड बोला गया।

इस दौरान सोया रिफाइंड 450 रुपये और पाम ऑयल में 366 रुपये प्रति क्विंटल की तेजी को छोड़कर अन्य खाद्य तेलों में टिकाव रहा। सरसों तेल, मूंगफली तेल, सूरजमुखी तेल और वनस्पति तेल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ। सप्ताहांत पर सरसों तेल 15385 रुपये प्रति क्विंटल, मूंगफली तेल 19047 रुपये प्रति क्विंटल, सूरजमुखी तेल 16703 रुपये प्रति क्विंटल, सोया रिफाइंड 14835 रुपये प्रति क्विंटल,

पाम ऑयल 13553 रुपये प्रति क्विंटल और वनस्पति तेल 16484 रुपये प्रति क्विंटल पर रहा।

दाल-दलहनः बीते सप्ताह दाल-दलहन के बाजार में चना और दाल चना में 100-100 रुपये प्रति क्विंटल की तेजी को छोड़कर अन्य दालों में टिकाव रहा। इस दौरान मसूर दाल, मूंग दाल, उड़द दाल और अरहर दाल के भाव पिछले कारोबारी सप्ताह के स्तर पर टिके रहे।

सप्ताहांत पर चना 5850-5950, दाल चना 6850-6950, मसूर काली 7550-7650, मूंग दाल 9550-9650, उड़द दाल 9000-9100, अरहर दाल 8500-8600 रुपये प्रति क्विंटल रही।

अनाजः अनाज मंडी में मिलाजुला रुख रहा। इस दौरान चावल 100 रुपये प्रति क्विंटल महंगा हो गया जबकि गेहूं के भाव पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर पड़े रहे।

इस दौरान (भाव प्रति क्विंटल) गेहूं दड़ा 2950-3050 रुपये और चावल 3550-3650 रुपये प्रति क्विंटल रहा।

चीनी-गुड़ : बीते सप्ताह मीठे के बाजार में तेजी रही। इस दौरान चीनी 100 रुपये और गुड़ 150 रुपये प्रति क्विंटल महंगे हो गए।

साप्ताहांत पर चीनी एस 3590-3690, चीनी एम. 4500-4600, मिल डिलीवरी 3470-3570 और गुड़ 4400-4500 रुपये प्रति क्विंटल बोले गये।

साप्ताहिक शेयर समीक्षाः उतार-चढ़ाव के बावजूद मजबूती के साथ बंद हुआ शेयर बाजार

एजेंसी
नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार पिछले सप्ताह के दौरान उतार-चढ़ाव का सामना करने के बाद ओवरऑल मजबूती के साथ बंद होने में सफल रहा। 21 से 25 अप्रैल तक के कारोबारी सप्ताह के पहले तीन दिन के कारोबार में शेयर बाजार मजबूती के साथ बंद होने में सफल रहा, जबकि आखिरी दो दिन के कारोबार में गिरावट का शिकार हो गया। इस सप्ताह सोमवार से शुक्रवार तक के कारोबार के बाद सेंसेक्स साप्ताहिक आधार पर 659.33 अंक यानी 0.83 प्रतिशत की मजबूती के साथ 79,212.53 अंक के स्तर पर बंद हुआ। इसी तरह निफ्टी ने 187.70 अंक यानी 0.78 प्रतिशत की तेजी के साथ 24,039.35 अंक के स्तर पर पिछले सप्ताह के कारोबार का अंत किया। माना जा रहा है कि भारत और अमेरिका के बीच टैरिफ को लेकर जारी वार्ता के सकारात्मक संकेत, विदेशी निवेशकों की खरीदारी, पहलगाम हमले के बाद बनी तनाव की स्थिति और कंपनियों के मिले-जुले तिमाही नतीजों के कारण घरेलू शेयर बाजार में लगातार उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रही। पिछले सप्ताह के कारोबार के दौरान बीएसई का लार्जकैप इंडेक्स 0.62 प्रतिशत की मामूली बढ़त के साथ बंद हुआ। इस इंडेक्स में शामिल कंपनियों में टेक महिंद्रा, महिंद्रा एंड महिंद्रा, एचसीएल टेक्नोलॉजी, वारी एनर्जिज, एलटी माइंडट्री और डिवीज लेबोरेट्रीज के शेयर टॉप गेनर्स की सूची में शामिल हुए। दूसरी ओर एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी, अडाणी पोर्ट्स एंड स्पेशल इकोनॉमिक जोन, श्रीराम फाइनेंस, स्विगी, एसबीआई कार्ड और पेमेंट सर्विसेज, जेएसडब्ल्यू एनर्जी और वरुण बेवरेजेज के शेयर टॉप लूजर्स की सूची में शामिल हुए। बीएसई का मिडकैप इंडेक्स सोमवार से शुक्रवार के कारोबार के बाद 1.3 प्रतिशत की साप्ताहिक बढ़त के साथ बंद होने में सफल रहा। इस इंडेक्स में शामिल कंपनियों में से एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक, देल्हीवेरी, ऑरेकल फाइनेंशियल सर्विसेज, कोफोर्ज, टाटा एलेक्सी, एम्फैसिस और परसिस्टेंट सिस्टम्स के शेयर टॉप गेनर्स की सूची में शामिल हुए। दूसरी ओर एमक्योर फार्मास्यूटिकल्स, जी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइजेज, इंडियन होटल्स कंपनी, बायोकॉन और एसीसी के शेयर टॉप लूजर्स की सूची में शामिल हुए। बीएसई का स्मॉलकैप इंडेक्स पिछले सप्ताह के कारोबार के दौरान सपाट स्तर पर बंद हुआ। इस इंडेक्स में शामिल राजरतन ग्लोबल वायर, थायरोकेयर टेक्नोलॉजीज, वर्धमान स्पेशल स्टील्स, बेस्ट एग्रो लाइफ, पेनिनसुला लैंड्स, एप्टेक, करारो इंडिया और डेक्कन गोल्डमाइंस के शेयर 21 से 32 प्रतिशत तक की साप्ताहिक मजबूती के साथ बंद हुए। दूसरी ओर जेनसोल इंजीनियरिंग, पर्ल ग्लोबल इंडस्टरीज, ब्लू स्टार, यूनीमेक एयरोस्पेस एंड मैन्युफैक्चरिंग, केआर रेल इंजीनियरिंग, सिंजीन इंटरनेशनल, स्टरलाइट टेक्नोलॉजीज, ई-पैक ड्युरेबल्स, पीसीबीएल केमिकल, नेलको, गुजरात थेमिस बायोसिन और रामकृष्ण फोर्जिंग्स के शेयर 10 से 22 प्रतिशत तक की साप्ताहिक गिरावट का शिकार हो गए।

पहलगाम हमले के बाद अफगानिस्तान के साथ भारत का कारोबार अटका

एजेंसी
चंडीगढ़। पहलगाम हमले के बाद अफगानिस्तान और भारत के कारोबार पर असर पड़ा है। 22 अप्रैल को हुए हमले के बाद जब भारत सरकार ने दोनों मुल्कों की आवाजाही बंद की तो उसी दौरान अफगानिस्तान से माल लेकर आने वाली गाड़ियों को अटारी बार्डर स्थित इंटीग्रेटेड चेक पोस्ट (आईसीपी) में प्रवेश पर रोक लगा दी गई। अटारी बार्डर सूत्रों के अनुसार अफगानिस्तान से जो गाड़ियां आई थीं वह वाघा (पाकिस्तान) की सीमा में खड़ी हैं। सूत्रों के अनुसार बाघा बार्डर पर करीब 35 गाड़ियां चार दिनों से लोड खड़ी हैं। जिनके संबंध में अभी कोई फैसला नहीं लिया गया है। आईसीपी के गोदाम अब खाली हो चुके हैं। आईसीपी अधिकारियों के अनुसार जिन व्यापारियों के 22 अप्रैल से पहले बिल कट चुके हैं उन्हें अब समुद्री रास्ते से सामान पहुंचाया जाएगा। इसके बाद की अवधि के लिए कोई फैसला नहीं हुआ है। अफगानिस्तान से वाया पाकिस्तान होते हुए भारत में मुलेठी, रतनजोत, ब्रह्मजसू, असू, ड्राई फ्रूट, सूखे और ताजे फल, अनारदाना और सब्जियां, जिनमें प्याज, दालें आदि शामिल हैं। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, 2023-24 वित्तीय वर्ष (दिसंबर 2024 तक) के दौरान अटारी आईसीपी के माध्यम से अफगानिस्तान से 3115.99 करोड़ रुपये के सामान का आयात हुआ, जबकि वित्तीय वर्ष 2022-23 में 2210.79 करोड़ रुपए का आयात हुआ था।

टॉप 10 में शामिल देश की 6 कंपनियों के मार्केट कैप में 1.18 लाख करोड़ की बढ़ोतरी

एजेंसी
नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में पिछले कारोबारी सप्ताह के दौरान हुई खरीद-बिक्री के कारण देश की टॉप 10 मोस्ट वैल्यूड कंपनियों में से 6 कंपनियों के मार्केट कैप में 1.18 लाख करोड़ रुपये से अधिक की बढ़ोतरी हो गई। इनमें सबसे अधिक फायदा टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस) को हुआ। दूसरी ओर, टॉप 10 में शामिल 4 कंपनियों के मार्केट कैप में 55,076.39 करोड़ रुपये की गिरावट आ गई। इनमें भारती एयरटेल को सबसे ज्यादा नुकसान का सामना करना पड़ा। इस सप्ताह के कारोबार के दौरान टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस), एचडीएफसी बैंक, रिलायंस इंडस्ट्रीज, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई), इंफोसिस और आईटीसी के मार्केट कैप में 1,18,626.24 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हो गई। दूसरी ओर, भारती एयरटेल, हिन्दुस्तान यूनिलीवर, बजाज

फाइनेंस और आईसीआईसीआई बैंक के मार्केट कैप में 55 हजार करोड़ रुपये से अधिक की गिरावट आ गई। 21 से 25 अप्रैल के बीच हुए कारोबार के दौरान टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस) का मार्केट कैप 53,692.42 करोड़ रुपये की बढ़त के साथ 12,47,281.40 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। इसी तरह रिलायंस इंडस्ट्रीज का मार्केट कैप 34,507.55 करोड़ रुपये बढ़ कर 17,59,276.14 करोड़ रुपये के स्तर पर आ गया। इसके अलावा इंफोसिस का मार्केट कैप 24,919.58 करोड़ रुपये उछल कर 6,14,766.06 करोड़ रुपये के स्तर पर, एचडीएफसी बैंक का मार्केट कैप 2,907.85 करोड़ रुपये की उछाल के साथ 14,61,842.17 करोड़ रुपये के स्तर पर, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) का मार्केट कैप 1,472.57 करोड़ रुपये बढ़ कर 7,12,854.03 करोड़ रुपये के स्तर पर और आईटीसी का मार्केट कैप 1,126.27 करोड़ रुपये की बढ़त के साथ 5,35,792.04 करोड़ रुपये के स्तर पर आ गया। दूसरी ओर, भारती एयरटेल का मार्केट कैप 41,967.50 करोड़ रुपये की गिरावट के साथ 10,35,274.24 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। इसी तरह हिंदुस्तान यूनिलीवर का मार्केट कैप 10,114.99 करोड़ रुपये घट कर 5,47,830.70 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया।

पाकिस्तान से व्यापार पूरी तरह बंद करेंगे भारतीय व्यापारी : कैट

एजेंसी
नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में निर्दोष पर्यटकों पर हुए आतंकी हमले के कारण भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव बहुत बढ़ गया है। इस तनाव के बीच भारत के व्यापारियों ने पाकिस्तान के साथ व्यापार न करने का कड़ा निर्णय लिया है। कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) ने सर्वसम्मति से पाकिस्तान के साथ हर तरह का व्यापार पूरी तरह से बंद करने का फैसला किया है। कैट के राष्ट्रीय महामंत्री तथा दिल्ली के चांदनी चौक से सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने इसकी जानकारी दी। कारोबारी संगठन कैट की दो दिवसीय राष्ट्रीय गवर्निंग काउंसिल की (25-26 अप्रैल) बैठक भुवनेश्वर में हुई, जिसमें देशभर के 26 राज्यों के 200 से अधिक प्रमुख व्यापारिक नेताओं ने भाग लिया। इस बैठक में पाकिस्तान से सभी तरह का व्यापार बंद करने का फैसला लिया गया। कैट के राष्ट्रीय महामंत्री तथा दिल्ली के चांदनी चौक से सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने बताया कि इस दो दिवसीय बैठक में पारित सर्वसम्मत प्रस्ताव में सभी व्यापारी नेताओं ने एक स्वर से पहलगाम में आतंकी घटना की कड़ी निंदा करते हुए पाकिस्तान के साथ व्यापारिक संबंधों का पूर्ण बहिष्कार करने का आह्वान किया है। इसके पहले वर्ष 2019 में पुलवामा आतंकी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच व्यापारिक संबंधी में तल्खी आ गई थी, जिसके बाद दोनों देशों के बीच व्यापार में भारी गिरावट आई थी। व्यापारियों के इस पैसले से पाकिस्तान को कई बेहद आवश्यक वस्तुओं की सप्लाई नहीं हो सकेगी। इससे पाक में दवाइयां, रसायन, फल-सब्जियों समेत कई आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता प्रभावित होगी। हालांकि, इस निर्णय के कारण भारत पर भी असर पड़ेगा। क्योंकि नमक एवं आभूषण से लेकर निर्माण क्षेत्र और जूट की अनेक वस्तुएं पाकिस्तान से आयात की जाती हैं, लेकिन इसके बाद भी व्यापारियों ने एकतरफा निर्णय लेते हुए पाकिस्तान से व्यापार बंद करने का निर्णय लिया है।

बाजार में सुधार से आईपीओ-एनएफओ की लगेगी लाइन, 66 कंपनियां एनएफओ की तैयारी में

नई दिल्ली। कई देशों के बीच तनाव और महंगाई के चलते शेयर बाजार में अक्तूबर से जारी गिरावट अब थम गई है। बीएसई सेंसेक्स फिर से 80,000 के पार पहुंच गया है। निवेशकों को जितना घाटा हुआ था, उसकी आंशिक भरपाई भी हो रही है। बाजार की गिरावट में कंपनियां आईपीओ लाने की तैयारी कर रही हैं तो म्यूचुअल फंड नए फंड ऑफर (एनएफओ) लॉन्च करने के लिए तैयार बैठे है। फरवरी में महज तीन आईपीओ आए जबकि मार्च में एक भी नहीं आया। अप्रैल में एथर एनर्जी 2,981 करोड़ रुपये के साथ आईपीओ की शुरुआत कर रही है।

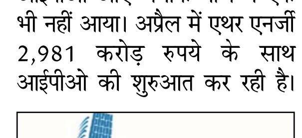

ऐसे में आने वाले महीने से ज्यादा कंपनियां बाजार में उतर सकती हैं। बाजार में सुधार से म्यूचुअल फंड स्कीमों की नेट एसेट वैल्यू यानी एनएवी बढ़ने लगी है। म्यूचुअल फंड की ज्यादातर स्कीमें इक्विटी में निवेश करती हैं। इसलिए, बाजार में गिरावट पर एनएवी यानी रिटर्न भी घटने लगता है। अप्रैल में बाजारों की तेजी ने म्यूचुअल फंड के रिटर्न की वापसी कर दी है। जो निवेशक घाटे में चले गए थे, उनकी भरपाई हो रही है। ऐसा इसलिए क्योंकि जिन स्कीमों ने इक्विटी में निवेश किया था, उन कंपनियों के शेयरों में सुधार से रिटर्न पर असर दिख रहा है।

शेयर बाजार में सुधार के लक्षण दिखते ही प्राइमरी मार्केट में बढ़ी हलचल, अगले सप्ताह पांच नए आईपीओ की लॉन्चिंग

एजेंसी
नई दिल्ली। अप्रैल में घरेलू शेयर बाजार में सुधार के लक्षण दिखते ही प्राइमरी मार्केट में भी हलचल तेज होने लगी है। सोमवार 28 अप्रैल से शुरू हो रहे कारोबारी सप्ताह में पांच नए आईपीओ लॉन्च होने वाले हैं। इनमें से इलेक्ट्रिक टू व्हीलर बनाने वाली कंपनी एथर एनर्जी का आईपीओ मेनबोर्ड सेगमेंट का है, जबकि चार आईपीओ एसएमई सेगमेंट के हैं। एथर एनर्जी के आईपीओ के साथ ही प्राइमरी मार्केट में फरवरी के बाद से जारी मेनबोर्ड सेगमेंट का सूखा भी खत्म होने वाला है। एथर एनर्जी के पहले मेनबोर्ड सेगमेंट में क्वालिटी पावर इलेक्ट्रिकल इक्विपमेंट्स का आईपीओ 14 से 18 फरवरी के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। इस शेयर की लिस्टिंग 24 फरवरी को हुई थी। उसके बाद से अभी तक मेनबोर्ड सेगमेंट में एक भी आईपीओ लॉन्च नहीं हुआ है। एथर एनर्जी का 2,981.06 करोड़ रुपये का आईपीओ 28 अप्रैल को सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। इस आईपीओ में 30 अप्रैल तक आवेदन किया जा सकता है। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 304 से 321 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 46 शेयर का है। कंपनी के शेयर 2 मई को अलॉट किए जाएंगे, जबकि इनकी लिस्टिंग 6 मई को बीएसई और एनएसई पर होगी। इसी तरह आईवरे सप्लाई चेन सर्विसेज का 27.13 करोड़ रुपये का आईपीओ भी 28 अप्रैल से 30 अप्रैल तक सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 95 रुपये प्रति शेयर का मूल्य

तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 1,200 शेयर का है। कंपनी के शेयर 2 मई को अलॉट किए जाएंगे, जबकि इनकी लिस्टिंग 6 मई को एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर होगी। सप्ताह के दूसरे कारोबारी दिन 29 अप्रैल को अरूणाया ऑर्गेनिक्स का 33.99 करोड़ रुपये का आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुल रहा है। इस आईपीओ में 2 मई तक आवेदन किया जा सकता है। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 55 से 58 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 2,000 शेयर का है। कंपनी के शेयर 5 मई को अलॉट किए जाएंगे, जबकि इनकी लिस्टिंग 7 मई को एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर होगी। इसी दिन केनरिक इंडस्ट्रीज का 8.75 करोड़ रुपये का आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुल रहा है। इस आईपीओ में 6 मई तक आवेदन किया जा सकता है। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 25 रुपये प्रति शेयर का मूल्य तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 6,000 शेयर का है। कंपनी के शेयर 9 मई को बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर लिस्ट होंगे। इनके अलावा वैगंस लर्निंग लिमिटेड का 38.38 करोड़ रुपये का आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए 2 मई को खुल रहा है। इस आईपीओ में 6 मई तक आवेदन किया जा सकता है। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 78 से 82 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 1,600 शेयर का है। कंपनी के शेयर 7 मई को अलॉट किए जाएंगे, जबकि इनकी लिस्टिंग 9 मई को बीएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर होगी।

सिर्फ गेहूं ही नहीं, इन 5 अनाजों के आटे से बनी रोटियां भी खाएं, पावर पैक्ड ये चपाती दिल से लेकर पाचन तंत्र को रखे मजबूत

गेहूं के आटे की रोटियां तो आप हर दिन खाते हैं, लेकिन शरीर को शक्तिशाली और स्वस्थ बनाना है तो आप अलग-अलग अनाजों के आटे की बनी रोटियां भी खाकर देखें. इसके लिए रागी, बाजरा, ज्वार, बेसन और मक्के की रोटियां सप्ताह में दो-तीन दिन जरूर खाएं. ये अनाज पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं और सेहत के लिए फायदेमंद भी.

देश में अधिकतर लोगों का मुख्य भोजन है दाल चावल, दाल रोटी. चावल तो काफी लोग खाने से परहेज भी करते हैं, लेकिन रोटी तो दो टाइम जरूर खाते हैं. वह भी गेहूं के आटे की बनी रोटियां आप डेली ही खाते हैं. ऐसे गेहूं का आटा फाइबर के साथ ही कई पोषक तत्वों से भरपूर होता है, लेकिन आपको अन्य अनाजों से बनी रोटियां भी डाइट में शामिल करना चाहिए. इससे दूसरे अनाज के फायदे भी मिलेंगे और आप हेल्दी और फिट भी रहेंगे. तो आप भी हर दिन गेहूं के आटे की रोटियों को खाकर ऊब चुके हैं तो इन शक्तिशाली अनाजों से तैयार आटे की रोटियां भी जरूर खाएं.गेहूं ही नहीं इन अनाजों से बनी रोटियां भी खाएं

आप गेहूं के आटे से बनी रोटियां खाकर थक चुके हैं और कुछ अलग टेस्ट के लिए दूसरे अनाजों से बनी रोटियां खाना चाहते हैं तो आप इन अनाजों के आटों से तैयार रोटियों का स्वाद चख सकते हैं. इसके लिए आप रागी, बाजरा, ज्वार, बेसन से भी रोटी बनाकर खा सकते हैं.ऐसा नहीं है कि आप गेहूं के आटे की रोटी खाना बंद कर दें, लेकिन अधिक न्यूट्रिएंट्स, टेस्ट के लिए बीच-बीच में इनसे बनी रोटियां भी जरूर खाएं. इन सभी अनाजों में ढेरों पोषक तत्व होते हैं, जो आपको कई तरह से लाभ पहुंचा सकते हैं. एक बात का ध्यान दें कि इन सभी अनाजों से तैयार आटे की रोटियां अलग-अलग खाएं ना कि मल्टीग्रेन आटे की तरह, तभी इनमें मौजूद न्यूट्रिएंट्स का लाभ आपको भरपूर होगा. एक साथ इन आटों को मिक्स करके ना खाएं.बाजरा- मास्टरशेफ पंकज भदौरिया ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक पोस्ट शेयर करके इन अनाजों से बनी रोटियों के फायदों के बारे में बताया है. वे कहती हैं कि बाजरा के आटे से बनी रोटी खाने से आपको भरपूर आयरन की प्राप्ति होगी. शरीर में आयरन की कमी दूर होगी.बेसन- बेसन में गेहूं या किसी दूसरे अनाज का आटा मिलाए बिना ही इसे गूंदें और इसकी रोटी बनाकर खाएं. बेसन प्रोटीन से भरपूर होता है. प्रोटीन मांसपेशियों का निर्माण और मरम्मत करता है. पाचन तंत्र बूस्ट होता है. स्किन, बाल के लिए भी हेल्दी है.

ज्वार- ज्वार के आटे की बनी रोटियां खाने से आपका ब्लड शुगर लेवल कंट्रोल में रहता है. ऐसे में डायबिटीज के मरीजों को ज्वार के आटे की बनी रोटी का सेवन करना चाहिए.रागी- इस अनाज से बनी रोटियां खाने से आपके शरीर में कैल्शियम की कमी नहीं होगी. इससे आपकी हड्डियां, दांत भी मजबूत रहेंगे और लंबी उम्र तक अर्थराइटिस, ऑस्टियोपोरोसिस आदि समस्याएं भी नहीं होंगी.

जानिए आखिर क्यों पाकिस्तान कर रहा है आतंकवाद फ़ैलाने जैसा 'गंदा काम'?

जब अंतर्राष्ट्रीय महकमे में पाकिस्तान को आतंकवाद पैदा करने की फैक्ट्री मान लिया गया है, तब भी यदि उसके खिलाफ कोई मजबूत वैश्विक कार्रवाई नहीं हुई तो ऐसा सिर्फ इसलिए कि वह दुनियावी हथियार और सुरक्षा उपकरण निर्माता कम्पनियों और उनके संरक्षक मूल राष्ट्रों के हाथों का खिलौना बन चुका है। ये देश कोई और नहीं बल्कि अमेरिका, रूस, चीन, ब्रिटेन, फ्रांस, इजरायल, जर्मनी, तुर्किये आदि जैसे देश हैं जिन्हें मौत का सौदागर कहना ज्यादा उचित रहेगा!

दरअसल, यह बात मैं नहीं कह रहा हूँ बल्कि इसका एक क्लू पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ के बयानों से मिला है, जिसके बाद अपने पाठकों को 'ह' से 'हलंत' तक की बात समझा रहा हूँ7 वैसे तो भारतीय नेतृत्व के लिए भी यह बात जानना-समझना जरुरी है! हालाँकि उसके पिछले एक दशक के रूख से यही प्रतीत होता है कि वह सबकुछ समझ रहा है और बार-बार दुनिया को यह नसीहत भी दे रहा है कि यह युद्ध नहीं बल्कि बुद्ध का समय है।

ऐसे में संभव है कि भारत को युद्ध की जाल में उलझाकर चीन को बर्बाद करना अमेरिका-ब्रिटेन समेत नाटो देशों की यह एक नई चाल हो, जैसा कि उन्होंने रूस के खिलाफ यूक्रेन को भड़का कर अपना नापाक लक्ष्य पूरा किया। चूँकि चीन-रूस के प्रगाढ़ रिश्तों से अमेरिका-चीन के रिश्ते खटाई में पड़ते जा रहे हैं, वहीं भारत का नेतृत्व रूस, अमेरिका और चीन से एकसमान रिश्ते रखना चाहता है ताकि युद्ध की बजाय विकास को गति दी जा सके। ऐसे में अंतर्राष्ट्रीय जगत के सामने कटोरा लेकर खड़ा रहने वाले देश पाकिस्तान को 'उनके' ही इशारे पर पहलगाम आतंकी हमले को अंजाम दिलवा दिया, ताकि मोदी सरकार के सब्र की बांध टूटे, फिर वह पाकिस्तान पर हमला करे।

तत्पश्चात पाकिस्तान को बचाने चीन आएगा और जब ऐसा होगा तो भारत-चीन के बीच भड़कने वाले युद्ध में पश्चिमी देश भारत का साथ देंगे और फिर जैसे यूक्रेन को उसकी कीमती खनिज सम्पदा के लिए ब्लैक मेल किया कुछ वैसा ही भारत के साथ भी करेंगे। हालाँकि भारत ने इस बार कूटनीतिक सर्जिकल लड़ाई को अपना नया हथियार बनाया और ताबड़तोड़ पांच प्रतिबन्ध उसपर थोप दिए। आगे सबक सिखाने की तैयारी में भारतीय नेतृत्व जुटा हुआ है।

इसी बीच घबराए पाकिस्तान ने यानी उसके रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने पहलगाम में आतंकी हमले के

बाद जो अर्द्धसत्य स्वीकार किया है, वह हैरान करने वाला बयान समझा जा रहा है। लेकिन इसके पीछे की एक और कड़वी सच्चाई जिसे वे चालाकी पूर्वक छिपा लिए, वह है अमेरिका का मजबूत अंतर्राष्ट्रीय विकल्प बनते जा रहे चीन और उसके समर्थक उत्तरपूर्वी देशों और मध्य पूर्व के देशों का नाम, जो हर भारतीय को जानना चाहिए! क्योंकि यदि उन्होंने ऐसी साफगोई दिखा दी होती तो चीन के साथ परवान चढ़ रहे रिश्ते खराब हो जाते!यहाँ यह भी संभव है कि भारत के कड़े रूख के मद्देनजर उन्होंने जानबुझकर अमेरिका, ब्रिटेन आदि का नाम रणनीतिक रूप से लिया है, क्योंकि पाकिस्तान के साथ उनके रिश्ते अब वैसे प्रगाढ़ नहीं रहे जैसे कि पहले हुआ करता था! ऐसा इसलिए कि पाकिस्तान अब उनके प्रबल प्रतिद्वंद्वी चीन के खेमे में जा चुका है। आज चीन के साथ रूस, उत्तर कोरिया, तुर्की, ईरान, जर्मनी आदि जैसे देश हैं, जिनमें से कई के साथ भारत के समझदारी भरे रिश्ते हैं। हालाँकि उनका यह बयान भारत और रूस के लिए आंख खोलने वाला है।भारत को पता होना चाहिए कि अंतर्राष्ट्रीय हथियार लॉबी दशकों से उसके पीछे पड़ी हैं। यहाँ के लोग भी यह महसूस कर रहे होंगे कि भारत में बढ़ते आतंकवादी हमलों, नक्सली हमलों और अंडरवर्ल्ड के गैंगवार के बाद हमारी सरकार ने आधुनिक हथियार और सुरक्षा उपकरण खरीदी। चूँकि आतंकवाद का 'बाप' पाकिस्तान और नक्सलवाद का बाप 'चीन' भारत के पड़ोसी हैं, इसलिए भारत इससे ज्यादा प्रभावित होता आया है7 हमारी %मुर्ख सरकारें% भी फर्जी धर्मनिरपेक्षता, मन्दिर-मस्जिद, आरक्षण और सामाजिक न्याय, भाषा और क्षेत्र के नाम पर भारतीयों को बरगलाती रहीं और आतंकवाद, नक्सलवाद और संगठित अपराध के खिलाफ भारतीयों में सद्प्रेरणा पैदा नहीं कीं, क्योंकि विदेशी पूंजीपतियों के एजेंट भारतीय पूंजीपति भी यही चाहते थे। नई आर्थिक नीति की आड़ में इनलोगों ने भारत के जमे जमाये उद्योगों को मार दिया और अमेरिका के शह पर गुणवत्ता हीन चीनी सामानों से भारतीय बाजार को पाट दिया। जबतक मोदी सरकार, मनमोहन सरकार की 'देशद्रोही' कारगुजारियों को समझ पाई और ताबड़तोड़ काउंटर वाले फैसले लिए। इससे परेशान चीनी-अमेरिकी पूंजीपतियों के गिरोह ने कृत्रिम कोरोना महामारी पैदा कर दी। भारत पर दबाव बनाने के लिए चीन गलवान घाटी में घुस आया।हालाँकि मोदी सरकार ने दृढ़ता पूर्वक अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्रों का मुकाबला करते हुए आपदा को अवसर में बदल दिया। उसके बाद रूस-यूक्रेन युद्ध और इजरायल-फिलिस्तीन युद्ध और दक्षिण चीन सागर विवाद के बीच भारत ने संतुलनकारी रूख अपनाया। यही बात बार बार अमेरिका और पश्चिमी देशों को खटक रही है। अभी हाल ही में पाकिस्तान के बलूचिस्तान में खनिज सम्पदा निकालने में अमेरिका ने जो दिलचस्पी दिखाई है, उसके लिंक भी देर-सबेर कश्मीर कांड से जुड़ जाएंगे।

चूँकि पाकिस्तानी रक्षा मंत्री ने दो टूक स्वीकार किया है कि पाकिस्तान आतंकी समूहों को धन मुहैया करा रहा है और उनका समर्थन कर रहा है। ख्वाजा आसिफ ने एक बातचीत के दौरान कहा- हम करीब 3 दशकों से अमेरिका के लिए यह गंदा काम कर रहे हैं। ख्वाजा आसिफ ने अपनी इस प्रवृति के लिए अमेरिका और पश्चिमी देशों को जिम्मेदार ठहराया। ख्वाजा ने एक बयान में माना कि पाक पिछले तीन दशकों से आतंकवाद को पाल रहा है। रक्षा मंत्री ने स्वीकार किया है कि पाकिस्तान आतंकी समूहों को धन मुहैया करा रहा है और उनका समर्थन कर रहा है।

मसलन वायरल हो रहे इस आशय के एक वीडियो क्लिप में पाकिस्तान के रक्षा मंत्री स्काई न्यूज के यल्दा हकीम से बातचीत कर रहे हैं, जब वह उनसे पूछती हैं, %आप मानते हैं सर, कि पाकिस्तान का इन आतंकी संगठनों को समर्थन देने, प्रशिक्षण देने और धन मुहैया कराने का लंबा इतिहास रहा है? ख्वाजा आसिफ ने अपने जवाब में कहा, %हम करीब 3 दशकों से अमेरिका के लिए यह गंदा काम कर रहे हैं..ख्वाजा आसिफ ने आगे कहा, ब्रिटेन समेत पश्चिम... यह एक गलती थी, और हमें इसके लिए भुगतना पड़ा, और इसीलिए आप मुझसे यह कह रहे हैं। अगर हम सोवियत संघ के खिलाफ युद्ध में और बाद में 9/11 के बाद के युद्ध में शामिल नहीं होते, तो पाकिस्तान का ट्रैक रिकॉर्ड बेदाग होता।%

वहीं भारत के साथ ऑल आउट वार की बात करने वाले ख्वाजा आसिफ ने कहा कि पाकिस्तान में लश्कर ए तैयबा खत्म हो चुका है। हालाँकि उन्होंने स्वीकार किया कि लश्कर ए तैयबा का अतीत में पाकिस्तान के साथ कुछ लिंक मिले हैं। उन्होंने कहा कि अब ये आतंकी संगठन खत्म हो चुका है। ऐसे में पाकिस्तान के साथ लश्कर का लिंक मिलने का ये मतलब नहीं है कि हम इसको मदद करते हैं। इन बातों से स्पष्ट है कि आखिर पाकिस्तान आतंकवाद फ़ैलाने जैसा गंदा काम क्यों कर रहा है? और जब यह बात साफ हो चुकी है तो भारत को ऐसा निर्णायक पलटवार करना चाहिए कि उनके होश ठिकाने में आ जाएँ7 चूँकि भारत सत्य के साथ खड़ा है, इसलिए देर सबेर जीतेगा भारत और हारेंगे षड्यंत्रकारी! बस रूस पुराणी दोस्ती निभाता रहे और भारत उसके प्रति वफादार बना रहे!

संपादकीय

कश्मीरियत हेतु चुनौती

इसमें दो राय नहीं कि सीमा पार पाक के सत्ता प्रतिष्ठानों की शह पर कट्टरपंथी ताकतों की साजिश के चलते पहलगाम में पर्यटकों पर हुआ हमला बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है, जो आतंकियों की हताशा को ही दर्शाता है। लेकिन पहलगाम का आतंकी हमला कश्मीरियों पर दोहरी मार है। इस हमले का कश्मीर के पर्यटन उद्योग पर घातक प्रभाव नजर आ रहा है। जिस तेजी से पर्यटक कश्मीर छोड़ रहे हैं और बाकी लोग अपनी अग्रिम बुकिंग रद्द करा रहे हैं, वह कश्मीरियों के लिये अप्रत्याशित है। शायद स्थितियां सामान्य होने में वर्षों लग जाएंगे। घाटी में रहने वाले लोग पर्यटकों की संख्या में अभूतपूर्व कमी के कारण भारी नुकसान की आशंका जता रहे हैं। दरअसल, लंबे अंतराल के बाद कश्मीर के पर्यटन उद्योग के पटरी पर लौटने के बाद स्थानीय लोगों ने ऋण लेकर अपने कारोबार नये सिरे से खड़े किए थे। अब उन लोगों के सामने न केवल जीविका का संकट है बल्कि फिक्र है कि वे लिए गये कर्ज कैसे चुकाएंगे। उनकी आकांक्षा है कि घाटी में स्थितियां जल्दी से सामान्य हों। वहीं इस संकट का दूसरा पहलू अन्य राज्यों में रह रहे कश्मीरी छात्रों और व्यापारियों की सुरक्षा को लेकर है। निस्संदेह, पहलगाम की घटना ने पूरे देश को दुखी किया है। जैसे-जैसे आतंकियों के निर्मम हमले से जुड़ी कहानियां निकल रही हैं, समाज में तल्ख प्रतिक्रिया नजर आ रही है। कश्मीरी लोग आशंकित हैं कहीं इस आक्रोश से उपजे रोष का शिकार कश्मीर मूल के लोगों को न होना पड़े। निश्चित रूप से किसी भी सभ्य समाज में ऐसी कोई प्रतिक्रिया नहीं होनी चाहिए कि आतंकवादियों के कुकृत्यों का खमियाजा निर्दोष लोगों को भुगतना पड़े। यही वजह है कि जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला, पीडीपी अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती और पीपुल्स कॉन्फ्रेंस के प्रमुख सज्जाद लोन जैसे प्रमुख राजनेताओं ने कश्मीरियों की सुरक्षा को लेकर चिंता जतायी है। ऐसे में केंद्र व राज्य सरकारों से उम्मीद की जा रही है कि वे विभाजनकारी तत्वों पर नकेल डालेंगे।निस्संदेह, इस बात को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए कि पहलगाम की दुर्भाग्यपूर्ण घटना के बाद पहली बार घाटी में आतंकवाद के खिलाफ मुखर प्रतिक्रिया सामने आई है। कश्मीर में सक्रिय रहने वाले राजनीतिक दलों, व्यापार निकायों और सामाजिक-धार्मिक संगठनों के प्रतिनिधियों के साथ ही आम लोगों ने भी पहलगाम हमले के दौरान हुई पर्यटकों की हत्या की निंदा की है। उन्होंने सीमा पार से आतंकवाद की पाठशाला चलाने वाले लोगों को सख्त संदेश दिया कि हमारे मामलों में तुम्हें फिक्र करने की जरूरत नहीं है। कश्मीर के लोगों ने साफ संदेश भेजा है कि ङ्क'हमारे नाम पर नहीं।' कश्मीरियों ने बताया कि उन्हें उन आतंकवादियों से किसी भी तरह की सहानुभूति नहीं है, जो मानवता के खिलाफ अपने अपराधों से कश्मीर के साथ-साथ इस्लाम को भी बदनाम कर रहे हैं। निस्संदेह, पहलगाम के क्रूर हमले के बाद पूरे देश में गुस्सा चरम पर है। ऐसे में राजनीतिक दलों और धार्मिक संगठनों को इस आक्रोश को बढ़ाने के बजाय इसे शांत करने का प्रयास करना चाहिए। देश के संघीय स्वरूप व सद्भावना की हर कीमत पर रक्षा की ही जानी चाहिए। पहलगाम की घटना के बाद तल्खी दिखा रहे लोगों को याद रख चाहिए कि यह कश्मीरी टट्टूवाला सैयद आदिल हु शाह ही था, जिसने बंदूकधारी आतंकवादियों से पर्यट को बचाने की कोशिश करते हुए अपनी जान कुर्बान दी थी। एक बहादुर व्यक्ति की गोली मारकर हत्या दी गई, जब वह हमलावर आतंकी से हथियार छीनने कोशिश कर रहा था। कश्मीरियों के बारे में ग धारणाओं को दूर करने के लिये उनके निस्वार्थ सा और वीरता को व्यापक रूप से स्वीकार किया ज चाहिए। बल्कि उनकी प्रशंसा की जानी चाहिए। कायरतापूर्ण आतंकी हमले के लिये पूरे राज्य के लं को दोषी ठहराना सांप्रदायिक सद्भाव को पलीता ल जैसा है, जो हमारे धर्मनिरपेक्ष सामाजिक ताने-बाने नुकसान भी पहुंचा सकता है। हमें विगत में आत हमले के लिए संप्रदाय विशेष को दोषी ठहराने के हुई प्रतिक्रियाओं को नजरअंदाज नहीं करना चाहि कोशिश हो घटनाक्रम के बाद उपजे शोर में समझ आवाजें दब न जाएं।

वक़्फ़ संशोधन विधेयक 2025: एक नई दिशा की ओर!

जहाँ तक न्यायिक प्रक्रिया की बात है, अब वक़्फ़ मामलों की सुनवाई के लिए विशेष न्यायाधिकरण स्थापित किए जाएंगे जिनमें योग्य न्यायाधीशों की नियुक्ति होगी। इससे वर्षों तक लटके हुए वक़्फ़ विवादों का शीघ्र और न्यायसंगत निपटारा संभव होगा।

भारत में वक़्फ़ संपत्तियाँ मुसलमानों की धार्मिक, सामाजिक और शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक पवित्र अमानत मानी जाती हैं। इस्लाम में वक़्फ़ की परिकल्पना एक ऐसे संस्थान के रूप में की गई है जो समाज के वंचित और ज़रूरतमंद वर्ग की सेवा करे और न्याय, दया तथा साझेदारी जैसे मूल्यों को सुदृढ़ बनाए। लेकिन बीते वर्षों में वक़्फ़ संपत्तियों पर अवैध कब्ज़े, प्रशासनिक लापरवाहियाँ, भ्रष्टाचार और कानूनी उलझनों ने इस प्रणाली को खोखला बना दिया है। मुसलमानों के इस पवित्र संसाधन का दुरुपयोग हुआ, जिससे न केवल समुदाय का विश्वास टूटा, बल्कि धार्मिक और सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति में भी बाधा उत्पन्न हुई। इन्हीं जटिलताओं के समाधान हेतु केंद्र सरकार द्वारा वक़्फ़ संशोधन विधेयक 2025 प्रस्तुत किया गया है, जो मौजूदा वक़्फ़ अधिनियम 1995 में व्यापक परिवर्तन करता है। यह विधेयक न केवल वक़्फ़ संपत्तियों की बेहतर सुरक्षा सुनिश्चित करता है, बल्कि वक़्फ़ प्रशासन में पारदर्शिता, जवाबदेही और सार्वजनिक हित को भी प्रमुखता देता है।इस विधेयक के माध्यम से वक़्फ़ जायदादों को 'सार्वजनिक धर्मार्थ संपत्ति' के रूप में चिन्हित कर उन्हें विशेष कानूनी संरक्षण देने की कोशिश की गई है, जिससे अब कोई भी व्यक्ति या संस्था इन पर आसानी से दावा नहीं कर सकेगा। यह एक ऐतिहासिक क़दम है क्योंकि इससे उन लाखों एकड़ वक़्फ़ ज़मीनों को बचाया जा सकेगा जो दशकों से गैर-कानूनी कब्ज़ों के अधीन हैं। इसके साथ ही, यह विधेयक वक़्फ़ बोर्डों को डिजिटल प्रणाली के अंतर्गत लाने का निर्देश देता है, जिससे संपत्तियों की पारदर्शी सूची बने, वार्षिक लेखा परीक्षण हो और आम जनता को यह जानने का अधिकार मिले कि वक़्फ़ की आय कहाँ खर्च हो रही है। इससे ना सिर्फ़ भ्रष्टाचार में कमी आएगी बल्कि वक़्फ़ प्रशासनिक व्यवस्था पर मुसलमानों का विश्वास भी पुनः स्थापित होगा।विधेयक में एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रावधान यह है कि अब वक़्फ़ संपत्ति घोषित करने के लिए केवल ÷उपयोग÷ (ह्वद्बह्न) के आधार पर दावा मान्य नहीं होगा। कई वर्षों से बिना किसी वैध दस्तावेज़ या घोषणा के लोग केवल लंबे समय तक ज़मीन के इस्तेमाल के आधार पर उसे वक़्फ़ घोषित कर देते थे, जो शरीअत और न्याय दोनों के विरुद्ध है। नया विधेयक इस प्रवृत्ति को प्रतिबंधित करता है और केवल विधिसम्मत रूप से समर्पित संपत्तियों को ही वक़्फ़ मान्यता प्रदान करता है। यह प्रावधान न केवल ज़मीन हथियाने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाएगा, बल्कि न्यायिक प्रक्रिया को भी सुचारु बनाएगा।

जहाँ तक न्यायिक प्रक्रिया की बात है, अब वक़्फ़ मामलों की सुनवाई के लिए विशेष न्यायाधिकरण स्थापित किए जाएंगे जिनमें योग्य न्यायाधीशों की नियुक्ति होगी। इससे वर्षों तक लटके हुए वक़्फ़ विवादों का शीघ्र और न्यायसंगत निपटारा संभव होगा। विधेयक इस बात पर भी बल देता है कि वक़्फ़ की आय का उपयोग मुख्यतः शिक्षा, स्वास्थ्य और धार्मिक-सामाजिक सेवाओं में किया जाए, न कि राजनीतिक या व्यावसायिक लाभ के लिए। इस प्रकार, यह संशोधन विधेयक वक़्फ़ की धार्मिक और परोपकारी भावना की पुनर्स्थापना करता है।

इस विधेयक द्वारा केंद्रीय वक़्फ़ परिषद को भी अधिक अधिकार दिए गए हैं ताकि वह राज्य वक़्फ़ बोर्डों की निगरानी कर सके, उनके कार्यों का मूल्यांकन कर सके और आवश्यकतानुसार दख़ल दे सके। इससे राज्यों के बीच समन्वय बढ़ेगा और निष्क्रिय या भ्रष्ट वक़्फ़ बोर्डों के विरुद्ध कार्रवाई की जा सकेगी। इसके अतिरिक्त, पारदर्शी नीतियों और डिजिटल व्यवस्था के माध्यम से वक़्फ़ संपत्तियों से आय भी बढ़ाई जा सकती है, जिसे सामाजिक विकास में लगाया जाएगा। उदाहरणस्वरूप, अविकसित या बिना कब्ज़े वाली संपत्तियों को क्क्क्क मॉडल या इस्लामी सामाजिक वित्त (Islamic Social Finance) की सहायता से जनकल्याणकारी उपयोग में लाया जा सकता है।

इन सभी प्रावधानों का समग्र प्रभाव यह होगा कि मुस्लिम समुदाय जो लंबे समय से वक़्फ़ प्रशासन से निराश था, उसमें नया विश्वास उत्पन्न होगा। वक़्फ़ संशोधन विधेयक 2025 न केवल वक़्फ़ संपत्तियों की सुरक्षा सुनिश्चित करता है, बल्कि उन्हें मुसलमानों के लिए एक सशक्तिकरण के उपकरण के रूप में रूपांतरित करने की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। यह विधेयक केवल एक क़ानूनी सुधार नहीं, बल्कि शरीअत, संविधान और समाज ङ्क इन तीनों के बीच संतुलन साधने वाला ऐतिहासिक प्रयास है। मुसलमानों को इस सुधार में भागीदारी करनी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वक़्फ़ का सही स्वरूप फिर से जीवंत हो और यह आने वाली नस्लों के लिए एक सुरक्षित और उन्नत भविष्य की नींव बने।

दमन और दीव दो सुंदर द्वीप

भारत के केंद्रशासित प्रदेशों में दमन और दीव भी है। अरब सागर की अपार-अगाध जलराशि ने इन्हें व्यापार और पर्यटन का प्रमुख केंद्र बना दिया है। हालाँकि ये बहुत छोटे-छोटे द्वीप हैं, परंतु इनकी प्राकृतिक सुंदरता, विविध संस्कृतियों का मेल व सुंदर समुद्र तटों ने इन्हें असीम खूबसूरती से नवाजा है। गुजरात व महाराष्ट्र राज्य की नजदीकी ने यहाँ के पर्यटन को फलने-फूलने का पूरा मौका दिया। बहुत समय तक दमन और दीव पर पुर्तगालियों का शासन था। उसके बाद इसे पुर्तगालियों से आजाद कराकर गोआ में मिला दिया गया। वर्ष 1987 में इसे एक अलग केंद्रशासित प्रदेश का दर्जा दिया गया।

दमन और दीव की स्थिति : भारत के प्रमुख व्यावसायिक केंद्र मुंबई से दमन की दूरी लगभग 193 कि.मी. है। यह पूर्व में गुजरात राज्य से तथा पश्चिम में अरब सागर से जुड़ा है। इसके उत्तर में 'कोलाक' तथा दक्षिण में 'कलाई' नदी है। दमन का पड़ोसी जिला गुजरात का वलसाड जिला है। दीव भारत का एक ऐसा द्वीप है, जो दो पुलों के द्वारा जुड़ा है। दीव गुजरात के जूनागढ़ जिले से जुड़ा है।

क्या है दमन में : दमन दो भागों में 'मोटी दमन' और 'नानी दमन' में विभाजित है। इन दोनों भागों को विभक्त करने वाली नदी दमनगंगा नदी है। मोटी दमन में कई पुराने चर्च हैं, जिनमें प्रमुख चर्च 'कैथेडरल बोल जेसू' है। इस चर्च की दीवारों पर की गई ईसा मसीह के जीवन से संबंधित सुंदर चित्रकारी व लकड़ी की बेहतरीन नक्काशी पर्यटकों को यहाँ खींच लाती है। नानी दमन का मुख्य आकर्षण संत जैरोम का किला है, जो मुगलों के आक्रमण से सुरक्षा के लिए बनाया गया था।

इसके अलावा दमन के अन्य पर्यटक आकर्षणों में बोम जीजस चर्च, अवर लेडी ऑफ सी चर्च, अवर लेडी ऑफ रेमीडियोज चर्च, परगोला गार्डन, अम्यूजमेंट पार्क, दमनगंगा टूरिस्ट कॉम्प्लेक्स, काचीगाम, सत्य सागर उद्यान, मिरासोल गार्डन, मिरासोल वाटर पार्क आदि हैं।

दमन के बीच : दमन की जमीन को छूते अरब सागर ने दमन को अप्रतिम प्राकृतिक सुंदरता व हरियाली प्रदान की है। दमन में दो बीच देविका बीच और जैमपोरे बीच हैं।

देविका बीच : यह बीच दमन से पाँच किमी उत्तर में है। यहाँ कई बड़े बार व रेस्टोरेंट भी हैं। यह बीच बच्चों को बहुत लुभाता है क्योंकि यहाँ बच्चों के लिए पार्क व अन्य सुविधाएँ हैं। **जैमपोरे बीच :** नानी दमन में स्थित यह बीच दमन का प्रसिद्ध पिकनिक स्पॉट भी है। यहाँ सर्वाधिक पर्यटक आते हैं। यहाँ का शांत वातावरण प्रेमियों को खींच लाता है। यही कारण है कि अधिकांश प्रेमी जोड़े यहाँ स्वच्छंदता की तलाश में आते हैं। तैराकी के लिए भी यह बीच बहुत अच्छा स्थान है।

क्या है दीव में : सेंट पॉल चर्च, दीव फोर्ट, पनीकोटा फोर्ट, घोघला बीच, चिल्ड्रन पार्क और समर हाउस यहाँ के मुख्य पर्यटन स्थल हैं।

दीव के बीच :

नगोआ बीच : यह दीव का बेहद ही सुंदर बीच है। दीव से 20 मिनट की ड्राइव करके आप आसानी से यहाँ पहुँच सकते हैं। जू?ते के आकार के समान होने के कारण 2 किमी तक फैला यह द्वीप अब पर्यटकों की पहली पसंद बन रहा है।

चक्रतीर्थ बीच : यह बीच हरियाली के सौंदर्य से भरपूर है। इस बीच के आसपास स्थित सुंदर बगीचे, खुला स्टेडियम इसे पर्यटकों के लिए फुल इंजॉयमेंट का स्थान बनाता है।

कब जाएँ दमन और दीव : वैसे तो दमन और दीव की जलवायु वर्षभर पर्यटकों को आकर्षित करती है किंतु यहाँ आने का उपर्युक्त मौसम अक्टूम्बर से मई तक का है।

कैसे पहुँचें दमन और दीव : सड़क मार्ग की लंबाई : दमन में 191 किमी का सड़क मार्ग है तथा दीव में 78 किमी तक लंबा सड़क मार्ग है।

नजदीकी रेलवे स्टेशन : दमन पश्चिम रेलवे के दिल्ली-मुंबई रूट पर स्थित है। यहाँ का नजदीकी रेलवे स्टेशन गुजरात का 'वापी' है। दीव मीटर गेज रेलवे लाइन से जुड़ा है। दीव का नजदीकी रेलवे स्टेशन 'दिलवाड़ा' है।

तूफानों के बीच थीम पार्क की सुंदर दुनिया

खूबसूरत बिल्डिंगों से सजा आधुनिक शहर... चमचमाती रोशनी... साफ-सुथरी सडक... तेज जिंदगी और एक भूकम्प..... खूबसूरत शहर का एकाएक खाक हो जाना... यह मंजर सोचकर ही भयावह लगता है, लेकिन अमेरिका के फ्लोरिडा प्रांत के नागरिकों के लिए यह कोई नई बात नहीं है। अपनी जीवटता के कारण वे हर तूफान के बाद शहर की बदशक्ल हो चुकी शक्ल को पहले से ज्यादा सुंदर बना देते हैं।

खूबसूरत बिल्डिंगों से सजा आधुनिक शहर... चमचमाती रोशनी... साफ-सुथरी सड़क... तेज जिंदगी और एक भूकम्प..... खूबसूरत शहर का एकाएक खाक हो जाना... यह मंजर सोचकर ही भयावह लगता है, लेकिन अमेरिका के फ्लोरिडा प्रांत के नागरिकों के लिए यह कोई नई बात नहीं है। अपनी जीवटता के कारण वे हर तूफान के बाद शहर की बदशक्ल हो चुकी शक्ल को पहले से ज्यादा सुंदर बना देते हैं।

आज हम आपकी मुलाकात करा रहे हैं, फ्लोरिडा की खास पर्यटन नगरिया ओरलैंडो से। ओरलैंडो की आबादी मात्र दो लाख है, लेकिन यहाँ हर साल लगभग पाँच करोड़ पर्यटक आते हैं। पर्यटकों की खासी आवाजाही ने इस उपनगर को महानगर जैसा रूप दे दिया है। होटलों की दृष्टि से यह अमेरिका का दूसरा बड़ा शहर है। ओरलैंडो को पॉप म्यूजिक की राजधानी भी माना जाता है। यहाँ का रॉक म्यूजिक काफी लोकप्रिय है। रात का सुरमई अँधेरा छाते ही यहाँ के पब और डिस्कोथेक रोशन हो जाते हैं। यहाँ के लाइव रॉक बैंड इस माहौल में चार चाँद लगा देते हैं।

आकर्षण :- वंडर वर्क्स :

फ्लोरिडा में बार-बार तूफान आते हैं। इन तूफानों से प्रेरणा लेकर ओरलैंडो वासियों ने एक अनूठे भवन का निर्माण करवाया है और उसे नाम दिया है - वन्डर वर्क्स। यहाँ के इंटरनेशनल ड्राइव मार्ग पर बनी यह इमारत सभी का ध्यान खींचती है। बिल्डिंग को देखते ही महसूस हो जाता है कि इसे यह नाम क्यों दिया गया। बिल्डिंग को पूरी तरह उल्टा बनाया गया है।

इसकी छत नीचे और नींव ऊपर है। इसे एक नजर देखने के बाद महसूस होता है कि तेज तूफान ने इसे जड़ से उखड़े पेड़ की तरह उखाड़ फेंका है। आप इस बिल्डिंग के बाहरी स्वरूप को देखकर ही ठिठक जाएँगे, लेकिन जरा अंदर जाइए जनाब। बिल्डिंग के अंदर आपके लिए काफी कुछ है। कम्प्यूटर के इस युग में यहाँ हर चीज तकनीक से सजी है। यहाँ एक खास कमरे में आप भूंकप या तूफान के समय होने वाले कंपन को महसूस कर सकते हैं। बच्चों के लिए यहाँ खासी मनोरंजक चीजों का भंडार है।

यूनिवर्सल स्टूडियो-

यह फिल्म और टीवी सीरियल बेस थीम पार्क है। इस थीम पार्क की सबसे मजेदार बात है कि यहाँ आप स्क्रीन के अंदर जाकर रील लाइफ में एक्शन का लुत्फ ले सकते हैं। यहाँ आप 'शार्क' फोर डी जैसी ऑस्कर विनिंग फिल्म में प्रिंसेस फियोना का साथ दे सकते हैं।

यहाँ सारी फिल्में इंटरेक्टिव सेक्शन में रखी गई हैं। जैसे शार्क थ्री डी फिल्म है, लेकिन यहाँ उसे फोर डी का रूप देकर नन्हे मेहमानों के लिए खास डायमेंशन बनाया गया है। शार्क की ही तरह यहाँ ' रिवेंज ऑफ द ममी, फियर फेक्टर लाइव, मेन इन ब्लैक, ईटी एडवेंचर' जैसी फिल्में इंटरेक्टिव सेक्शन में शामिल हैं।

डिजनी लैंड :-

ओरलैंडो को बच्चों का स्वर्ग कहा जाए तो गलत न होगा। यहाँ बच्चों के लिए काफी कुछ है... इनमें से एक है डिजनी लैंड। यहाँ आकर बच्चे कार्टून की रंग-बिरंगी दुनिया से रू-ब-रू होंगे। बच्चे यहाँ न सिर्फ खूबसूरत कार्टून कैरेक्टर जैसे मिक्की-माउस, एरियल, चिकिन लिटल आदि से मिल सकते हैं, बल्कि कार्टून फिल्म कैसे बनाई जाती है आदि प्रकियाएँ भी देख-समझ सकते हैं। यहाँ वे वॉल्ड डिजनी की कल्पनाओं से भी रु-ब-रू हो सकते हैं, जो मिकी के चरित्र को रचते समय उनके जेहन में थीं।

यहाँ के मैजिकल कासल में 'विश कम ट्रू' नामक 12 मिनट की खूबसूरत फिल्म दिखाई जाती है। इस फिल्म में डिज्नी के क्लासिकल गानों और कार्टून कैरक्टरों के संवादों को मिलाकर दिलचस्प फिल्म दिखाई जाती है। इसके अलावा यहाँ हर रात होने वाला फायर वर्क्?स शो बच्चों को काफी पसंद आता है। इस शो में आधे घंटे तक तेज रोशनी वाले पटाखे जलाए जाते हैं।

वॉटर पार्क -

कुछ एक्साइटिंग और एडवेंचरस चाहिए तो डिजनी लैंड का वॉटर पार्क आपकी सही मंजिल है। यहाँ कई फन पैक्ड वॉटर राइड्स हैं। बड़े और बच्चों दोनों को ध्यान रखकर वॉटर स्लाइड्स बनाई गई हैं। यहाँ आकर आपको लगेगा कि आप वॉटर वर्ल्ड में आ गए हैं।

नासा का कैनेडी स्पेस सेंटर :-

ओरलैंडो से मात्र 70 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, नासा का विश्व प्रसिद्ध कैनेडी स्पेस सेंटर। आप कुछ आवश्यक इजाजत लेकर विज्ञान की इस दुनिया को जान समझ सकते हैं।

फायर वर्क्स डे :- ओरलैंडो में न्यू ईयर ईव और स्वतंत्रता दिवस के दिन खासतौर पर फायर वर्क्स डे मनाया जाता है। इस दिन ओरलैंडोवासी 'दीवाली' की तरह रोशन रात का जश्न मनाते हैं। सरकार की तरफ से खास आयोजन किए जाते हैं, जिन्हें देखने दूर-दूर से लोग आते हैं।

कब जाएँ- ओरलैंडो जाने के लिए जुलाई-अगस्त का मौसम सबसे अच्छा है। ' समर' यहाँ का पीक मौसम है। इस समय पर्यटकों की भीड़ इस शहर को घेर लेती है। 4 जुलाई के दिन यहाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है। इस समय आप यहाँ लोकतांत्रिक अमेरिका को ओरलैंडो की नजर से बेहद खूबसूरत लाल-नीले और सफेद रंग में निहार सकते हैं।

कैसे जाएँ-

आप अमेरिका के लिए दिल्ली या मुंबई से सीधी फ्लाइट ले सकते हैं। इस शहर में हवाई यात्रा का खासा जाल बिछा हुआ है। यहाँ का ओरलैंडो इंटरनेशनल एयरपोर्ट और सेनफोर्ड इंटरनेशनल एयरपोर्ट देश-विदेश की करीब साठ एयरलाइंस से जुड़ा हुआ है। इसके अलावा शहर में बस, टैक्सी और ट्रेन का अच्छा जंक्शन है, जिन्हें आप अपने बजट के अनुसार चुन सकते हैं।

कहाँ ठहरे- होटलों की दृष्टि से ओरलैंडो अमेरिका का दूसरा बड़ा शहर है। यहाँ सस्ते टूरिस्ट हाउस से लेकर मँहगे आलीशान फाइव स्टार होटल हैं। आप यहाँ जाने से पहले होटल की ऑनलाइन बुकिंग कर लें तो बेहतर होगा। यदि आपका कार्यक्रम तय है तो काफी पहले बुकिंग करें। पीक डेज में बुकिंग काफी मँहगी हो जाती है। यहाँ पहले आओ, सस्ता पाओ का फंडा काफी चलता है। इसके साथ ही डिजनी के रिसॉर्ट में ठहरने का अनुभव भी बेहद अनूठा है। यदि यह आपके बजट को सूट करता है तो यहाँ जरूर ठहरें।

बजट :-

यदि आप इंडिया से पहले अमेरिका और फिर ओरलैंडो जा रहे हैं तो दो व्यक्तियों के लिए कम-से-कम डेढ़ लाख का खर्चा आएगा। कई अच्छे टूर पैकेज उपलब्ध हैं। उन पर खास ध्यान रखिए। यदि अमेरिका से ओरलैंडो जाना चाहते हैं तो 600-700 डॉलर (25,000 से 30,000 रु.) में काम चल जाएगा।

टिप्स :-

कविदेश यात्रा के समय काफी पहले से तय किया कार्यक्रम आर्थिक रूप से फायदेमंद होता है। आप काफी अच्छे ऑफर्स पहले से ही बुक कर सकते हैं। एक कहावत है कि यदि अमेरिका और यूरोप में पहले से बुकिंग करो तो पाँच सौ रुपय में विम्बल्डन का मजा ले सकते हो।

कआज तकनीक का जमाना है। जब भी विदेश घूमने का मन हो, नेट को सच्चा गाइड मानकर लगातार सर्च करते रहें। लेकिन हमारी सलाह है कि बुकिंग आदि के लिए ऑफीशियल साइट का ही उपयोग करें। यहाँ गलत जानकारी और ठगे जाने की संभावना न के बराबर होती है।

कवीजा की पूरी तैयारी काफी पहले से कर लें। ताकि ऐन वक्त पर परेशानी न उठानी पड़े।

कविदेश भ्रमण के समय पासपोर्ट का खास ख्याल रखें। मौज-मस्ती में इसे घुमा न दें।

कविदेश जाते समय हेल्थ बीमा अवश्य करवाएँ। सही समय पर थोड़े से पैसे खर्च करने से आप भविष्य में आने वाली एकाएक तकलीफ के लिए तैयार रहेंगे। शुभ यात्रा।

कटहल खाने के हैं कई फायदें, अस्थमा में भी लाभकारी

कटहल को अंग्रेजी में जैकफ्रूट कहा जाता है, जिसमें कई सारें गुण व्याप्त होते हैं। कटहल का सेवन अस्थमा, मधुमेह, मोटापा आदि में काफी लाभकारी है। आमतौर पर यह ट्रॉपिकल क्षेत्रों में पाया जाता है। आइए इसके फायदों के बारे में जानते हैं।

- डायबिटीज में कटहल की पत्तियों के रस का सेवन काफी फायदेमंद रहता है। यह रस हाई ब्लडप्रेशर के रोगियों के लिए भी उत्तम है।
- कटहल में फैट नहीं होता और कैलोरी भी काफी कम होती है। इसके साथ ही इसमें काफी मात्रा में पौष्टिक तत्व भी होते हैं। कटहल में प्रोटीन भी अच्छी मात्रा में होता है, जिससे पेट काफी देर तक भरा-भरा महसूस होता है।
- कटहल के पेड़ की ताजी कोमल पत्तियों को कूट कर छोटी-छोटी गोली बना लें। इससे गले के रोगों में फायदा होता है।
- कटहल की जड़ अस्थमा के रोगियों के लिए लाभदायक मानी जाती है। इसे पानी के साथ उबालकर बचा हुआ पानी छान कर पीने से अस्थमा को कंट्रोल किया जा सकता है।

शुगर को नियंत्रित करते हैं ये 5 घरेलू उपाय

आज की जीवन शैली में लोगों को शुगर होना आम समस्या हो गई है। खासकर उन लोगों जिन्हें ऑफिस या कॉलेज में कई -कई घंटे लगातार बैठे रहना पड़ता है और दिन में कम से कम व्यायाम करते उन लोगों में यह समस्या काफी देखने को मिलती है। शुगर से कई और तरह की बीमारियां भी बढ़ने लगती हैं, लेकिन यदि नियमित जीवनशैली और संतुलित खानपान अपनाया जाए तो इस समस्या से राहत पाई जा सकती है। यहां हम कुछ ऐसे घरेलू उपायों के बारे में बता रहे हैं जो शुगर को नियंत्रित करने में काफी मददगार होते हैं।

नियमित जीवनशैली व खानपान से कर सकते हैं कंट्रोल

भिंडी: 4 से 5 भिंडी एक कांच के बर्तन में पानी में काट कर रख दीजिए। सुबह तक उसमें भिंडी गल जाएगी अब आप उस पानी को पी लीजिए इस पानी से शुगर लेवल कंट्रोल हो जाता है।

नीम: नीम व गिलोय की दातुन करें। दातुन करते समय जो पानी मुंह में आए उसे बाहर न निकालें, बल्कि अंदर ही गटक लें। इसे आप अपनी दिनचर्या में शामिल कीजिए। इससे भी शुगर लेवल काबू में रहता है।

जामुन: जामुन एक ऐसा पेड़ है जिसकी पत्तियां, फूल, फल, गुठलियां सब शुगर कंट्रोल करने में काफी अच्छी मानी जाती है। जामुन के बीज आप सुखा कर पीस लीजिए। इनका चूर्ण आप नियमित रूप से लीजिए काफी फायदा करेगा। यह चूर्ण आप दिन में दो बार लीजिए काफी लाभ होगा।

एलोवेरा: एलोवेरा भी मधुमेय रोग के लिए काफी अच्छा स्त्रोत है। आप चाहें तो एलोवेरा की सब्जी बनाकर भी खा सकते हैं। आप चाहें तो इसका चूर्ण भी बना कर रख सकते हैं या फिर इसका रस भी आप पी सकते हैं। यह शुगर कंट्रोल करने का रामबाण इलाज है।

गेहूं की ज्वारी: गेहूं की ज्वारी यानी के गेहूं को मिट्टी में दबाकर उससे जो हरी हरी घास निकलती है, उसे गेहूं की ज्वारी कहा जाता है। यह शुगर के मरीजों के लिए एक बेहतरीन तोहफा है। इसे भी आप अपनी डाइट में शामिल कीजिए। 5 से 7 दिन की जो ज्वारी है वो आपके लिए और भी फायदा करेगी, यह रक्त में शर्करा के प्रभाव को कम कर देती है। इसका जूस निकाल कर या फिर ऐसे ही आप इसे खा सकते हैं।

रेसिपी

शलजम का भर्ता

सामग्री

- शलजम: 300 ग्राम
- टमाटर पेस्ट : 200 ग्राम
- 2 हरी मिर्च का पेस्ट
- मटर के दाने
- कटा धनिया : 2-3 टेबलस्पून
- तेल : 2 टेबलस्पून
- चुटकी भर हींग
- जीरा : ½ टीस्पून
- अदरक का पेस्ट :1 टीस्पून
- आधा नींबू
- हल्दी : दो टीस्पून
- धनिया पाउडर: 1 टीस्पून
- लाल मिर्च पाउडर : ½ टीस्पून
- गरम मसाला: दो टीस्पून
- चीनी: 1 टीस्पून
- नमक: स्वाद के अनुसार

विधि

कुकर में आधा तेल डालकर इसमें जीरा, हींग, अदरक का पेस्ट, हल्दी, धनिया पाउडर, कटी शलजम, लाल मिर्च और नमक डालकर भूनें। पानी डालकर 1 सीटी लगाएं। फ्राइंगपैन में बचा तेल डालें। बचे मसाले और मटर डालें। इसमें उबली शलजम डालकर अच्छी तरह भूनें। ऊपर से धनिया डालकर गार्निश करें।

हैदराबादी मसूर की दाल

सामग्री

- मसूर दाल: 1 कप
- बारीक कटा प्याज: 1
- बारीक कटा टमाटर: 1
- बीच से कटी मिर्च: 2
- अदरक-लहसुन पेस्ट: 1/2 चम्मच
- हल्दी पाउडर: 1/4 चम्मच
- लाल मिर्च पाउडर: 1/2 चम्मच
- नमक: स्वाद के अनुसार
- तेल: आवश्यकता के अनुसार
- धनिया पत्ती: सजावट के लिए

विधि

कढ़ाही में तेल गर्म करें और उसमें प्याज डालें। प्याज को नरम होने तक पका लें। अब इसमें टमाटर, हरी मिर्च डालें और टमाटर के नरम होने तक पका लें। टमाटर के नरम होने के बाद इसमें अदरक-लहसुन का पेस्ट डालें और 1 मिनट के लिए पका लें। 1 मिनट के बाद इसमें मसूर दाल, लाल मिर्च पाउडर, हल्दी पाउडर डालें और 2 मिनट के लिए पका लें। इसमें ढाई कप पानी डालें और दाल के नरम होने तक धीमी आंच पर पकने दें। नमक डालकर मिलाएं। मध्यम आंच पर दस से पंद्रह मिनट तक पकाएं। धनिया पत्ती से सजाएं और नान या चावल के साथ गर्मागर्म पेश करें।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): जमीन जायदाद का लाभ भी हो सकता है। आवास, मकान तथा वाहन की सुविधाएं मिलेंगी। कर्ज तथा रोगों से मुक्ति भी संभव है। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सवेरे ही निपटा लें। रुपए पैसों की सुविधा नहीं मिल पाएगी। शुभांक-3-5-7

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। स्वास्थ्य का पाया कमजोर बना रहेगा। यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। बनते हुए कार्यों में बाधा आएगी। कुछ आर्थिक चिंताएं भी कम होंगी। नियोजित धन से लाभ होने लगेगा। घर के सदस्य मदद करेंगे। शुभांक-5-6-9

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा): अपनी गतिविधियों पर पुनर्विचार करें। वैचारिक द्वन्द्व और असंतोष बना रहेगा। सुख आरोग्य प्रभावित होगा। शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा। किसी नजदीकी शुभचिंतक सलाह उपयोगी सिद्ध होगी। शुभांक-2-5-7

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): संतोष रखने से सफलता मिलेगी। नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी। बुद्धि, बल व पराक्रम सफल होगा। व्यापार में वृद्धि व उत्तम लाभ मिलेगा। मित्रों की उपेक्षा करना ठीक नहीं रहेगा। यश-प्रतिष्ठा में वृद्धि व शिक्षा में परेशानी आ सकती है। पुराने मित्र से मिलन होगा। पुरुषार्थ का सहारा लें। शुभांक-5-6-7

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान रहें। व्यापार में वृद्धि होगी। नौकरी में सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा। शत्रुपक्ष पर आप हावी रहेंगे। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। कुछ प्रतिकूल गोचर का क्षोभ दिन-भर रहेगा। यश-प्रतिष्ठा में वृद्धि व शिक्षा में परेशानी आ सकती है। स्वविवेक से कार्य करें। शुभांक-4-6-7

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): कहीं रुका हुआ पैसा वसूलने में मदद मिल जाएगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। किसी लाभदायक कार्य के लिए व्ययकारक स्थितियां पैदा होंगी। आलस्य का त्याग करें। शुभांक-6-8-9

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): प्रसन्नता के साथ सभी जरूरी कार्य बनते नजर आएंगे। मनोरथ सिद्धि का योग है। सभा-गोष्ठियों में सम्मान मिलेगा। प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। कई प्रकार के हर्ष उल्लास के बीच आनन्ददायक दिन रहेगा। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। शुभांक-6-7-8

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। व्यर्थ की दौड़-भाग से यदि बचा जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। आय के अच्छे योग बनेगें। संतान की उन्नति के योग हैं। शुभांक-5-6-8

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): नवीन उद्योगों के अवसर बढ़ेंगे व अभिलाषाएं पूर्ण होंगी। विश्वस्त लोगों के कहे अनुसार चलें। राजकीय कार्यों में सतर्कता बरतें। मान-सम्मान को ठेस लग सकती है। जोश से कम व होश में रहकर कार्य करें। नये आगंतुकों से लाभ होगा। जो चल रहा है उसे सावधानीपूर्वक संभालें। शुभांक-5-6-7

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी): एकाकी वृत्ति त्यागें। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात् दूर हो जाएगी। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे साथ ही आगे के लिए रास्ता भी बन जाएगा। कहीं रुका हुआ पैसा वसूलने में मदद मिल जाएगी। व्यर्थ समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। शुभांक-5-8-9

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होंगी। मनोविनोद बढ़ेंगे। व्ययाधिक्य का अवसर आ सकता है। शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। कामकाज की अधिकता रहेगी। लाभ भी होगा और पुराने मित्रों से समागम। ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा। संयमित भाषा का इस्तेमाल करें। शुभांक-3-7-9

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। लाभ में आशातीत वृद्धि तय है मगर नकारात्मक रुख न अपनाएं। किसी पुराने संकल्प को पूरा कर लेने का दिन है। "आगे-आगे गोरख जागे" वाली कहावत चरितार्थ होगी। निष्ठा से किया गया कार्य पराक्रम व आत्मविश्वास बढ़ाने वाला होगा। इच्छित कार्य सफल होंगें। शुभांक-1-6-9

हंसी के फूव्वारें

भिखारी: बाबूजी, एक पैसा दे दो.
बाबूजी: पैसे में क्या मिलेगा तुम ज्यादा क्यों नहीं मांगते ?
भिखारी: बाबूजी, मैं आदमी की हैसियत देखकर मांगता हूँ.

▯ ▯ ▯

डॉक्टर साहब, मेरे पति के आगे के दो दांत बहुत निकले हैं. वह ठीक हो सकते हैं ?
'क्या आपके पति बचपन में हाथियों के साथ खेलते थे ?'

▯ ▯ ▯

प्रेमी-'प्रिय,मेरा साक्षात्कार का बुलावा आया है. जाऊं या नहीं, तुम्हारी क्या राय है ?'
प्रेमिका-'मेरी तो यह राय है कि जाना है तो जाओ, नहीं जाना हो तो मत जाओ.'

▯ ▯ ▯

पहला दोस्त-'मेरी प्रेमिका की मांग इतनी ज्यादा थी कि मैंने उससे संबंध तोड़ लिया.'
दूसरा दोस्त-'क्या मांग थी उसकी ?'
पहला दोस्त-'शादी की.'

▯ ▯ ▯

औरत-(दूधवाले से)भइया कल तुम्हारा दूध बहुत खट्टा था.
दूधवाला-क्या करूं बहनजी कल मेरी भैंस ने चार-पांच नींबू खा लिये थे.

काकुरो पहेली - 4038

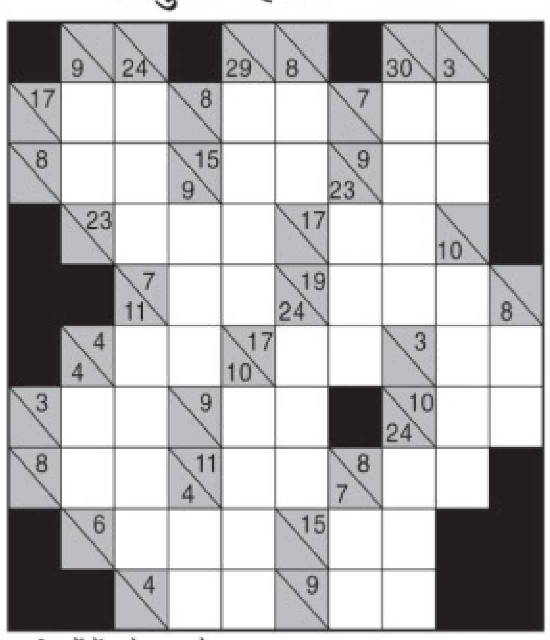

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए.किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणतः

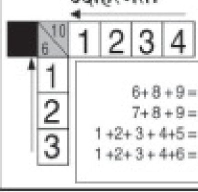

6+8+9=23
7+8+9=24
1+2+3+4+5=15
1+2+3+4+6=16

काकुरो - 4037 का हल

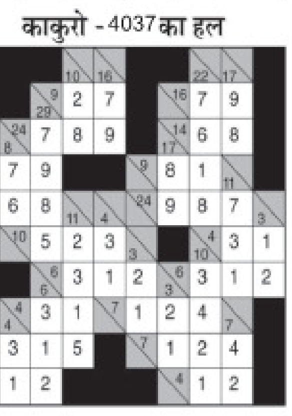

फिल्म वर्ग पहेली - 4038

बायें से दायें:-

१. 'चाँद तारे तोड़ लाऊं' गीत वाली शाहरुख, जूही की फिल्म-२,२
३. सैफ, काजोल की 'नीला दुपट्टा पीला सूट' गीत वाली फिल्म-३
५. 'क्या यही प्यार है' गीत वाली संजयदत्त, टीना मुनीम की फिल्म-२
६. संजयदत्त, मनीषा, रवीना की 'ओ गोरी तू चली' गीत वाली फिल्म-२
७. 'चमन में रहके वीराना' गीत वाली दिलीप, निम्मी की फिल्म-३
९. ऋषि, चंकी, नीलम की 'देखा जो हुस्न आपका' गीत वाली फिल्म-३
११. 'कोई नहीं तेरे जैसा' गीत वाली अक्षय, सैफ अली की फिल्म-३
१३. फिल्म 'मिलाप' की नायिका-२
१४. फिल्म 'गोपी किशन' में किस की दोहरी भूमिका थी ?-३
१६. ऋषि, जेबा, अश्विनीभावे की 'आजा वे माही' गीत वाली फिल्म-२
१८. फिल्म 'धरती' में राजेंद्र कुमार के साथ नायिका कौन थी ?-३
२०. जॉन, बिपाशा की एक फिल्म-२
२१. 'इस टूटे दिल की' गीत वाली अनिल, अक्षय, ऐश्वर्या की फिल्म-२
२३. राजेश, टीना, पद्मिनी की 'जिंदगी प्यार का' गीत वाली फिल्म-३
२५. 'मेघा रे मेघा' गीत वाली अनिल, श्रीदेवी की फिल्म-२
२६. विकास भल्ला, सुमीत सहगल, नीलम की एक फिल्म-२
२७. 'जवानी दीवानी' में नायिका कौन थी-२
२८. फिल्म 'फूल और पत्थर' में धर्मेन्द्र के किरदार का क्या नाम था-२
३१. संजय दत्त, मनीषा की 'हो रब्बा तू ही बचा' गीत वाली फिल्म-४
३२. फिल्म 'स्टम्प्ड' में अली खान के साथ नायिका कौन है-३

ऊपर से नीचे:-

१. दिलीप कुमार, मीना की 'दिल से तुझ को बेदिली है' गीत वाली फिल्म-३
२. १९७१ के भारत-पाक युद्ध की पृष्ठभूमि पर बनी जे.पी. दत्ता की फिल्म-३
३. 'आ पपियाँ झपियाँ पा लें' गीत वाली फिल्म-४
४. 'जीवन से भरी तेरी आँखों' गीत वाली फिल्म-३
८. ऋषि, सनी, मीनाक्षी की 'बिन साजन झूला' गीत वाली फिल्म-३
१०. फिल्म 'खुशी' में फरदीन खान की नायिका कौन है ?-३
१२. 'गुस्सा इतना हसीन है तो प्यार कैसा होगा' गीत वाली फिल्म-३
१४. 'जलते हैं जिसके लिये' गीत वाली फिल्म-३
१५. रेवती की पहली हिंदी फिल्म-२
१६. 'साथिया बिन तेरे' गीत वाली सनी, तब्बू, शिल्पा की फिल्म-३
१७. विश्वजीत, बबीता की 'लाखों हैं यहाँ दिलवाले' गीत वाली फिल्म-३
१९. 'लंबी जुदाई' गीत वाली फिल्म-२
२२. राजेंद्र, धर्मेन्द्र, माला की 'आज गालो मुस्कुरालो' गीत वाली फिल्म-४
२३. 'तेरा मेरा साथ रहे' गीत वाली फिल्म-४
२४. राजेश खन्ना, श्रीदेवी की 'कह दे जमाने से' गीत वाली फिल्म-४
२८. 'दिलजले' में अजय का नाम ?-२
२९. प्रशांत और ऐश्वर्या की 'फूलों से जो खुशबु' गीत वाली फिल्म-२
३०. 'मिलती है झुकती है' गीत वाली आफताब, युक्ता की फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली-4037

सूडोकु -4038

5		9		8	3	2		
	2		4					8
3	8		5	2	6	1		
	7						9	5
9		3	6		8	7		4
2	6						1	
		5	2	7	1		8	6
6					4		7	
		8	9	6		4		2

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -4037 हल

8	2	5	3	6	7	9	1	4
4	6	1	8	9	2	3	7	5
3	7	9	1	5	4	6	8	2
1	3	7	4	2	9	5	6	8
6	5	2	7	1	8	4	9	3
9	8	4	6	3	5	1	2	7
2	4	6	9	8	3	7	5	1
5	1	3	2	7	6	8	4	9
7	9	8	5	4	1	2	3	6

शब्द पहेली -4038

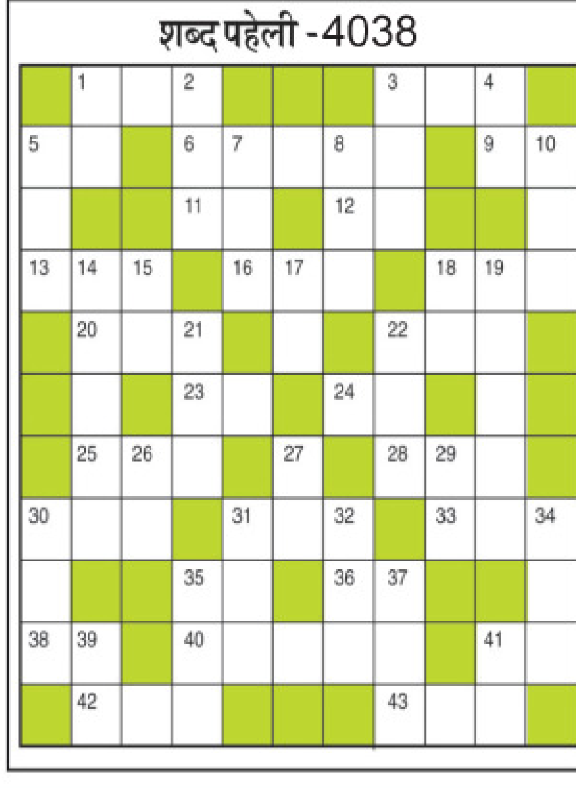

बाएँ से दाएँ

1.ईश्वर,करतार-3
3.मुस्कुराहट-3
5.ईख-2
6.रजनीगंधा -2,1,2
9.समुद्र तट (अंग्रेजी-2)
11.ताकत,दम-2
12.अमिताभ व किमी काटकर की फिल्म-2
13.वेतन,पगार-3
16.मनोनीत,नामकृत-3
18.बंधक,गिरवी वस्तु-3
20.निशा,रात्री-3
22.वचन,प्रतिज्ञा-3
23.श्रीनगर की झील-2
24.मूल्य,कीमत-2
25.असावधान-3
28.धिक्कार,फटकार-3
30.हवा,पवन-3
31.झाझर,कुंभ-3
33.चिंतन-3
35.संस्कृत में मेरा-2
36.मादा का विलोम-2
38.कुबेर,भूत-2
40.परोपकारी,जितेंद्र की एक फिल्म-5
41.फलों का राजा-2
42.फूल चुननेवाली-3
43.घोड़ों की देखभाल करनेवाला-3

ऊपर से नीचे

1.तमिल भाषा में बड़ा भाई-2
2.बेकार-3
3.दीवान,खजांची-3
4.पैगंबर,रसूल-2
5.झूठ,मिथ्या -3
7.तेल में पकाना-3
8.आराम,मदद-3
10.गुलिस्ता-3
14.नरकभोगी-5
15.खुजली-2
17.सखा,दोस्त-2
18.मजा,आनंद-2
19.स्वदेशवासी-5
21.सुई (अंग्रेजी-3)
22.विष्णुप्रिया-3
26.पुनः,वापस-2
27.मर्करी,पारद-2
29.भीगा हुआ-2
30.वक्त,टाईम-3
31.अच्छी बुद्धि-3
32.निम्नता-3
34.मुलायम-3
35.बड़ा,विशाल-3
37.धनवान-3
39.माफी-2
41.उम्मीद-2

शब्द पहेली 4037 का हल

भारत-नेपाल के अधिकारियों ने सीमा को सुरक्षित व अपराधमुक्त बनाने का लिया संकल्प

एजेंसी

लखीमपुर खीरी। पहलगाम में आतंकी हमले के बाद भारत-पाकिस्तान सीमा पर बढ़ते तनाव के बीच पड़ोसी देश नेपाल ने बेहतर रिश्तों और सीमा सुरक्षा को लेकर एक पहल शुरू की है। नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्र के अधिकारियों ने भारतीय क्षेत्र के अधिकारियों के बैठक में सीमा पर चौकसी बरतने, अपराधियों पर लगाम लगाने सहित कई विषयों पर चर्चा की। भारत और नेपाल के बीच आपसी विश्वास और सीमा सुरक्षा को और प्रगाढ़ बनाने के उद्देश्य से पलिया में स्थित 39 बटालियन एसएसबी गदनिया में एक महत्वपूर्ण समन्वय बैठक हुई। इस बैठक में दोनों देशों के अधिकारियों ने सुरक्षित और अपराधमुक्त सीमाएं बनाए रखने का साझा संकल्प लिया। बैठक में भारत की ओर से लखीमपुर खीरी जिले के डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल, एसपी संकल्प शर्मा, वन विभाग तथा एसएसबी के अधिकारी उपस्थित रहे। वहीं नेपाल की ओर से कैलाली और कंचनपुर अंचल के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए। बैठक में डीएम दुर्गा शक्ति नागपाल ने कहा कि भारत और नेपाल के बीच केवल भौगोलिक सीमाएं नहीं हैं, बल्कि ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक रिश्तों की एक गहरी और मजबूत नींव भी है। दोनों देश ऐसे मित्र राष्ट्र हैं, जिनके बीच सीमाएं तो हैं, लेकिन दिलों की दूरियां कभी नहीं रहीं।

अवैध बांग्लादेशियों के खिलाफ सर्च ऑपरेशन: वडोदरा से 300 संदिग्धों को पुलिस ने पकड़ा

वडोदरा। राज्य के अहमदाबाद और सूरत के बाद अब अन्य शहरों में बांग्लादेश के अवैध घुसपैठियों को पकड़ने का सिलसिला भी जारी रहा। वडोदरा शहर के पूर्व क्षेत्र एकतानगर में पुलिस की 10 टीम ने सर्च ऑपरेशन कर 300 संदिग्धों को हिरासत में लिया है। इसमें 200 पुरुषों के वैरिफिकेशन के लिए थाने ले जाया गया है। इस क्षेत्र में देश के विभिन्न राज्यों से आकर लोग बसे हैं। सर्च ऑपरेशन में बापोद सिटी पुलिस समेत डीसीबी, एसीपी, ज्वॉइंट पुलिस आयुक्त स्थल पर मौजूद थे। जानकारी के अनुसार 26 अप्रैल की देर रात अहमदाबाद-हावड़ा एक्सप्रेस ट्रेन जब वडोदरा रेलवे स्टेशन पर पहुंची तो इसकी जांच में 5 बांग्लादेशी नागरिक मिले थे। इसमें पति-पत्नी और दो बच्चों समेत एक अन्य व्यक्ति शामिल है। रेलवे पुलिस ने इनकी जांच की तो इनके बांग्लादेशी होने का सबूत मिला। इसके बाद इन्हें हिरासत में लेकर थाने लाया गया। ज्वॉइंट पुलिस आयुक्त लीना पाटिल ने बताया कि हाल में जोन-4 बापोद पुलिस स्टेशन क्षेत्र में स्थित एकतानगर में 100 महिलाओं और 200 पुरुषों को डिटेन किया गया है। इसमें 200 पुरुषों को वैरिफिकेशन के लिए थाने लाया गया है। वडोदरा शहर के पुलिस आयुक्त नरसिम्हा कोमार ने बताया कि इन सभी लोगों के डाक्यूमेंट की जांच, डॉक्यूमेंट की सत्यता और यह डाक्यूमेंट किस तरह बनाए गए हैं, इन सभी की जानकारी जुटाई जा रही है।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी 30 अप्रैल को करेंगे अमेठी का दौरा

अमेठी। कांग्रेस नेता और अमेठी के पूर्व सांसद राहुल गांधी अपने एकदिवसीय दौरे पर आगामी 30 अप्रैल अमेठी जनपद पहुंचेंगे। वे यहां कई कार्यक्रमों में भाग लेंगे और दोपहर बाद लखनऊ पहुंचेंगे और जहां से वे शाम को दिल्ली के लिए रवाना होंगे।यह जानकारी अमेठी क्षेत्र के सांसद किशोरी लाल शर्मा ने दी है। उन्होंने बताया कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी 30 अप्रैल को दोपहर पौने 1 बजे अमेठी जनपद के मुंशीगंज स्थित इंडो रशियन राइफल प्राइवेट लिमिटेड गन फैक्टरी पहुंचेंगे। यहां वे ऑर्डिनेंस फैक्टरी का करीब 1 घंटे तक भ्रमण करेंगे। इसके उपरांत राहुल गांधी का मुंशीगंज स्थित संजय गांधी अस्पताल के गेस्ट हाउस में 1 घंटे का रिजर्व कार्यक्रम है। ऐसा माना जा रहा है कि इस दौरान वह लंच और विश्राम करेंगे। उन्होंने बताया कि राहुल गांधी दोपहर 2 बजकर 50 मिनट से लेकर 3 बजकर 50 मिनट तक संजय गांधी अस्पताल में रहेंगे। यहां वे ओपन हार्ट सर्जरी ऑपरेशन थिएटर का उद्घाटन करेंगे। इसी के साथ वह इंदिरा गांधी नर्सिंग कॉलेज की नई एंबुलेंस को हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे। उन्होंने बताया कि इसके बाद राहुल गांधी 3 बजकर 50 मिनट पर लखनऊ एयरपोर्ट के लिए सड़क मार्ग से रवाना होंगे, जहां से वे विमान से दिल्ली के लिए रवाना होंगे। उल्लेखनीय है कि राहुल गांधी वर्ष 2004 से लेकर 2019 तक अमेठी के सांसद रह चुके हैं। वर्ष 2019 से लेकर 2024 तक स्मृति ईरानी ने अमेठी लोकसभा क्षेत्र से प्रतिनिधित्व किया था।

मणिपुर में प्रतिबंधित संगठनों से जुड़े 12 उग्रवादी गिरफ्तार

इंफाल। मणिपुर में सुरक्षा बलों और पुलिस ने इंफाल ईस्ट और इंफाल वेस्ट जिलों में अलग-अलग अभियानों में 12 उग्रवादियों को गिरफ्तार किया है। संयुक्त राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा (पाम्बेई धड़ा) के चार कैडर और एक सहयोगी वांगखई थांगपट मापन से पकड़े गए हैं। पुलिस मुख्यालय के बयान के अनुसार गिरफ्तार आरोपितों की पहचान वांगमयुम अजीजुर रहमना (52), शेख वसीम राजा (30), मो. फारुक खान (19), फुशम अजमीर (24) और खुल्लकपम इबोसाना (44) के रूप में हुई है। ये सभी जबरन वसूली और स्थानीय लोगों को डराने-धमकाने में शामिल थे। आरोपितों के पास से जिंदा कारतूस, मोबाइल फोन और एक चार पहिया वाहन बरामद किया गया। इबोसाना, उग्रवादियों और आम नागरिकों के बीच दलाल की भूमिका निभाता था।

समावेशिता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हमारी समृद्ध विरासत है: उपराष्ट्रपति

एजेंसी

कोयंबटूर। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा कि भारत विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता है, एक शांतिप्रिय देश है, जहां समावेशिता और अभिव्यक्ति एवं विचार की स्वतंत्रता हमारी विरासत है। तमिलनाडु के कोयंबटूर में तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय में विविधतापूर्ण भारत के लिए कृषि शिक्षा, नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा विषयक सभा को संबोधित करते हुए उपराष्ट्रपति ने कहा कि यदि हम हजारों वर्षों के इतिहास पर नजर डालें तो पाएंगे कि हमारी सभ्यता में समावेशिता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता बढ़ी है, फली-फूली है और उसका सम्मान किया गया है। उन्होंने कहा कि वर्तमान युग में अभिव्यक्ति और समावेशिता की बहुलता और प्रवणता विश्व में सबसे अधिक है। चारों ओर देखिए, भारत जैसा कोई अन्य देश नहीं है जो समावेशिता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रदर्शन कर सकता है। इस महान देश के नागरिक के रूप में- सबसे बड़े लोकतंत्र, सबसे पुराने लोकतंत्र,

सबसे शक्तिशाली लोकतंत्र - हमें बहुत सावधान, सचेत रहना चाहिए और यह समझना चाहिए कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और समावेशिता हमारी राष्ट्रीय परिसंपत्ति बननी चाहिए। कृषि क्षेत्र के बारे में उपराष्ट्रपति ने इस बात पर जोर दिया कि हमें खाद्य सुरक्षा से आगे बढ़कर किसानों की समृद्धि की ओर बढ़ना होगा। किसान समृद्ध होना चाहिए और यह विकास तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय जैसे संस्थानों से निकलना चाहिए। उन्होंने बताया कि किसानों को कृषि भूमि से बाहर आकर अपने उत्पादों के विपणन में भाग लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसानों को सिर्फ उत्पादक होने के बारे में नहीं भूलना चाहिए। इसका मतलब है कि वे कड़ी मेहनत और अथक परिश्रम से फसल उगाते हैं और उसे सही समय पर बाजार में बेचते हैं, जबकि उन्हें उसका मालिकाना हक नहीं होता। इससे आर्थिक दृष्टि से बहुत लाभ नहीं होता। उन्होंने किसानों को शिक्षित करके उन्हें सशक्त बनाने का आह्वान किया तथा उन्हें यह बताया कि सरकार की सहकारी प्रणाली बहुत मजबूत है। तमिलनाडु के राज्यपाल आरएन रवि, तमिलनाडु सरकार के मानव संसाधन प्रबंधन मंत्री एन कयालविजी सेल्वराज, कृषि उत्पादन आयुक्त और सरकारी सचिव वी दक्षिणामूर्ति, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय अनुसंधान निदेशक डॉ एम रविंद्रन, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार और कार्यवाहक कुलपति डॉ आर तमीज वेंडन और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया।

पहलगाम में आतंकी हमले के विरोध में गंगटोक में कैंडल मार्च निकाला गया

एजेंसी

गंगटोक। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हाल ही में हुए आतंकवादी हमले की सामूहिक निंदा व्यक्त करने के लिए आज देर शाम सिक्किम की राजधानी गंगटोक के एमजी मार्ग पर एक कैंडल मार्च का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग, मुख्यमंत्री की पत्नी कृष्णा राई, सिक्किम विधानसभा के अध्यक्ष एमएन शेरपा, मंत्रीगण, विधायकगण, विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधि, व्यवसायी और आम जनता ने भाग लिया। मुख्यमंत्री तमांग के नेतृत्व में एक शांतिपूर्ण मोमबत्ती मार्च राजधानी में निकाला गया। मार्च में भाग लेने वाले लोगों ने आतंकवादी हमलों के खिलाफ नारे लगाए। इस मार्च ने सिक्किम के लोगों की सामूहिक अंतरात्मा को प्रतिबिंबित किया तथा एक मजबूत और स्पष्ट संदेश दिया कि हिंसा और आतंक का समाज में कोई स्थान नहीं है। मुख्यमंत्री सहित उपस्थित सभी लोगों ने आतंकवादी हमले में जान गंवाने वाले निर्दोष लोगों को श्रद्धांजलि दी तथा शांति, एकता और

सद्भाव के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की। मुख्यमंत्री तमांग ने सभी से शांति और प्रगति के लिए खतरा पैदा करने वाली ताकतों के खिलाफ एकजुट रहने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि हमारे नागरिकों, विशेषकर युवाओं द्वारा दिखाए गए साहस और करुणा ने बेहतर और सुरक्षित भविष्य के प्रति हमारी आशा को मजबूत किया है।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में शक्तिशाली, वैभवशाली भारत का हो रहा निर्माण : शिवराज सिंह चौहान

एजेंसी

रायसेन। केंद्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में शक्तिशाली, वैभवशाली भारत का निर्माण किया जा रहा है। साथ मिलकर सभी को गरीबी से बाहर निकालना है, गरीबी मुक्त भारत बनाना हैं। इसके लिए योजनाओं के क्रियान्वयन से आर्थिक सुदृढ़ता लाई जा रही है। उन्होंने कहा कि विकसित ग्राम बनाए जाएंगे, जिसमें सड़कें, हर घर नल से जल, पीएम सूर्य घर योजना की मदद से बिजली की उपलब्धता, आजीविका से जुड़े परिवारों को रोजगार से जोड़ा जाएगा। फूलों की खेती, मधुमक्खी पालन और जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाएगा। केन्द्रीय कृषि मंत्री चौहान रायसेन जिले के सुल्तानपुर में आयोजित भूमिपूजन/लोकार्पण कार्यक्रम और हितग्राहियों को हितलाभ वितरण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कार्यक्रम का कन्यापूजन और दीप प्रज्जवलन कर शुभारंभ किया । कार्यक्रम में केन्द्रीय मंत्री ने भोजपुर क्षेत्र में सात करोड़ 40 लाख रुपये से अधिक राशि के विभिन्न विकास कार्यों का भूमिपूजन/लोकार्पण किया। साथ ही प्रधानमंत्री आवास योजना सहित विभिन्न योजनाओं के स्वीकृति पत्र हितग्राहियों को प्रदान किए। केन्द्रीय मंत्री ने अपने उद्बोधन के प्रारंभ में राजस्व महाअभियान में प्रदेश में सुल्तानपुर तहसील के प्रथम आने पर जिला प्रशासन को बधाई देते हुए कहा कि नागरिकों तक शासन की सेवाएं और सुविधाएं सुगमता से पहुंचाने का काम किया जा रहा है।

पहलगाम जैसी घटना से निपटान के लिए युवाओं का सजग व साहसी होना अत्यंत महत्वपूण: जनरल वीके सिंह

एजेंसी

भोपाल। मिजोरम के राज्यपाल एवं पूर्व थलसेनाध्यक्ष जनरल विजय कुमार सिंह ने कहा कि वर्तमान समय की आवश्यकता को देखते हुए युवाओं का सजग होना अत्यंत आवश्यक है। सजगता अनुशासन से आती है। पूर्व में अखबार में छपी खबर को ही सच मान लिया जाता था किन्तु वर्तमान में वाट्सअप पर संचालित चीजों को ही सच मान लिया जाता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि हमने पहलगाम की हृदय विदायक घटना के तुरंत बाद सिंधु जल संधि को रद्द कर दिया। किंतु सोशल मीडिया पर कई जगह नदियों के जल के प्रवाहित होने के फेक वीडियो प्रसारित किए जा रहे हैं। आर्टिफिशल इंटेलिजेंस के युग में किसी से कुछ भी करवाया जा सकता है। इससे बचाव एवं सजगता में युवाओं की भागीदारी अत्यंत

महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि ऐसी घटनाओं से निपटने के लिए सजगता बहुत जरूरी है। जनरल वीके सिंह उज्जैन के विक्रम विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सुरक्षा में युवा संगठनों की भूमिका विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में एनसीसी, एनएसएस के कैडेट्स व विद्यार्थियों और गणमान्य नागरिकों को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा केवल सीमाओं की सुरक्षा नहीं अपितु आंतरिक सुरक्षा भी है। उन्होंने हमारी विदेश नीति का उदाहरण देते हुए कहा कि 2014 से पूर्व मंत्री स्तर का डेलिगेशन विदेश नहीं जाता था। किंतु डेढ़ साल में ही 192 देशों मे भारत का डेलिगेशन गया जिसका परिणाम यह हुआ कि जब इंटरनेशनल कोर्ट के निर्वाचन के समय हमने तय किया की हम भी हमारा प्रत्याशी चुनाव में उतारेंगे। तब ब्रिटेन जो कि स्थाई सदस्य था के प्रत्याशी को वोट न देकर हमारे जस्टिस भंडारी को जिताया। यह हमारी विदेश नीति का प्रत्यक्ष उदाहरण है। उन्होंने कहा कि कोविड का समय हो या रूस-युक्रेन युद्ध के समय हो हम हमारे छात्रों को वापस अपने वतन ला पाए। यह हमारी विदेश नीति ही थी जो युद्ध को रोककर भी हमारे नागरिको को निकालकर लाने में सफल रहे। हमारा कोई दुश्मन नहीं चाहे रूस, युक्रेन हो या फिलिस्तीन, इजराइल हो सभी से हमारे अच्छे संबंध है। उन्होंने कहा कि सनातन धर्म ने कभी किसी के साथ भेदभाव नहीं किया।

मप्र के मंदसौर जिले में बाइक को टक्कर मारकर कुएं में गिरी वैन, 12 लोगों की मौत

एजेंसी

मंदसौर (भोपाल)। मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले में नारायणगढ़ थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम काचरिया चौपाटी के पास रविवार दोपहर बाइक को टक्कर मारने के बाद एक तेज रफ्तार ईको वैन अनियंत्रित होकर बिना मुंडेर के कुएं में गिर गई। इस हादसे में 12 लोगों की मौत हो गई, जबकि दो बच्चों समेत चार लोग घायल हो गए। घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया है। मृतकों में वैन में सवार 10 लोगों के अलावा कुएं में गिरे लोगों को बचाने उतरा युवक और बाइक चालक भी शामिल है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने हादसे पर दुख व्यक्त करते हुए मृतकों के परिजनों को आर्थिक सहायता देने के निर्देश दिए हैं। जानकारी के अनुसार, ईको वैन में रतलाम जिले के जावरा क्षेत्र स्थित ग्राम खोजनखेड़ा से 14 लोग सवार थे। ये लोग उज्जैन नीमच जिले के

मनासा क्षेत्र के आंतरी माता मंदिर दर्शन के लिए जा रहे थे। दोपहर करीब एक बजे जिले के नारायणगढ़ थाना क्षेत्र में ग्राम काचरिया चौपाटी के पास बूढ़ा-टकरावद फंटे पर तेज रफ्तार वैन की एक बाइक से टक्कर हो गई। टक्कर लगते ही वैन बेकाबू हो गई और कुएं में जा गिरी। इस हादसे में वैन में सवार 14 में से 10 लोगों की जान चली गई। इसके अलावा एक बाइक सवार और एक शख्स जो बचाव कार्य के लिए कुएं में उतरा था, उसकी भी मौत हो गई। हादसे की सूचना मिलते ही बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर पहुंच गए। उन्होंने अपने स्तर पर रेस्क्यू शुरू किया। थोड़ी ही देर में पुलिस और प्रशासन की टीम भी पहुंची। एसडीईआरएफ की टीम को भी बुलाया गया। टीम रस्सियों के सहारे कुएं में उतरी और रेस्क्यू ऑपरेशन किया। मौके पर क्रेन भी बुलाई गई। क्रेन की मदद से वैन को कुएं से बाहर निकाला गया। जिसके बाद मोटर लगाकर कुएं का पानी निकाला। टीम ने चार लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला, वहीं एक-एक कर 11 शव भी बाहर निकाले गए। घंटों की मशक्कत के बाद कार को निकाला जा सका। मृतकों में कार सवारों को बचाने के लिए कुएं में उतरा ग्रामीण मनोहर सिंह भी शामिल है। मौके पर उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा भी पहुंच गए थे। वे पूरे समय मौके पर ही रहे।

चारधाम एवं हेमकुंड साहिब की यात्रा पर आने वाले 77 पाकिस्तानी यात्रियों का पंजीकरण रद्द

एजेंसी

देहरादून। पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज ने कहा है कि चारधाम एवं हेमकुंड साहिब की यात्रा के लिए 77 पाकिस्तानी यात्रियों ने पंजीकरण करवाया था, उन सभी का पंजीकरण तत्काल प्रभाव से रद्द कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि चारधाम यात्रा की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। अभी तक 22 लाख से अधिक श्रद्धालु चारधाम यात्रा के लिए ऑनलाइन पंजीकरण करवा चुके हैं। इनमें 185 देशों के 25 हजार से अधिक विदेशी श्रद्धालु भी शामिल हैं। पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज ने बताया कि चारधाम यात्रा मार्गों पर यातायात प्रबंधन सुनिश्चित करने के लिए जनपद उत्तरकाशी पुलिस को 10 नई मोटर साइकिलें दी गयी हैं। गंगनानी से डबरानी, डबरानी से सुक्की, झाला से हर्षिल, धराली से भैरोंघाटी, सिलक्यारा से राड़ी टॉप, राड़ी टॉप से औरछा, बड़कोट से दोबाटा, पालीगाड़ से स्यानाचटटी, स्याना से रानाचट्टी, राना चट्टी से हनुमान चट्टी व हनुमान चट्टी से जानकी चट्टी-खरसाली तक संवेदनशील संकरे मार्गों पर निरंतर गश्त करेंगी। यात्रियों की सुविधा और हैली टिकटों की कालाबाजारी रोकने एवं यात्रा रोड पर उल्टे-सीधे पार्किंग शुल्क की वसूली को देखते हुए अधिकारियों को सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं। महाराज ने कहा कि चारधाम यात्रा पर आने वाले श्रद्धालुओं के लिए ऑनलाइन, ऑफलाइन पंजीकरण, मोबाइल ऐप से पंजीकरण के साथ-साथ इस वर्ष आधार नंबर से भी पंजीकरण की सुविधा प्रदान की गई है। ऑफलाइन रजिस्ट्रेशन सोमवार यानी 28 अप्रैल से 04 जगहों पर होंगे। जिनमें हरिद्वार, ऋषिकेश, विकासनगर तथा हरबर्टपुर शामिल हैं।

भारत से 537 नागरिक पाकिस्तान लौटे, 850 भारतीय आए वापस

एजेंसी

चंडीगढ़। भारत में वीजा अवधि समाप्त होने के बावजूद रह रहे पाकिस्तानी नागरिकों की वापसी का सिलसिला जारी है। रविवार शाम तक 537 पाकिस्तानी नागरिक अटारी-बाघा बार्डर के रास्ते पाकिस्तान वापस गए हैं। वहीं आज तक 850 भारतीय पाकिस्तान से वापस आ चुके हैं। केंद्र सरकार ने पाकिस्तानी नागरिकों की वापसी के लिए दो दिन का समय और बढ़ा दिया है। पिछले चार दिन से अटारी-बाघा बार्डर पर लोगों का जमघट लगा है। अपने मुल्क लौटने वाले हरेक के मन में पीड़ा-टीस और आक्रोश है। पीड़ा-टीस इसलिए कि कुछ लोगों के कारण दोनों मुल्कों के रिश्ते खराब हुए और उसका खामियाजा आम लोगों को भुगतना पड़ रहा है। दिल्ली की रहने वाली और पाक में ब्याही

राबिका वतन वापसी के दौरान काफी आक्रोशित दिखाई दी। वह बीते पांच सालों से मायके आने के लिए वीजा अप्लाई करती रहीं लेकिन नहीं दिया गया। इस बीच उनकी मां, दो भाई और भतीजे की मौत हो गई, लेकिन उस दौरान भी उनको नहीं आने दिया गया। उन्होंने बताया कि इस बार उनको 45 दिन का वीजा मिला और मायके आई लेकिन दो दिन में ही वापसी करनी पड़ रही है। वह दोनों ही सरकारों को कोसती हुई वापस चली गईं। उधर, पाकिस्तान के सिंध प्रांत से आए हिंदुओं का एक दल रविवार को भारत लौट आया। सिंध प्रांत के रहने वाले इस दल में 45 व्यस्क व 15 बच्चे थे। दल में शामिल कांति लाल, किशन लाल और चूनी ने बताया कि वह लोग दो महीने पहले घूमने आए थे। गुरदासपुर, अमृतसर, फिरोजपुर और पंजाब के अन्य सीमावर्ती जिलों से भी कई पाकिस्तानी नागरिक आज सीमा की ओर रवाना हुए हैं। अधिकारियों ने हर स्थान पर दस्तावेजों की जांच की ताकि कोई भी बिना अनुमति भारत में न रह सके। अटारी बार्डर पर तैनात पंजाब पुलिस के प्रोटोकॉल ऑफिसर अरुण कुमार के अनुसार रविवार, को 237 के करीब पाकिस्तानी नागरिक अटारी- बाघा बार्डर के रास्ते पाकिस्तान वापस हुए हैं।

कूनो में फिर बढ़ा चीतों का कुनबा, मादा चीता नीरवा ने दिया पांच शावकों को जन्म

एजेंसी

भोपाल। केन्द्र सरकार के महत्वाकांक्षी चीता प्रोजेक्ट के अंतर्गत नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका से भारत लाकर मध्य प्रदेश के श्योपुर जिले में स्थित कूनो राष्ट्रीय उद्यान में बसाए गए चीतों का कुनबा लगातार बढ़ता जा रहा है। कूनों से एक बार फिर खुशखबरी आई है। यहां पांच वर्षीय मादा चीता नीरवा ने पांच स्वस्थ शावकों को जन्म दिया है। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने रविवार की रात सोशल मीडिया के माध्यम से यह जानकारी साझा की है। इसके साथ ही प्रदेश में चीतों की संख्या बढ़कर 31 हो गई। इनमें से दो चीते हाल ही में मंदसौर जिले के गांधी सागर अभ्यारण्य में छोड़े गए हैं, जबकि इन पांच नए शावकों को मिलाकर कूनों में फिलहाल 29 चीते

हो गए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रविवार की रात सोशल मीडिया एक्स पर मादा चीता नीरवा के शावकों का एक वीडियो शेयर किया है, साथ ही उन्होंने लिखा कि कूनो में नए मेहमानों का स्वागत है... अत्यंत प्रसन्नता है कि कूनो राष्ट्रीय उद्यान में चीतों का कुनबा निरंतर बढ़ रहा है। हाल ही में पांच वर्षीय नीरवा ने पांच शावकों को जन्म दिया है। इन नन्हे शावकों का आगमन चीता प्रोजेक्ट की सफलता और भारत की समृद्ध जैव-विविधता का प्रतीक है। उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में वन्यजीव संरक्षण के लिए बनाया गया अनुकूल वातावरण आज समृद्ध हो रहा है। कूनो नेशनल पार्क की पूरी टीम, वन्यजीव विशेषज्ञों और संरक्षण में जुटे हर कर्मठ साथी को इस ऐतिहासिक उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई। केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने भी एक्स पर इस खबर को साझा किया। कूनो राष्ट्रीय उद्यान में मादा चीता नीरवा दूसरी बार मां बनी है। इससे पहले 25 नवंबर 2024 को नीरवा ने पहली बार चार शावकों को जन्म दिया था। जिसमें से दो शावकों की दो दिन बाद यानी 27 नवंबर 2024 को मौत हो गई थी।

केंद्र सरकार की स्वास्थ्य नीति में शीघ्र निदान, उपचार और रोकथाम पर दिया गया है जोर: जेपी नड्डा

एजेंसी

मुंबई। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जे.पी. नड्डा ने कहा कि देश में स्वास्थ्य उपचार बुनियादी ढांचे के निर्माण पर बड़े पैमाने पर ध्यान दिया जा रहा है, विशेष रूप से इस वर्ष कैंसर के उपचार पर। उन्होंने बताया कि शीघ्र निदान और उपचार के कारण 90 फीसदी कैंसर मरीजों को 30 दिनों के भीतर उपचार शुरू हो गया है, जिसे वैश्विक स्तर पर सराहा गया है। संभाजीनगर जिले के सरकारी कैंसर अस्पताल में कैंसर के इलाज के लिए ट्रू बीम यूनिट नामक अत्याधुनिक रेडिएशन थेरेपी प्रणाली का उद्घाटन किया गया। इसी कार्यक्रम को केंद्रीय मंत्री जे.पी. नड्डा संबोधित कर रहे थे। उन्होंने खुशी व्यक्त की कि 2019 में जिस स्थान पर उन्होंने भूमि पूजन किया था, आज वहां एक भव्य और आधुनिक अस्पताल खड़ा हो गया है। केंद्र सरकार की स्वास्थ्य नीति में शीघ्र निदान, उपचार और रोकथाम पर जोर दिया गया है। इस दिशा में 200 डे केयर सेंटर इस वर्ष स्थापित किए जाएंगे। इसके अतिरिक्त, नर्सिंग शिक्षा के लिए नई नीति बनाई गई है, जिसमें देशभर में 100 नए नर्सिंग कॉलेज स्थापित किए जाएंगे। नड्डा ने बताया कि ट्रू बीम प्रणाली के माध्यम से उपचार को अधिक प्रभावी और सटीक बनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि कैंसर न केवल मरीज को प्रभावित करता है, बल्कि उसके पूरे परिवार पर इसका असर पड़ता है। इस प्रणाली से एक मजबूत सहारा मिलेगा।

पहलगाम, बांग्लादेश और मुर्शिदाबाद की घटनाएं मुस्लिम शरीयत के खिलाफ: डॉ इंद्रेश कुमार

एजेंसी

गाजियाबाद। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक डॉ. इंद्रेश कुमार ने कहा कि आतंकवाद मानवता का शत्रु है और हमें एकजुट होकर इसका सामना करना चाहिए। पहलगाम, बांग्लादेश और मुर्शिदाबाद में जो घटनाएं हुई हैं वें इस्लाम की शरीयत में नहीं आते। यह कलंकित और अमानवीय कुकृत्य है। रसूल के पैगाम का उल्लंघन है।राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक डॉ. इंद्रेश कुमार वसुंधरा स्थित मेवाड़ ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के ऑडिटोरियम में आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। भारतीय सद्भावना मंच की ओर से अखिल भारतीय अभ्यास वर्ग में सामाजिक समरसता और राष्ट्रहित पर सार्थक संवाद आयोजित किया गया था। डॉ इंद्रेश ने पहलगाम हमले की निंदा की। उन्होंने कहा कि पहलगाम, बांग्लादेश और मुर्शिदाबाद में जो घटनाएं हुई हैं वें इस्लाम की शरीयत में नहीं आती हैं। यह कलंकित और अमानवीय कुकृत्य है। यह घटनाएं रसूल के पैगाम का उल्लंघन करने वाली हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने पिछले आठ सालों में तीन बड़े काम किये। सरकार ने कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाई, वक़्फ़ कानून में संशोधन हुआ और तीन तलाक खत्म किया। अब ये तीनों मानवतावादी कानून बनाये गए हैं, लेकिन विपक्षी झूठ बोलकर अवाम को भड़का रहे हैं। उन्होंने कहा कि वज़न वाली चीजें साथ नहीं जातीं। केवल सत्कर्म ही हमारे साथ जाता है। उन्होंने कहा कि सत्कर्म में संलग्न इंसानों का जहान होता है, वह जज बना सकता है, जज पूजनीय नहीं बना सकता। इसलिए ज़रूरत की चीजें कमाएं, लेकिन महत्वकांक्षी न बनें। डॉ. इंद्रेश ने कहा कि 5 मिनट मुस्कुराओ तो फ़ोटो अच्छी आती है लेकिन उम्रभर मुस्कुराओगे तो ज़िन्दगी खूबसूरत हो जाएगी। उन्होंने वक़्फ़ संशोधन बिल, प्रकृति प्रेम, पर्यावरण, गौरक्षा पर भी अपने विचार व्यक्त किये। इस कार्यक्रम में मेवाड़ ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के चेयरमैन डॉ. अशोक कुमार गदिया ने कहा कि भारत की 140 करोड़ की आबादी में 70 करोड़ युवा हैं। विश्व में सबसे बड़ी युवा आबादी वाला देश भारत है। अगले 25 साल तक हम आगे ही रहेंगे। मगर इतनी बड़ी युवा आबादी को संभालना भी एक बड़ी चुनौती है। युवाओं को देश की प्रगति से जोड़ना होगा, नहीं तो हम विनाश के कगार पर होंगे। इन्हें संगठित, शिक्षित, संस्कारित करना होगा। आज के ज़माने की शिक्षा देनी होगी। उन्होंने कहा कि 0.8 प्रतिशत से कम भारतीय नौजवान विदेश चले गए और उन्होंने वहां अपने बलबूते पर अपना उच्च स्थान बनाया। अगर हम एक फीसदी युवा भी विश्व में भेज देंगे तो भारतीय नौजवान छा जाएंगे।

कलपेश्वर : धार्मिक यात्रा के साथ पर्यटक भी

पंच केदार का सबसे आखिरी मंदिर है कलपेश्वर मंदिर। यही एक ऐसा पवित्र मंदिर है, जिसके पट पूरे साल खुले रहते हैं। यहां के मंदिर में मुख्य भगवान के रूप में विराजमान शिव की पूजा-अर्चना की जाती है। यहां पहुंचने के लिए घने जंगलों और मैदान से गुजरना पड़ता है। यहां बेहद ही पुराना कलपेश्वर वृक्ष है। कहा जाता है कि इस वृक्ष से जो भी मुराद मांगो वह पूरी होती है। समुद्र तल से 2,134 मीटर की ऊंचाई पर कलपेश्वर चमोली के अरगम जिले में है। हेलांग से 1 1 किलोमीटर दूर इस जगह पर यहां से ट्रैकिंग कर पहुंचा जा सकता है। दिल्ली से 475 किलोमीटर दूर और दो किलोमीटर की ट्रैकिंग कर यहां पहुंचा जा सकता है। पांडवों को क्षमादान दने से बचने के लिए जब भगवान शिव बैल का रूप धर भूमिगत हो गए थे तो उनके शरीर के कई अंग जमीन के ऊपर ही रह गए थे। कलपेश्वर में भी उनके एक भाग की पूजा होती है। कलपेश्वर में और भी कई जगह घूमा जा सकता है। इसके आसपास कई ऐसी जगह हैं, जो बेहतरीन पर्यटक स्थल है। रुद्रप्रयाग मंदिर- भगवान शिव का पंचकेदार में एक मंदिर यह भी है। यहां भगवान शिव को उनके मोहक चेहरे के रूप में पूजा जाता है। 2286 मीटर की ऊंचाई पर स्थित रुद्रनाथ मंदिर में सग्गार से 21 किलोमीटर की ट्रैकिंग कर यहाँ पहुंचा जा सकता है। वैसे यह गांव कलपेश्वर से बस दस किलोमीटर की दूरी पर है। जोशीमठ- यह बहुत ही छोटा तीर्थस्थल है मगर चमोली जिले का सबसे महत्वपूर्ण स्थल है।

‘यहां पहुंचने के लिए घने जंगलों और मैदान से गुजरना पड़ता है। यहां बेहद ही पुराना कलपेश्वर वृक्ष है। कहा जाता है कि इस वृक्ष से जो भी मुराद मांगो वह पूरी होती है। समुद्र तल से 2,134 मीटर की ऊंचाई पर कलपेश्वर चमोली के अरगम जिले में है। हेलांग से 11 किलोमीटर दूर इस जगह पर यहां से ट्रैकिंग कर पहुंचा जा सकता है। दिल्ली से 475 किलोमीटर दूर और दो किलोमीटर की ट्रैकिंग कर यहां पहुंचा जा सकता है। ’

यहां पर आदि शंकराचार्य की बनाई चार मुख्य संस्थाएं हैं। साथ ही यह भगवान बद्रीनाथ की प्रतिमाएं भी देखी जा सकती हैं। ठंड के दिनों में तो ये संस्थाएं भगवान का घर बन जाती हैं। चोपता- चोपता को मिनी स्विट्जरलैंड भी कहा जाता है। कलपेश्वर से 23 किलोमीटर दूर यह जगह किसी स्वर्ग से कम नहीं। साल भर यहां पर्यटकों का तांता लगा रहता है। साहसिक खेलों के शौकीनों के लिए यह पसंदीदा जगह है। सर्दियों के दौरान यहां की प्राकृतिक सुंदरता देखने बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं।

नजदीकी हवाई अड्डा जॉली ग्रांट एयरपोर्ट है जो कलपेश्वर से 267 किलोमीटर की दूरी पर है जबकि नजदीकी रेलवे स्टेशन ऋषिकेश जोशीमठ से 251 किलोमीटर की दूरी पर है। यहां आने के लिए सड़क यातायात का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। कलपेश्वर पूरे साल में कभी भी जाया जा सकता है।

पर्यटकों के लिए खुले चौरासी कुटी के द्वार

तीर्थनगरी की ख्याति को देश-विदेश में पहुंचाने वाली महर्षि महेश योगी की तपस्थली शंकराचार्य नगर (84 कुटी) के द्वार अब पर्यटकों के लिए खुल गए हैं। भावतीत ध्यान योग के लिए विख्यात व मशहूर पॉप म्यूजिकल ग्रुप बीटल्स की यादों से जुड़ी इस धरोहर को अब पर्यटक करीब से महसूस कर यहां नेचर ट्रेल का आनंद ले सकेंगे। मंगलवार को प्रदेश के वन मंत्री दिनेश अग्रवाल परमार्थ निकेतन के परमाध्यक्ष स्वामी चिदानंद सरस्वती मुनि महाराज ने चौरासी कुटी आश्रम में नेचर ट्रेल का विधिवत लोकार्पण किया ऋषिकेश शहर से लगभग सात किलोमीटर दूर चौरासी कुटी में गुंबद व गुफानुमा चौरासी कुटिया बनी हैं। जो

वास्तुकला का बेजोड़ नमूना है। अस्सी के दशक में राजाजी पार्क के अस्तित्व में आने से पहले तक चौरासी कुटी पर्यटकों से गुलजार रहती थी, लेकिन उसके बाद आश्रम ही बंद कर दिया गया था। साथ ही पर्यटकों के यहां जाने पर पाबंदी लगा दी गई थी। अब इसे पर्यटकों के लिए खोल दिया गया है। देश व विदेश के पर्यटक निर्धारित शुल्क अदा कर इस धरोहर को करीब से देख सकेंगे। लोकार्पण के अवसर पर वन मंत्री दिनेश अग्रवाल ने कहा कि प्रकृति तथा वन संपदा प्रदेश की रीढ़ है। हमें इसे संरक्षित रखते हुए पर्यटन को बढ़वा देना है। उन्होंने कहा कि चौरासी कुटी का पर्यटकों के लिए खोला जाना एक बड़ा कदम है और हम इस धरोहर को और संरक्षित कर यहां से योग व अध्यात्म का संदेश देश-विदेश तक पहुंचाने में सफल होंगे। देश विदेश के पर्यटकों व योग जिज्ञासुओं के लिए यह स्थल एक नई पहचान बनेगा। परमार्थ निकेतन के परमाध्यक्ष स्वामी चिदानंद सरस्वती मुनि महाराज ने कहा कि महर्षि महेश योगी ने ही

देश-विदेश में तीर्थनगरी की ख्याति को पहुंचाने का काम किया है। उन्होंने इस स्थान को हेरिटेज के रूप में संरक्षित कर इसे और खूबसूरत रूप देने की सलाह दी। इस अवसर पर विधायक विजय बड़थ्वाल, मुख्य वन। मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक डीवीएस खाती, राजाजी टाइगर रिजर्व की निदेशक नीना ग्रेवाल, भागीरथी वृत के वन संरक्षण एसपी सुबुद्धि भी इस अवसर पर मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन वन्य जीव प्रतिपालक

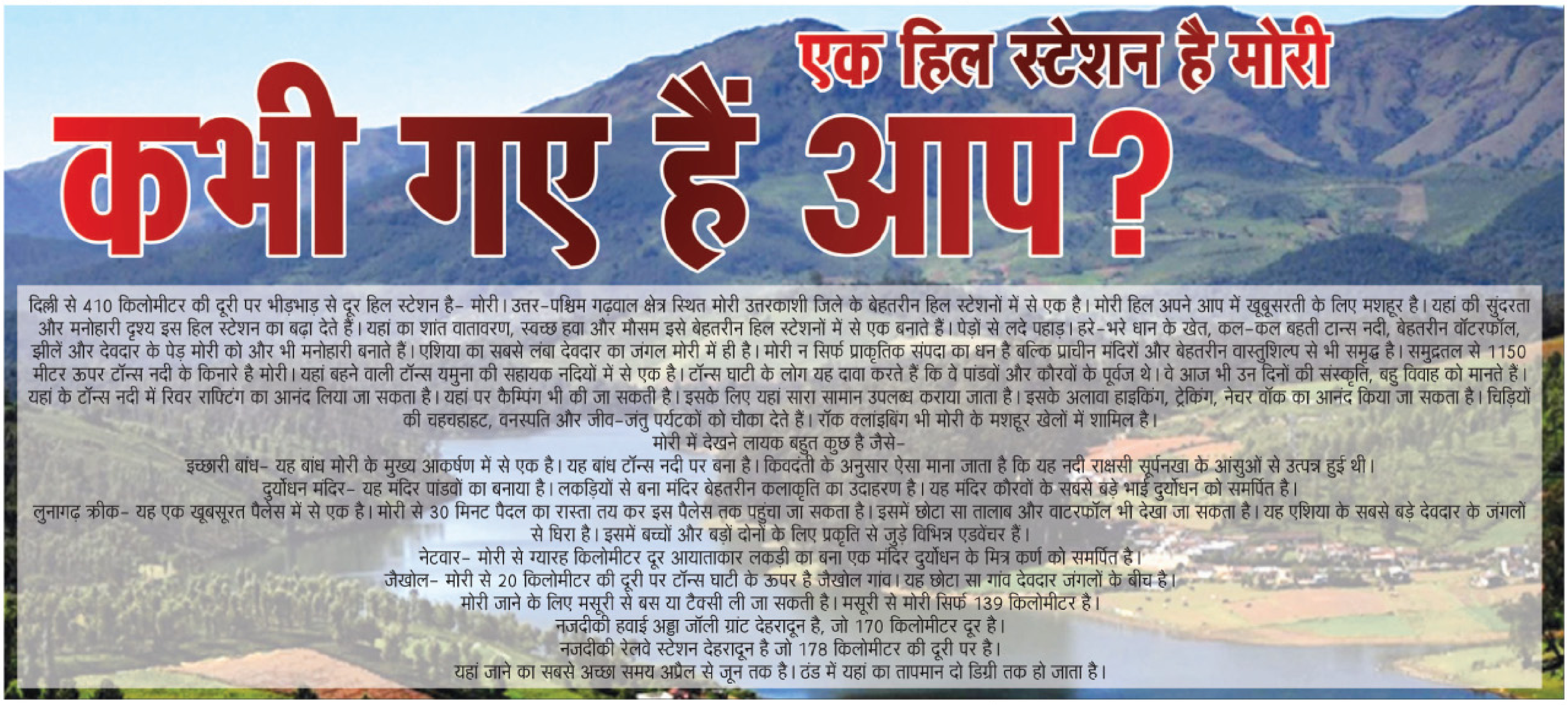

एक हिल स्टेशन है मोरी

कभी गए हैं आप?

दिल्ली से 410 किलोमीटर की दूरी पर भीड़भाड़ से दूर हिल स्टेशन है- मोरी। उत्तर-पश्चिम गढ़वाल क्षेत्र स्थित मोरी उत्तरकाशी जिले के बेहतरीन हिल स्टेशनों में से एक है। मोरी हिल अपने आप में खूबसूरती के लिए मशहूर है। यहां की सुंदरता और मनोहारी दृश्य इस हिल स्टेशन का बढ़ा देते हैं। यहां का शांत वातावरण, स्वच्छ हवा और मौसम इसे बेहतरीन हिल स्टेशनों में से एक बनाते हैं। पेड़ों से लदे पहाड़। हरे-भरे धान के खेत, कल-कल बहती टान्स नदी, बेहतरीन वॉटरफॉल, झीलें और देवदार के पेड़ मोरी को और भी मनोहारी बनाते हैं। एशिया का सबसे लंबा देवदार का जंगल मोरी में ही है। मोरी न सिर्फ प्राकृतिक संपदा का धन है बल्कि प्राचीन मंदिरों और बेहतरीन वास्तुशिल्प से भी समृद्ध है। समुद्रतल से 1150 मीटर ऊपर टॉन्स नदी के किनारे है मोरी। यहां बहने वाली टॉन्स यमुना की सहायक नदियों में से एक है। टॉन्स घाटी के लोग यह दावा करते हैं कि वे पांडवों और कौरवों के पूर्वज थे। वे आज भी उन दिनों की संस्कृति, बहु विवाह को मानते हैं। यहां के टॉन्स नदी में रिवर राफ्टिंग का आनंद लिया जा सकता है। यहां पर कैम्पिंग भी की जा सकती है। इसके लिए यहां सारा सामान उपलब्ध कराया जाता है। इसके अलावा हाइकिंग, ट्रेकिंग, नेचर वॉक का आनंद किया जा सकता है। चिड़ियों की चहचहाहट, वनस्पति और जीव-जंतु पर्यटकों को चौका देते हैं। रॉक क्लांइबिंग भी मोरी के मशहूर खेलों में शामिल है।

मोरी में देखने लायक बहुत कुछ है जैसे-

इच्छारी बांध- यह बांध मोरी के मुख्य आकर्षण में से एक है। यह बांध टॉन्स नदी पर बना है। किवदंती के अनुसार ऐसा माना जाता है कि यह नदी राक्षसी सूर्पनखा के आंसुओं से उत्पन्न हुई थी।

दुर्योधन मंदिर- यह मंदिर पांडवों का बनाया है। लकड़ियों से बना मंदिर बेहतरीन कलाकृति का उदाहरण है। यह मंदिर कौरवों के सबसे बड़े भाई दुर्योधन को समर्पित है।

लुनागढ़ क्रीक- यह एक खूबसूरत पैलेस में से एक है। मोरी से 30 मिनट पैदल का रास्ता तय कर इस पैलेस तक पहुंचा जा सकता है। इसमें छोटा सा तालाब और वाटरफॉल भी देखा जा सकता है। यह एशिया के सबसे बड़े देवदार के जंगलों से घिरा है। इसमें बच्चों और बड़ों दोनों के लिए प्रकृति से जुड़े विभिन्न एडवेंचर हैं।

नेटवार- मोरी से ग्यारह किलोमीटर दूर आयाताकार लकड़ी का बना एक मंदिर दुर्योधन के मित्र कर्ण को समर्पित है।

जैखोल- मोरी से 20 किलोमीटर की दूरी पर टॉन्स घाटी के ऊपर है जैखोल गांव। यह छोटा सा गांव देवदार जंगलों के बीच है।

मोरी जाने के लिए मसूरी से बस या टैक्सी ली जा सकती है। मसूरी से मोरी सिर्फ 139 किलोमीटर है।

नजदीकी हवाई अड्डा जॉली ग्रांट देहरादून है, जो 170 किलोमीटर दूर है।

नजदीकी रेलवे स्टेशन देहरादून है जो 178 किलोमीटर की दूरी पर है।

यहां जाने का सबसे अच्छा समय अप्रैल से जून तक है। ठंड में यहां का तापमान दो डिग्री तक हो जाता है।

रंगीलो राजस्थान का दिल जोधपुर

शानदार महलों, दुर्ग और मंदिरों के लिए विख्यात रंगीलो राजस्थान के दूसरे बड़े शहर जोधपुर की बात ही निराली है। पूरे शहर में बिखरे वैभवशाली महल, जो न सिर्फ यहां के ऐतिहासिक गौरव को जीवंत करते हैं, बल्कि यहां की हस्तकलाएं, लोक-नृत्य, पहनावे और संगीत शहर की समां को रंगीनियत से भर देते हैं...

जोधपुर के आसपास

जोधपुर से करीब 25 किमी. की दूरी पर गुडा बिश्नोई गांव वाइल्डलाइफ और प्रकृति की सुंदर छटा निहारने के लिए बेहतरीन स्थान है। ओसियन जोधपुर से लगभग 65 किमी.की दूरी पर स्थित एक प्राचीन शहर है। यह जैन शैली के मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। यहां ऊंट की सवारी कर सकते हैं। इसके अलावा, मछिया सफारी पार्क, कायलाना लेक भी दर्शनीय स्थल हैं। पाली में सोमनाथ और नौलखा मंदिर शिल्पकला के लिए मशहूर हैं। उर्स के दौरान मीर मस्तान की दरगाह मुख्य आकर्षण होता है। जोधपुर शहर फोर्ट, पैलेस और मंदिरों के लिए दुनियाभर में मशहूर है, लेकिन एडवेंचर स्पोर्ट्स और खाने-पीने के शौकीनों को भी यह शहर खूब आकर्षित करने लगा है। रंग-बिरंगे परिधान में सजे लोग और उनकी मनमोहक लोक-नृत्य व संगीत इस शहर की समां में चार-चांद लगा देते हैं। यह राजस्थान के बीचोंबीच स्थित है, इसलिए इसे राजस्थान का दिल भी कहा जाता है। राठौड़ वंश के प्रमुख राव जोधा ने इस शहर की स्थापना वर्ष 1459 में की थी। उन्हीं के नाम पर इस शहर का नाम जोधपुर है। यह शहर सन सिटी और ब्लू सिटी के नाम से भी मशहूर है। इसे सन सिटी इसलिए कहा जाता है, क्योंकि यहां की धूप काफी चमकीली होती है। वहीं, मेहरानगढ़ किला

जोधपुर जाने वाले पर्यटकों में उमेद भवन पैलेस के प्रति एक खास आकर्षण होता है। महाराजा उमेद सिंह (1929-1942) ने इसे बनवाया था। दरअसल, यह दुनिया के सबसे बड़े प्राइवेट रेजिडेंस में से एक है। इसमें तकरीबन 347 कमरे हैं। महल की खासियत है कि इसे बलुआ पत्थरों से जोड़ कर बनाया गया था। इस बेजोड़ महल के वास्तुकार हेनरी वॉन थे। महल का एक हिस्सा हेरिटेज होटल में परिवर्तित कर दिया गया है, जबकि बाकी हिस्से को म्यूजियम का रूप दे दिया गया है, जिसमें राजघराने से जुड़ी वस्तुओं को प्रदर्शित किया गया है।

मेहरानगढ़ किला

जोधपुर जाएं, तो मेहरानगढ़ फोर्ट देखना न भूलें। करीब 150 मीटर ऊंचे टीले पर बना यह किला भारत के सबसे बड़े फोर्ट में से एक है। यहां से जोधपुर शहर का शानदार नजारा दिखाई देता है। इसका निर्माण राव जोधा ने 1459 में करवाया था। यहां पहुंचने के लिए घुमावदार रास्तों और पथरीले टीलों से होकर गुजरना होगा, लेकिन फोर्ट पहुंचने के बाद इसकी भव्यता देखते ही बनती है। इस किले में कई पोल यानी प्रवेशद्वार हैं, जिनमें जयपोल,

फतहपोल और लोहपोल प्रमुख हैं। किले में स्थित महलों को देखने के बाद आपको मेहरानगढ़ की भव्यता का एहसास होगा। उस दौर की राजशाही वस्तुओं व धरोहर भी यहां देखे जा सकते हैं। किले की प्राचीर पर आज भी तोपें रखी हैं।

जसवंत थड़ा

मेहरानगढ़ किले से कुछ ही दूरी पर जसवंत थड़ा बेहद खूबसूरत स्मारक है। पहाड़ों से घिरे सफेद संगमरमर की बनी इस स्मारक की नक्काशी देखते ही बनती है। इसके पास ही एक झील है, जो चांदनी रात में स्मारक की खूबसूरती में चार चांद लगा देती है। यह जोधपुर राजपरिवार के राठौड़ राजा-महाराजाओं का समाधि स्थल भी है।

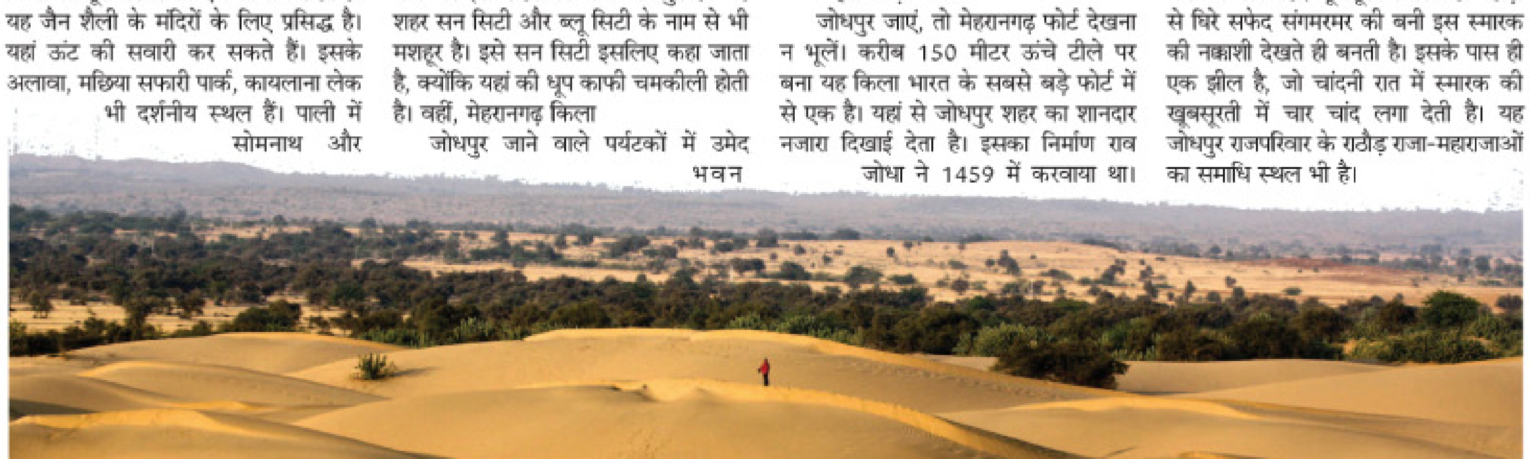

यहां घुमने जाना किसी ख्वाब से रू-ब-रू होने सरीखा है

आसमान की छंटती कालिमा कब उजली नीलिमा में बदल जाती है, पता ही नहीं लगता...बस महसूस होता है कि कुछ क्षण पहले ही तो आकाश का रंग कुछ और था अब कुछ और...लेकिन लंढोर में कुछ और भी होता है...सुबह जब यहां अंगड़ाई लेती है...तब वादियों से उठता कुहासा उसे आगोश में भरने लगता है...तब यह इलाका हौले-हौले उठते कुहासे, हरियाली और लाल छतों के बीच ध्यान योग में डूबा सा लगता है। यहां आना किसी ख्वाब से रू-ब-रू होने सरीखा है। रूह के रूहानी अहसासों से घुल-मिल जाने की तरह। सूरी के पास एक छोटी-सी जगह है। नाम है लंढोर। मसूरी के ग्लैमर और कोलाहल वाले मॉल रोड से कोई चार-पांच किलोमीटर दूर। शांत। शुद्ध हवा, ऊंचे पहाड़ों की कतारें, वादियां। देवदार के हजारों वृक्षों का सम्मोहित कर देने वाला संसार। कहा जाता है जब अंग्रेज यहां आए तो मोहित हो गए। उन्होंने इस शांत स्वर्ग में कॉटेज बनाए, एस्टेट खड़े किए। यहीं के होकर रह गए। बाद में लंढोर साहित्यकारों, कवियों और दार्शनिकों की पसंदीदा स्थली बना। यहां की फिजाओं में अब भी अलग ही बात है, अलग ही संगीत। बेहद मौलिक है, बेहद प्योर। लंढोर अगर अब भी उतना ही हसीन और अलौकिक बना हुआ है, तो शायद इसीलिए, क्योंकि यहां प्रकृति से कोई छेड़छाड़ नहीं हुई। यहां चुनिंदा लोग रहते हैं। रहने की शर्त यही है कि प्रकृति से कोई छेडखानी नहीं। जो कुछ जैसा है, वह वैसा ही रहेगा। उन्हें इसी के बीच एडजस्ट होना है।

कुछ अलग है लंढोर

जब क्वीन ऑफ हिल्स की बात होती है, तो उसका मतलब मसूरी के साथ उसकी पड़ोसी बहन लंढोर से भी होता है। जैसे-जैसे आप इसके सीमेंटनुमा संकरे घुमावदार रास्तों से ऊपर की ओर बढ़ेंगे, यह इलाका अपने सुहानेपन की परतें खोलने लगेगा। देवदार, हिमालयन ओक, चीड़ पाइन, ब्लू पाइन और तमाम पहाड़ी पेड़-पौधों के बीच फूलों की छटा मिलेगी। पक्षियों का एंबियंस होगा। यह जगह अपने आपमें एक जीती-जागती बर्ड सैंक्चुअरी भी है। यहां दिनों-दिन पक्षियों की प्रजातियां बढ़ रही हैं। कुछ नए मेहमान पक्षी भी आना-जाना बढ़ा रहे हैं। मोटे तौर पर यहां 350 पक्षियों की प्रजातियां तो हमेशा मिल जाएंगी। बरसात की हल्की फुहारों के बीच यहां पहुंचेंगे, तो ऊंचाई पर धुंध के बीच फुहारें टप-टप करती हुई मिलेंगी। यहां सबसे ऊंचाई पर पहुंचने के बाद सामने दिखने लगेंगी हिमालय रेंज की प्रसिद्ध चोटियां। जाड़ों के मौके पर ये चोटियां बर्फ की सफेद चादर ओढ़े होती हैं और सूरज की किरणें पड़ते ही चांदी-सी दमकती हैं। नीचे हरियाली से भरी वादियां और ऊंचे देवदार वृक्ष। यह इलाका तिब्बत का करीबी पड़ोसी भी कहा जाता है। कहीं भी जाइए। चारों ओर नजर दौड़ाइए तो हर पल एक अलग खुशनुमा कैनवस दिखेगा। पास से लेकर दूर तक।

अंग्रेजों ने बसाया था

अंग्रेजी सेना का अफसर कैप्टेन यंग 19वीं सदी के शुरू में यहां पहुंचा।

यहां सबसे पहला पक्का घर भी कैप्टन यंग का ही बना था। फिर यहां सेना की छावनी बनी। इस छोटे, खूबसूरत और शांत कस्बे को 1827 में ब्रिटिश आर्मी ने बसाया। दक्षिण- पश्चिम वेल्स के चारमोरथेनशायर के एक गांव लैंडवोरर के नाम पर इस जगह को नाम मिला लंढोर। यह मसूरी से करीब 300 मीटर और ऊपर है।

ग्लोबल इंडियन प्रवासी कबड्डी लीग ने न्यूयॉर्क के टाइम्स स्क्वायर को किया रोशन

एजेंसी

गुरुग्राम (हरियाणा)। ग्लोबल इंडियन-प्रवासी कबड्डी लीग (जीआई-पीकेएल) भारत और दुनिया भर में लोकप्रियता हासिल कर रही है। न्यूयॉर्क के प्रतिष्ठित टाइम्स स्क्वायर पर एक डिजिटल कैंपेन के जरिए भारत के पारंपरिक खेल कबड्डी को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया गया।यह ऐतिहासिक कदम भारतीय कबड्डी के लिए एक बड़ी छलांग साबित हुआ, जिसने न केवल इस खेल की वैश्विक अपील को उजागर किया, बल्कि लीग के सीमाओं से परे दर्शकों से जुड़ने के प्रयासों को भी रेखांकित किया। टाइम्स स्क्वायर पर कबड्डी की यह भव्य उपस्थिति भारत के स्वदेशी खेल की दुनिया के सबसे बड़े डिजिटल मंचों में से एक पर शानदार प्रस्तुति का प्रतीक बनी।अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी भी जीआई-पीकेएल में अपने अनुभव का आनंद ले रहे हैं, जो दुनिया भर में कबड्डी की बढ़ती लोकप्रियता को दर्शाता है। केन्या की आइरीन एटिएनो ओटिएनो, जो जीआई-पीकेएल में हरियाणवी ईगल्स टीम का हिस्सा हैं, ने कहा, मेरा अनुभव बहुत सीखने वाला रहा है, क्योंकि मुझे लगा था कि मैं कबड्डी के सभी नियम जानती हूं। लेकिन यहां आकर मुझे एक और अधिक पेशेवर तरीके से कबड्डी खेलना सीखने को मिला। मैं बहुत विनम्र महसूस कर रही हूं। हंगरी की जीता कोर्बर ने कहा, मैं इस अनुभव का बहुत आनंद ले रही हूं।

9 के 9 राउंड जीतकर मैगनस कार्लसन बने ग्रेनके फ्री स्टाइल शतरंज के विजेता

कार्ल्सरुए, जर्मनी। दुनिया के नंबर एक शतरंज खिलाड़ी और पाँच बार के क्लासिकल विश्व चैम्पियन मैगनस कार्लसन नें एक और इतिहास बनाते हुए अब फ्रीस्टाइल फॉर्मेट में सम्पन्न हुए ग्रेनके इंटरनेशनल शतरंज का खिताब एक नया रिकॉर्ड बनाते हुए अपने नाम कर लिया है । अंतिम नौवे राउंड में उन्होने जर्मनी के विन्सेंट केमर को पराजित करते हुए अपनी लगातार 9वीं जीत दर्ज की। फ्री स्टाइल शतरंज का एक ऐसा फॉर्मेट है जिसमें शतरंज के मोहोरो की शुरुआती स्थिति को बदल दिया जाता है और इस फॉर्मेट में खुद को ढालना बड़े बड़े खिलाड़ियों के लिए मुश्किल हो रहा है ऐसे में कार्लसन का सभी मुक़ाबले जीतकर खिताब जीतना अविसश्वसनीय है । कार्लसन जहां 9 अंक बनाकर पहले स्थान पर रहे तो दूसरे से लेकर आठवे स्थान तक सभी खिलाड़ी सिर्फ 7 अंक ही बना सके और उनमें बेहतर टाईब्रेक के आधार पर ईरान के परहम मघसूदलू , रूस के आन्द्रे इसीपेंकों, जर्मनी के स्वाने फ़्रेडरिक, यूएसए के दोमिंगेज पेरेज, सर्बिया के अलेक्सी सराना, भारत के अर्जुन एरीगैसी, यूएसए के फबियानों करूआना क्रमशः दूसरे से आठवे स्थान पर रहे जबकि 6.5 अंको पर टाईब्रेक के आधार पर अजरबैजान के ममेदोव रौफ नौवे और भारत के लियॉन मेंदोसा दसवें स्थान पर रहे ।

भारत की कोनेरु हम्पी नें जीता फीडे महिला ग्रां प्री शतरंज पुणे का खिताब

पुणे। फीडे महिला ग्रांड प्री के पांचवें पड़ाव का आयोजन पुणे में सफलता पूर्वक हो गया और भारत के लिए गर्व का क्षण तब बना जब भारत की ही वर्तमान विश्व रैपिड चैम्पियन ग्रांड मास्टर कोनेरु हम्पी नें शानदार खेल दिखाते हुए यह खिताब अपने नाम कर लिया । हम्पी नें आखिरी राउंड में बुल्गारिया की सलिमोवा नुर्ग्युल को एक लंबे चले हाथी और घोड़े के एंडगेम में पराजित करते हुए 7 अंक बनाकर पहला स्थान हासिल कर लिया हालांकि हम्पी के साथ चीन की जु जिनर भी 7 अंक बनाने में कामयाब रही उन्होने अंतिम राउंड में रूस की पोलिना शुवालोवा को मात दी पर चूंकि हम्पी नें व्यक्तिगत मुक़ाबले में जिनर को पराजित किया था वह टाईब्रेक में पहले स्थान पर रही और जिनर को उपविजेता के स्थान से संतोष करना पड़ा । हम्पी इस जीत के साथ हम्पी ना सिर्फ ग्रां प्री की रैंकिंग में दूसरे स्थान पर पहुँच गयी है बल्कि अगले साल होने वाली फीडे कैंडिडैट चैंपियनशिप में उनका स्थान अब लगभग पक्का नजर आ रहा है । उन्होने विश्व रैंकिंग में भी बड़ा सुधार किया है और 2543 रेटिंग के साथ वापस पांचवें स्थान पर पहुंची है । भारत की दिव्या देशमुख भी अपने शानदार खेल के चलते 5.5 अंक बनाकर तीसरे स्थान पर रही , दिव्या नें अंतिम राउंड में पोलैंड की अलिना कश्लिंस्कया से ड्रॉ खेला । दिव्या के लिए यह ग्रां प्री में अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा ।

सुपरबेट रैपिड शतरंज : दो जीत से प्रज्ञानन्दा की शुरुआत

वारशॉ , पोलैंड । भारतीय शतरंज जगत के चमकते सितारे और भविष्य की बड़ी उम्मीद आर प्रज्ञानन्दा और अरविंद चितांबरम इस समय दुनिया के दिग्गज खिलाड़ियों के साथ ग्रांड चैस टूर 2025 के पहले पड़ाव सुपरबेट रैपिड और ब्लिट्ज़ शतरंज में भाग ले रहे है और पहले दिन रैपिड के तीन मुकाबलों के बाद प्रज्ञानन्दा 2 अंक बनाकर सयुंक्त दूसरे स्थान पर चल रहे है । प्रज्ञानन्दा नें दिन की शुरुआत फ्रांस के दिग्गज खिलाड़ी मकसीम लागरेव को पराजित करते हुए की और उसके बाद हमवतन अरविंद चितांबरम के खिलाफ एक बेहतर लग रही बाजी पहले हारने के करीब पहुंचे और फिर वापस उसे जीतने में सफल रहे जबकि दिन के आखिरी मुक़ाबले में उन्हे रोमानिया के बोगदान डेनियल से अप्रत्याशित हार का सामना करना पड़ा । फिलहाल सर्बिया के व्लादिमीर फेडोसीव 2.5 अंक बनाकर पहले स्थान पर चल रहे है । भारत के अरविंद चितांबरम जिन्होने पहले राउंड में बोगदान डेनियल से ड्रॉ खेला और दूसरे मुक़ाबले में प्रज्ञानन्दा से उन्हे हार मिली।

बुंदेसलीगा: हैरी केन निर्णायक मुकाबले से बाहर, लेकिन जल्द मना सकते हैं जीत का जश्न

एजेंसी

बर्लिन। इंग्लैंड के स्टार स्ट्राइकर हैरी केन जहां भी खेलते हैं, गोल करने के रिकॉर्ड तोड़ते नजर आते हैं। इंग्लैंड राष्ट्रीय टीम हो, टोटेनहम हॉटस्पर या फिर अब बायर्न म्यूनिख –31 वर्षीय केन ने खुद को एक अजेय गोल मशीन के रूप में स्थापित किया है। हालांकि, उनके करियर पर एक दुखद साया भी है, 16 साल और 500 से ज्यादा पेशेवर मुकाबले खेलने के बावजूद, अब तक वह कोई बड़ा खिताब जीतने में असफल रहे हैं।

खिताब जीतने के लक्ष्य से जुड़े बायर्न म्यूनिख

इस 'कभी न जीतने वाले' खिलाड़ी की छवि से बाहर निकलने के लिए केन ने पिछले साल जर्मन चैंपियन बायर्न म्यूनिख का दामन थामा था।हालांकि बायर्न इस सीजन में चैंपियंस लीग और जर्मन कप से बाहर हो चुका है, लेकिन बुंदेसलीगा

खिताब और 2025 फीफा क्लब वर्ल्ड कप उनके सामने उपलब्ध विकल्प हैं। बायर्न फिलहाल लीग में तीन मुकाबले बाकी रहते हुए आठ अंकों की मजबूत बढ़त बनाए हुए है, जिससे उनका चैंपियन बनना लगभग तय माना जा रहा है।

निलंबन से लगा झटका

बायर्न की माइन्ज पर 3-0 की जीत के दौरान केन को पहले हाफ में गेंद रोकने के लिए पीला कार्ड दिखाया गया, जो इस सीजन का उनका पांचवां कार्ड था।

बुंदेसलीगा के नियमों के अनुसार, अब केन एक मुकाबले के लिए सस्पेंड हो गए हैं और वे आरबी लीपज़िग के खिलाफ अहम मुकाबला नहीं खेल पाएंगे। केन ने सिन्हुआ के हवाले से कहा, यह शायद मेरी कहानी का हिस्सा होगा कि मैं लीपज़िग का मुकाबला मिस करूंगा। लेकिन अगर हम खिताब जीतते हैं, तो मैं सबसे ज्यादा जश्न मनाऊंगा। टीम साथी थॉमस मुलर ने बताया, ड्रेसिंग रूम में वह काफी निराश दिखे।

नियमों पर उठाए सवाल

केन ने जर्मन नियमों की आलोचना करते हुए कहा, यह पागलपन है कि मुझे एक ऐसे मुकाबले में निलंबित किया गया, जबकि मेरा पहला पीला कार्ड सीजन के पहले मैच में आया था। नियमों को प्रीमियर लीग की तरह बदला जाना चाहिए। मुलर ने भी रेफरी की संवेदनशीलता की कमी पर सवाल उठाए, जबकि जर्मन मीडिया ने केन को नियमों से अवगत रहने की सलाह दी। केन ने कहा, यह कतई पीला कार्ड नहीं था, और जोड़ा, कुछ लोग हमारे एरिना में ध्यान आकर्षित करने के लिए आते हैं। रेफरी आयुक्त मार्को फ्रिट्ज ने रेफरी के फैसले को नियमों के अनुरूप 100 प्रतिशत सही बताया, हालांकि उन्होंने सख्ती और विवेक के बीच संतुलन बनाए रखने की चुनौती भी मानी।

नाहन के नमन भटनागर ने काठमांडू में जीता स्वर्ण

एजेंसी

नाहन। हिमाचल प्रदेश का एक छोटा सा शहर, जहां की गलियों में बड़े सपने पलते हैं। इन्हीं सपनों में से एक सपना था टेबल टेनिस की दुनिया में अंतरराष्ट्रीय पहचान बनाने का। 17 वर्षीय टेबल टेनिस खिलाड़ी नमन भटनागर अपने सपनों को साकार करने की राह पर है।नमन की प्रारम्भिक शिक्षा नाहन में हुई और अब वो अपने अभिभावकों के साथ धर्मशाला में रहता है।

नेपाल की राजधानी काठमांडू में आयोजित टेबल टेनिस की दक्षिण एशियाई युथ चैंपियनशिप में नमन ने इतिहास रच दिया। अंडर-19 पुरुष डबल्स मुकाबले में तमिलनाडु के खिलाड़ी सुरेश राजपर्श के साथ जोड़ी बनाकर नमन ने शानदार प्रदर्शन किया और मेजबान नेपाल के खिलाड़ियों को फाइनल में 3-1 से पराजित कर स्वर्ण पदक भारत के नाम किया।यह उपलब्धि इसलिए भी खास है क्योंकि यह नमन का अंतरराष्ट्रीय मंच पर पहला गोल्ड मेडल है। इससे पहले नमन ने मिस्त्र में आयोजित वर्ल्ड टेबल टेनिस टूर्नामेंट के अंडर-15 वर्ग में ब्रॉन्ज मेडल जीता था। शुरुआती पढ़ाई नाहन के कार्मल कॉन्वेंट स्कूल से करने के बाद नमन ने खेल में बेहतर अवसरों के लिए बाहर का रुख किया। आज वह खेलो इंडिया नगरोटा अकादमी में प्रशिक्षण ले रहे हैं। अंडर-15 श्रेणी में भारत में छठी और विश्व में 47 वीं रैंक हासिल करने वाला यह खिलाड़ी अब अंडर-19 वर्ग में भी देश का नाम रौशन कर रहा है। नमन के माता-पिता शिक्षा जगत से जुड़े रहे हैं। पिता विकास भटनागर वर्तमान में धर्मशाला में जेल अधीक्षक हैं और माता दुर्गेश भटनागर एक स्कूल लेक्चरर हैं।

आईपीएल 2025: विराट कोहली ने हासिल की ऑरेंज कैप, सूर्याकुमार यादव को पछाड़ा

एजेंसी

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 में खेले गए डबल हेडर मुकाबलों के बाद ऑरेंज और पर्पल कैप की रेस में बड़ा उलटफेर देखने को मिला।

ऑरेंज कैप दो बार बदली। पहले मुंबई इंडियंस के सूर्याकुमार यादव ने गुजरात टाइटंस के बी साई सुधर्शन को पछाड़ा। सूर्या ने लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ 28 गेंदों में 54 रनों की तेजतर्रार पारी खेलकर 417 रन बनाने वाले साई सुदर्शन को पीछे छोड़ते हुए 427 रन तक पहुंच गए थे। हालांकि, दिन का दूसरा मुकाबला आते-आते सूर्या की खुशी ज्यादा देर टिक नहीं सकी। दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के लिए खेलते हुए विराट कोहली ने 47 गेंदों पर 51 रन बनाए और कुल 443 रन के साथ ऑरेंज कैप अपने नाम कर ली। अब साई सुदर्शन के पास सोमवार को राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ मुकाबले में अच्छा प्रदर्शन कर टॉप पर लौटने का मौका रहेगा।

टॉप-5 बल्लेबाज

विराट कोहली - 443 रन
सूर्याकुमार यादव - 427 रन
बी साई सुदर्शन - 417 रन
निकोलस पूरन- 404 रन

मिशेल मार्श - 378 रन

पर्पल कैप की रेस में जोश हेजलवुड सबसे आगे

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के जोश हेजलवुड अब पर्पल कैप की रेस में सबसे आगे निकल गए हैं। गुजरात टाइटंस के खिलाफ 36 रन देकर दो विकेट लेने के बाद उनके दस मैचों में कुल 18 विकेट हो गए हैं।

टॉप-5 गेंदबाज

जोश हेजलवुड (आरसीबी) - 18 विकेट
प्रसिद्ध कृष्णा (जीटी) - 16 विकेट
नूर अहमद (सीएसके) - 14 विकेट
ट्रेंट बोल्ट (एमआई) - 13 विकेट
क्रुणाल पांड्या (आरसीबी) और हर्षल पटेल (एसआरएच) - 13-13 विकेट।

लिवरपूल ने रचा इतिहास, टोटनहम को 5-1 से हराकर जीता 20वां प्रीमियर लीग खिताब

एजेंसी

लिवरपूल। लिवरपूल ने एनफील्ड में टोटनहम को 5-1 से करारी शिकस्त देकर प्रीमियर लीग खिताब अपने नाम किया और इंग्लिश टॉप-फ्लाइट फुटबॉल में मैनचेस्टर यूनाइटेड के 20 खिताबों की बराबरी कर ली। आर्ने स्लॉट की टीम ने शुरुआती झटका खाने के बाद जबरदस्त वापसी की और पूरे मैच में दबदबा बनाए रखा।

60,000 से अधिक दर्शकों की गूंज के बीच मुकाबला शुरू हुआ। शुरुआती हमलों के बावजूद लिवरपूल को 12वें मिनट में झटका लगा, जब डोमिनिक सोलांके ने जेम्स मैडिसन के कॉर्नर से शानदार हेडर लगाकर टोटनहम को बढ़त दिला दी। लेकिन लिवरपूल ने महज चार मिनट बाद लुईस डियाज़ के गोल से बराबरी हासिल कर ली, जिसे वीएआर ने मंजूरी दी। इसके बाद एलेक्सिस मैक एलिस्टर ने 24वें मिनट में शानदार गोल कर लिवरपूल को बढ़त दिला दी। फिर कोडी गाकपो ने तीसरा गोल दागकर टोटनहम की मुश्किलें बढ़ा दीं।

दूसरे हाफ में लिवरपूल का जलवा, सालाह का सेल्फी सेलिब्रेशन

दूसरे हाफ में भी लिवरपूल ने अपना दबदबा कायम रखा। टॉप स्कोरर मोहम्मद सालाह ने डोमिनिक सोबोस्लाई के पास पर शानदार गोल

दागा और उसके बाद एक फैन का फोन लेकर 'कॉप एंड' के सामने सेल्फी ली, जिससे स्टेडियम में खुशी की लहर दौड़ गई।लगातार गूंजते नारों वी आर गोइंग टू विन द लीग और वी शैल नॉट बी मूव्ड ने माहौल को और खास बना दिया। 70वें मिनट में टोटनहम के डेस्टिनी उडोगी के आत्मघाती गोल ने लिवरपूल की बढ़त 5-1 कर दी और मुकाबला पूरी तरह एकतरफा हो गया।

फैन्स ने मुकाबले से पहले एनफील्ड के बाहर लिवरपूल 20 टाइम चैंपियंस के झंडे और स्कार्फ्स लहराए। कोविड के कारण 2020 में जश्न नहीं मना सके लिवरपूल फैन्स ने इस बार खिताबी जीत का भरपूर आनंद उठाया।

राजस्थान के लिए प्लेऑफ की उम्मीदें लगभग खत्म, शेन बॉन्ड बोले- अब भी बहुत कुछ दांव पर

एजेंसी

जयपुर। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 में राजस्थान रॉयल्स की हालत बेहद नाजुक हो गई है। नौ में से केवल दो मैच जीतकर टीम अंकतालिका में नीचे से दूसरे स्थान पर है। हालांकि अब भी गणितीय तौर पर प्लेऑफ की उम्मीद बची है, लेकिन गेंदबाजी कोच शेन बॉन्ड ने माना कि इस सीजन में टीम के लिए आगे का रास्ता मुश्किल नजर आ रहा है। बावजूद इसके उन्होंने भरोसा दिलाया कि बचे हुए पांच लीग मैचों में टीम और खिलाड़ी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन देने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। राजस्थान रॉयल्स ने हाल के कुछ मुकाबले बेहद करीबी अंतर से गंवाए हैं। शेन बॉन्ड ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, सबसे कठिन बात यह है कि हम लगभग 35 ओवरों तक मैच पर नियंत्रण में रहे, लेकिन आखिरी पलों में विपक्षी टीमें हमसे बेहतर साबित हुईं। अगर आप अंकतालिका देखें तो हम सोचते हैं कि हम कहां हो सकते थे, लेकिन अब कुछ नहीं किया जा सकता। उन्होंने आगे कहा, शायद अब हम टूर्नामेंट से बाहर हैं, लेकिन अभी भी बहुत कुछ दांव पर है। टीम के लिए सीजन को मजबूती से खत्म करना और व्यक्तिगत तौर पर भविष्य के लिए खुद को साबित करना जरूरी है।इस सीजन में राजस्थान की मुश्किलें कई मोर्चों पर रही हैं।

कप्तान संजू सैमसन चोट के कारण ज्यादातर समय टीम से बाहर रहे, जिसकी वजह से 22 वर्षीय रियान पराग को कप्तानी संभालनी पड़ी और 14 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी को ओपनिंग करनी पड़ी। हालांकि वैभव ने अपने हुनर की झलक दिखाई, लेकिन बाकी बल्लेबाजों की असंगत प्रदर्शन ने टीम को नुकसान पहुंचाया। राजस्थान अब तक पांच बार लक्ष्य का पीछा करते हुए हार चुका है। पावरप्ले में सबसे तेज रन बनाने के बावजूद, टीम मिडिल और डेथ ओवर्स में रन गति बनाए रखने में असफल रही है। स्पिनर्स का प्रदर्शन भी बेहद खराब रहा, जिनकी इकॉनमी रेट (9.16) और स्ट्राइक रेट (23) लीग में सबसे खराब में शामिल हैं। बॉन्ड ने अपनी गेंदबाजी इकाई का बचाव करते हुए कहा, हाल के तीन मैचों में हमने विपक्षी टीमों को ऐसे स्कोर पर रोका जिसे हम आसानी से चेज़ कर सकते थे। हमने मौके गंवाए, खासकर बल्लेबाजी में। जोफ्रा आर्चर ने अच्छी गेंदबाजी की लेकिन उतनी नियमितता से विकेट नहीं निकाल पाए जितनी गुजरात टाइटंस के प्रसिद्ध कृष्णा ने। वहीं तुषार देशपांडे और संदीप शर्मा भी निर्णायक क्षणों में प्रभावी साबित नहीं हो पाए। गुजरात टाइटंस के खिलाफ सोमवार को होने वाला मुकाबला राजस्थान के लिए 'करो या मरो' जैसा होगा। हारने पर प्लेऑफ की आखिरी उम्मीद भी टूट जाएगी, लेकिन जीतने पर टीम कुछ समय के लिए दौड़ में बनी रह सकती है।

द्वितीय एशियाई योगासन खेल चैम्पियनशिप का भव्य समापन, भारत बना स्वर्ण पदक विजेता

एजेंसी

नई दिल्ली। इंदिरा गांधी स्टेडियम (नई दिल्ली) में आयोजित द्वितीय एशियाई योगासन खेल चैम्पियनशिप का भव्य समापन समारोह आयोजित हुआ। तीन दिवसीय इस आयोजन में बीस एशियाई देशों के खिलाड़ियों ने योगासन में अपने अद्वितीय कौशल, शक्ति और अनुशासन का प्रदर्शन किया। यह सफल आयोजन योगासन भारत और एशियन योगासन द्वारा आयुष मंत्रालय, युवा मामलों और खेल मंत्रालय, भारतीय खेल प्राधिकरण (साई), संस्कृति और पर्यटन मंत्रालय तथा दिल्ली सरकार के सहयोग से किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि केंद्रीय कॉर्पोरेट मामलों के राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा ने आयोजकों की सराहना करते हुए योगासन को वैश्विक खेल मानचित्र पर स्थापित करने के प्रयासों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दृष्टिकोण से प्रेरित होकर योगासन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जो मान्यता मिल रही है, वह भारत की सांस्कृतिक धरोहर का गौरव बढ़ा रही है। समारोह में योग गुरु स्वामी रामदेव, दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, आयुष मंत्री प्रतापराव जाधव, संस्कृति और पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, युवा मामलों और खेल मंत्री डॉ मनसुख मांडविया तथा राज्य मंत्री रक्षाखडसे समेत कई गणमान्य अतिथियों ने शिरकत की। भारत ने 83 स्वर्ण पदक जीतकर योगासन खेलों में अपना वर्चस्व स्थापित किया। जापान ने दूसरा और मंगोलिया ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

आईपीएल 2025: बेंगलुरु ने दिल्ली को 6 विकेट से हराया, क्रुणाल-कोहली ने खेली दमदार पारी

एजेंसी

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के 46वें मैच में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) ने दिल्ली कैपिटल्स (डीसी) को 6 विकेट से हरा दिया। इसी के साथ आरसीबी अंक तालिका में 14 प्वाइंट के संग पहले नंबर पर भी पहुंच गई है। अरुण जेटली स्टेडियम में आरसीबी ने बॉलिंग चुनी। दिल्ली ने 8 विकेट खोकर 162 रन बनाए। बेंगलुरु ने 19वें ओवर में 4 विकेट के नुकसान पर लक्ष्य हासिल कर लिया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी आरसीबी की शुरुआत अच्छी नहीं थी। 26 के स्कोर पर टीम ने तीन विकेट गंवा दिए। अक्षर पटेल ने जैकब बेथेल (12) और देवदत्त पडिक्कल (0) को अना शिकार बनाया। वहीं, करुण नायर ने कप्तान रजत पाटीदार को रनआउट कर आरसीबी को तीसरा झटका दिया। इसके बाद विराट कोहली और क्रुणाल पांड्या ने मोर्चा संभाला। दोनों के बीच चौथे विकेट

के लिए 119 रन की साझेदारी हुई, जो आरसीबी की किसी भी जोड़ी के द्वारा निभाई गई सबसे बड़ी पार्टनरशिप है और चौथे विकेट के लिए इस सत्र की सबसे बड़ी साझेदारी भी है। दोनों ने दिल्ली के गेंदबाजों पर शिकंजा कसते हुए आरसीबी को शानदार जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई। इस दौरान क्रुणाल पांड्या ने 38 गेंदों में अपने करियर का दूसरा अर्धशतक पूरा किया। इससे पहले उन्होंने 2016 में पचासा जड़ा था। वह 47 गेंदों में 73 रन बनाकर नाबाद रहे। वहीं, विराट कोहली ने इस आईपीएल सीजन का छठा अर्धशतक लगाया। उन्होंने 45 गेंदों में 4 चौके की मदद से 51 रनों की अहम पारी खेली। आखिर में टिम डेविड ने पांच गेंदों में 19 रन बनाकर टीम को जीत दिला दी। दिल्ली के लिए कप्तान अक्षर पटेल को दो सफलता मिली, जबकि दुष्मंथा चमीरा ने विकेट चटकाया। इससे पहले, टॉस हारकर बल्लेबाजी करते हुए दिल्ली की शुरुआत ठीक ही रही। अभिषेक पोरेल और फाफ डु प्लेसिस के बीच पहले विकेट के लिए 33 रन की साझेदारी हुई। हेजलवुड ने पोरेल को 28 रन के निजी योग पर आउट किया। इसके बाद यश दयाल ने तीसरे नंबर पर आए करुण नायर को पवेलियन लौटा दिया। वह सिर्फ चार रन बना सके। उनके अलावा केएल राहुल ने तीन चौके की मदद से 41 रन बनाए, जबकि स्टब्स ने 188.88 के स्ट्राइक रेट से बल्लेबाजी करते हुए 34 रन बनाए। कप्तान अक्षर पटेल ने 15, आशुतोष शर्मा ने दो और विप्रज निगम ने 12 रन बनाए। वहीं, मिचेल स्टार्क और दुष्मंथा चमीरा खाता खोले बिना नाबाद रहे। आरसीबी के लिए भुवनेश्वर कुमार ने तीन विकेट लिए, जबकि हेजलवुड को दो विकेट मिले। इसके अलावा यश दयाल और क्रुणाल पांड्या को एक-एक सफलता मिली।

कप्तान के रूप में सभी कसौटियों पर खरे उतर रहे हैं पंत, लेकिन... : जहीर खान

मुंबई। लखनऊ सुपर जायंट्स के मेंटोर जहीर खान का मानना है कि ऋषभ पंत एक कप्तान के रूप में सभी सही कसौटियों पर खरे उतर रहे हैं लेकिन इस आईपीएल में खराब स्कोर से उबरने के लिए बल्ले से कुछ खास करने की जरूरत है। पंत का इस आईपीएल में बल्ले से निराशाजनक प्रदर्शन रहा है, उन्होंने 10 मैचों में 110 रन में बनाए हैं जिसमें वह छह बार इकाई अंक पर आउट हुए। उनकी चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ 63 रन की पारी ही शानदार रही। पंत मुंबई इंडियंस से मिली 54 रन की हार के दौरान कामचलाऊ स्पिनर विल जैक्स की गेंद पर आउट हो गए। जहीर ने वानखेड़े स्टेडियम में रून की हार के बाद मीडिया से कहा, मैं इसे किसी भी चीज से नहीं जोड़ूंगा। वह एक नेतृत्वकर्ता हैं और इस भूमिका में वह शानदार रहे हैं।

आईपीएल 2025 : मुंबई इंडियंस ने लखनऊ सुपर जाएंट्स को 54 रन से हराया

एजेंसी

मुंबई। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के 45वें मुकाबले में मुंबई इंडियंस ने लखनऊ सुपर जाएंट्स को 54 रनों के बड़े अंतर से मात दी। इस जीत के साथ मुंबई इंडियंस की टीम अंकतालिका में दूसरे स्थान पर पहुंच गई है। मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में खेले गए मैच में लखनऊ की टीम ने टॉस जीतकर गेंदबाजी का फैसला लिया। मुंबई इंडियंस ने पहले बल्लेबाजी की और 20 ओवर में 7 विकेट पर 215 रनों का बड़ा स्कोर बनाया। जवाब में लखनऊ की टीम 20 ओवर में 161 रन पर ऑल आउट हो गई। इससे टीम को 54 रन से हार का सामना करना पड़ा। इस मैच में जीत के साथ मुंबई की टीम अंक तालिका में नंबर 2 पर पहुंच गई है। मुंबई के 10 मैचों में 6 जीत और 4 हार के साथ 12 अंक है। वहीं लखनऊ की टीम 10 मैचों में 5 में जीत और 5 हार के साथ नंबर 6 पर है। उसके 10 अंक

है बड़े लक्ष्य का पीछा करते हुए लखनऊ टीम की शुरुआत अच्छी नहीं रही। सलामी बल्लेबाज एडेन मार्करम नौ रन बनाकर आउट हुए। इसके बाद निकोलस पूरन भी 15 गेंदों पर 27 रन बनाकर पवेलियन लौट गए। टीम के कप्तान ऋषभ पंत एक बार फिर नहीं चले। वे चार रन बनाकर आउट हुए। मिचेल मार्श ने कुछ देर क्रीज पर समय बिताया। हालांकि उनकी पारी भी 12वें ओवर में थम गई। मार्श 24 गेंदों पर 34 रन बनाकर आउट हुए। इम्पैक्ट प्लेयर के तौर पर उतरे डेविड मिलर ने आयुष बडोनी के साथ पारी को आगे बढ़ाया। बडोनी 35 रन और मिलर 24 रन बनाकर आउट हुए। इसके बाद लखनऊ के बल्लेबाजों के एक के बाद विकेट गिरते रहा। पूरी टीम 20 में 161 रन ही बना सकी। अब्दुल समद 2, रवि बिश्नोई 13 रन, दिग्वेश राठी एक रन, आवेश खान खाता भी नहीं खोल पाए। प्रिंस यादव ने नाबाद 4 रन बनाए। मुंबई के लिए जसप्रीत बुमराह ने 4, ट्रेंट बोल्ट ने 3 विकेट लिए, विल जैक्स को दो और के बॉश को एक विकेट मिला।

जीआईपीकेएल : तमिल लायनेस, पंजाबी टाइग्रेस, तेलुगू चीता और भोजपुरी लेपर्डेस सेमीफाइनल में

एजेंसी

गुरुग्राम। तमिल लायनेस, पंजाबी टाइग्रेस, तेलुगू चीता और भोजपुरी लेपर्डेस ने गुरुग्राम यूनिवर्सिटी में चल रही ग्लोबल इंडियन प्रवासी कबड्डी लीग (जीआईपीकेएल) के महिला सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया।महिला वर्ग में लीग चरण समाप्त हो गया। महिला सेमीफाइनल मुकाबले मंगलवार को खेले जाएंगे। जीआईपीकेएल भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लगातार लोकप्रिय हो रही है, जिसकी झलक न्यूयॉर्क के प्रतिष्ठित टाइम्स स्क्वायर पर डिजिटल कैंपेन के जरिये देखने को मिली, जिससे भारत के इस स्वदेशी खेल को वैश्विक पहचान मिली। जीआईपीकेएल का फाइनल मुकाबला खेला जाएगा। जीआईपीकेएल चैंपियनशिप ट्रॉफी लीग में सर्वोच्चता का प्रतीक है, जो प्रतियोगिता में अतिरिक्त रोमांच जोड़ती है। पुरुष और महिला दोनों वर्गों के विजेता घोषित किए जाएंगे, लेकिन केवल एक टीम को भव्य चैंपियनशिप ट्रॉफी उठाने का गौरव प्राप्त होगा।खेले गए पहले मुकाबले में मराठी फाल्कन्स ने रोमांचक मुकाबले में पंजाबी टाइग्रेस को 33-28 से हराया। दोनों टीमों ने बेहतरीन रेडिंग की, जहां फाल्कन्स ने 20 रेड अंक और टाइग्रेस ने 19

रेड अंक हासिल किए। मराठी फाल्कन्स का मजबूत डिफेंस, जिसमें 11 टैकल अंक और दो सुपर टैकल शामिल थे, निर्णायक साबित हुआ। पंजाबी टाइग्रेस ने जोरदार मुकाबला किया, लेकिन फाल्कन्स ने धैर्य बनाए रखते हुए जीत दर्ज की। दूसरे मुकाबले में तेलुगू चीता ने हरयाणवी ईगल्स को एकतरफा मुकाबले में 43-14 से हरा दिया। चीता ने 25 रेड अंक और 12 टैकल अंक हासिल करते हुए छह बार ऑलआउट किया और मैच पर अपना दबदबा कायम रखा। हरयाणवी ईगल्स तालमेल बिठाने में संघर्ष करती रही और केवल 10 रेड अंक व 4 टैकल अंक ही जुटा सकी, जिससे तेलुगू चीता ने बड़ी और दमदार जीत दर्ज की। तीसरे और अंतिम लीग मुकाबले में तमिल लायनेस ने भोजपुरी लेपर्डेस को 34-21 से पराजित किया। लायनेस ने 20 रेड अंक के साथ रेडिंग में दबदबा बनाया और 10 टैकल अंकों के साथ मजबूत डिफेंस भी दिखाया। उन्होंने मैच के दौरान चार ऑलआउट किए और पूरे खेल में नियंत्रण बनाए रखा। भोजपुरी लेपर्डेस ने संघर्ष किया और दो ऑलआउट अंक भी हासिल किए, लेकिन तमिल लायनेस की सर्वांगीण श्रेष्ठता के सामने टिक नहीं पाई।

पहलगाम अटैक के बाद बॉलीवुड सिंगर्स का बड़ा फैसला, श्रेया घोषाल से अरिजीत सिंह तक ने कैंसल किए कॉन्सर्ट

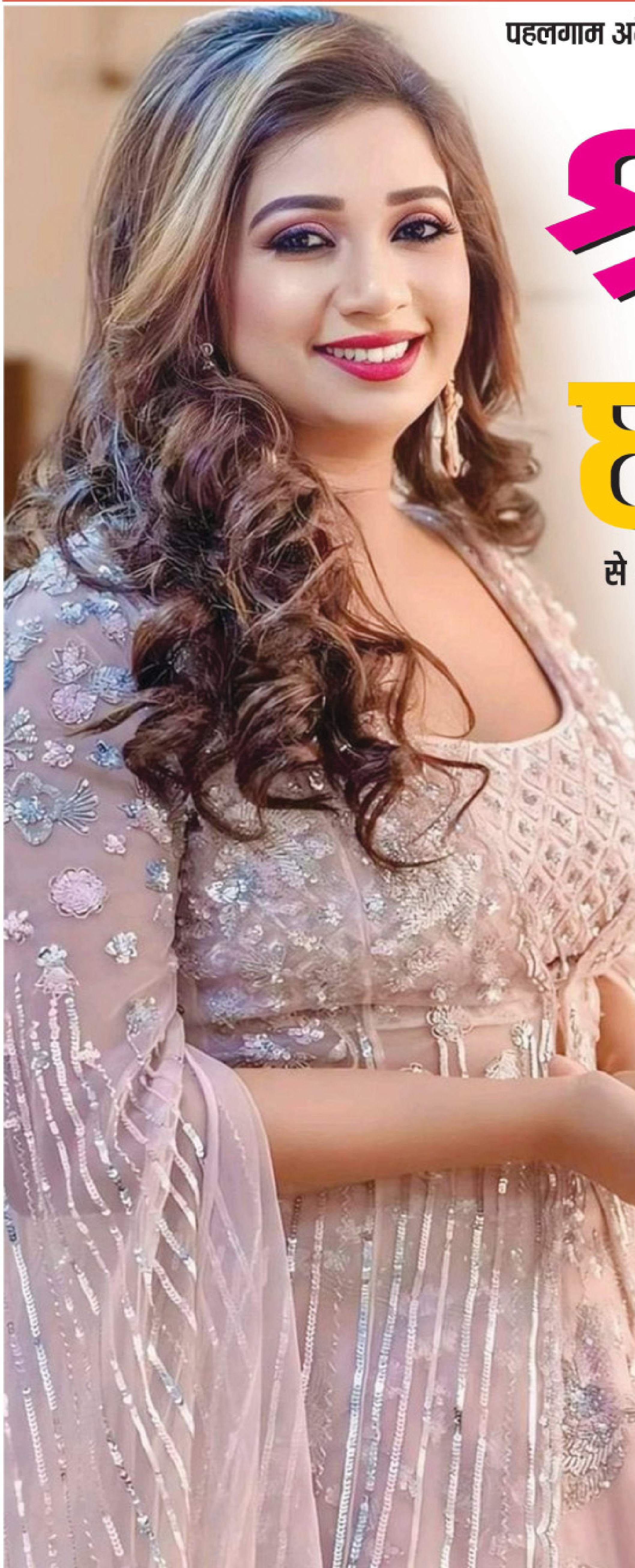

जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए दुर्भाग्यपूर्ण हादसे के बाद से तनाव की स्थिति देखने को मिल रही है. भारत और पाकिस्तान के रिश्ते अब फिर से एक बार पटरी से उतर गए हैं. भारत में इस टेरर अटैक का पुरजोर विरोध देखने को मिल रहा है. अब बॉलीवुड के एक्टर्स के बाद इंडस्ट्री के म्यूजिशियन्स और सिंगर्स ने भी इस घटना का विरोध किया है और अपने तरीके से शोक व्यक्त किया है. बीते दिनों कई सारे सिंगर्स ने पहलगाम अटैक के बाद से बड़ा निर्णय लिया है और अपने शोज कैंसल कर दिए हैं. इस दुख की घड़ी में कोई भी उत्सव नहीं मनाना चाहता है. इन सिंगर्स में अरिजीत सिंह से लेकर श्रेया घोषाल तक का नाम शामिल है.

रैपर एपी ढिल्लों ने रद्द किया एल्बम लॉन्च

22 अप्रैल 2025 का दिन देश के इतिहास में काला दिन साबित हुआ. इस दिन इंसानियत शर्मशार हुई. कुछ आतंकवादियों ने अचानक पहलगाम के पर्यटकों पर हमला बोल दिया और उनका धर्म पूछकर गोली मारी. इस हादसे के बाद से कश्मीर में वापस लौट रही खुशहाली एक बार फिर से मातम में बदल गई. ऑफिशियल आकड़ों की मानें तो हमले में 28 बेकुसूरों की जान चली गई. इसके बाद से शोक व्यक्त करते हुए सिंगर एपी ढिल्लों ने अपना एल्बम लॉन्च रद्द कर दिया. उन्होंने सोशल मीडिया पर नोट शेयर करते हुए लिखा- पहलगाम में मारे गए बेकुसूर लोगों के सम्मान में मैं आने वाली नोटिस तक अपना एल्बम रिलीज पोस्टपोन करता हूं. जो लोग भी इसमें प्रभावित हुए हैं उनके लिए मेरी संवेदनाएं हैं.

कैंसल हुए श्रेया घोषाल- अरिजीत सिंह के कॉन्सर्ट्स

पंडित दीनदयाल उपाध्याय इंदौर स्टेडियम में शनिवार के दिन सिंगर श्रेया घोषाल का 'ऑल हार्ट टूर' कॉन्सर्ट होना था जिसे इस हादसे के बाद कैंसल कर दिया गया. श्रेया ने इसपर स्टेटमेंट जारी करते हुए लिखा- हाल में हुए भयावह ईंसिडेंट के बाद से ऑर्गेनाइजर्स और आर्टिस्ट्स ने मिलकर ये फैसला लिया है कि वे आगामी कॉन्सर्ट को कैंसल कर रहे हैं. ये शो 26 अप्रैल 2025 को शनिवार के दिन सूरत में होना था. जिन लोगों का टिकट्स का पैसा लगा है उन्हें फुल रिफंड मिल जाएगा.

अंदाज अपना अपना की स्क्रीनिंग से आमिर ने बनाई दूरी

इसके अलावा फेमस सिंगर अरिजीत सिंह का बड़ा कॉन्सर्ट चेन्नई में रविवार 27 अप्रैल 2025 के दिन होने वाला था. लेकिन पहलगाम घटना का हवाला देते हुए ये कॉन्सर्ट भी रद्द कर दिया गया. वहीं साउथ फिल्मों के नामी म्यूजिक डायरेक्टर अनिरुद्ध रविचंदर के साथ भी ऐसा ही देखने को मिला. उन्होंने बेंग्लुरु में होने वाला अपना हुकुम टूर भी कैंसल कर दिया. वहीं बॉलीवुड सिंगर पापोन ने भी 26 अप्रैल 2025 को होने वाला अपना अहमदाबाद का शो रद्द कर दिया. इसके अलावा बॉलीवुड सुपरस्टार आमिर खान ने भी लाइमलाइट से दूरी बना ली. उन्होंने अंदाज अपना अपना फिल्म के रीरिलीज की स्पेशल स्क्रीनिंग में अपनी उपस्थिति दर्ज नहीं कराई.

भारत छोड़ लंदन शिफ्ट क्यों हुए विराट-अनुष्का

इस दिग्गज एक्ट्रेस के पति ने खोल दिए सारे राज

बीते करीब एक साल में मशहूर एक्ट्रेस अनुष्का शर्मा और विराट कोहली को कई दफा लंदन में देखा गया है. दोनों के लंदन में शिफ्ट होने की अटकलें लगाई जा गईं. वहीं अब दोनों के लंदन में शिफ्ट होने पर मुहर भी लग गई है. बॉलीवुड और क्रिकेट की इस सुपरस्टार जोड़ी के भारत छोड़कर लंदन में सेटल होने का खुलासा किया है दिग्गज एक्ट्रेस माधुरी दीक्षित के पति डॉ श्रीराम नेने ने. साथ ही उन्होंने कपल के भारत छोड़ने की वजह भी बताई है.

भारत छोड़ लंदन शिफ्ट क्यों हुए विराट-अनुष्का ?

अनुष्का और विराट के भारत छोड़कर लंदन में रहने को लेकर श्रीराम नेने ने बड़ा खुलासा किया है. श्रीराम नेने ने एक इंटरव्यू में कहा, मेरे मन में उनके लिए बहुत सम्मान है. हम उनसे कई बार मिल चुके हैं. वो बहुत अच्छे इंसान हैं. मैं आपको कुछ बताऊंगा और यही आपको सीखने को मिलेगा. हमने एक दिन अनुष्का से बातचीत की, और यह बहुत दिलचस्प थी. वो दोनों लंदन जाने के बारे में सोच रहे थे, क्योंकि वो अपनी सफलता का आनंद नहीं ले पा रहे थे इंडिया में. हम उनकी इस परेशानी की तारीफ करते हैं, क्योंकि वो जो कुछ भी करते हैं, वह ध्यान आकर्षित करता है. हम लगभग अलग-थलग पड़ जाते हैं.

बच्चों को सामान्य और साधारण जीवन देना चाहते हैं

अनुष्का और विराट ने ये फैसला अपने दोनों बच्चों को बेहतर परवरिश और सामान्य जीवन देने के लिए भी लिया है. माधुरी के पति और कार्डियक सर्जन डॉ श्रीराम नेने ने आगे बताया, मैं सबके साथ घुल-मिल जाता हूं. मैं काफी बिंदास हूं, लेकिन ये भी चैलेंजिंग हो जाता है. हमेशा एक सेल्फी मोमेंट होता है. ये बुरी तरह से नहीं है, लेकिन एक समय ऐसा आता है जब आप अपने परिवार के साथ डिनर या लंच पर होते हैं और आपके पास कोई सेल्फी लेने आता है तो आपको विनम्र होना पड़ता है. मेरी पत्नी के लिए, यह एक मुद्दा बन जाता है, लेकिन अनुष्का और विराट काफी अच्छे लोग हैं और वो अपने बच्चों को सामान्य तरीके से पालना चाहते हैं.

2017 में हुई थी विराट-अनुष्का की शादी

अनुष्का और विराट ने एक दूसरे को साल 2013 से डेट करना शुरू किया था. करीब चार साल की डेटिंग के बाद कपल ने 2017 में इटली में धूमधाम से शादी रचा ली थी. 2021 में कपल ने बेटी वामिका और 2024 में बेटे अकाय कोहली का वेलकम किया.

शाहरुख ने कुछ समय के लिए मन्नत क्या छोड़ा इन लोगों को हो गया भारी नुकसान, लगी लाखों की चपत

शाहरुख खान देश के ऐसे एक्टर हैं जिन्होंने फर्श से अर्श तक का सफर तय किया है. आज वे देश के सबसे कामियाब एक्टर्स में से एक माने जाते हैं. सुपरस्टार की पॉपुलैरिटी सिर्फ भारत में ही नहीं है बल्कि भारत के बाहर भी है. शाहरुख खान के घर मन्नत के बाहर उनकी एक झलक पाने के लिए लोगों की लाइन लगती है. इतनी भीड़ आती है कि पांव जमीन पर रखना भी मुश्किल हो जाता है. लेकिन फिलहाल मन्नत की गलियां सूनी पड़ी हैं. वजह है कि शाहरुख खान अपने परिवार के साथ दूसरी जगह शिफ्ट हो गए हैं. इस वजह से वहां पर लोगों की संख्या में भारी गिरावट देखने को मिली है. और इसका सीधा नुकसान आस-पास के वेंडर्स को भुगतना पड़ रहा है.

आस-पास के वेंडर्स को हो रही तकलीफ

हाल ही में एक सर्वे में सामने आया था कि शाहरुख खान का मन्नत देश की थर्ड मोस्ट फोटोग्राफ्ड प्लेसेज में से एक है. मन्नत में शाहरुख खान काफी समय से अपने परिवार के साथ रह रहे हैं. इस जगह पर उनसे मिलने के लिए, उनकी एक झलक पाने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं. लेकिन फिलहाल शाहरुख के मन्नत का रिनोवेशन चल रहा है. इस वजह से वे मौजूदा समय में फैमिली के साथ दूसरी जगह शिफ्ट हो गए हैं. ऐसे में मन्नत में नजर आने वाला लोगों का भारी हुजूम कम पड़ गया है. इसका सीधा नुकसान वहां पर आस-पास रेड़ी लगाने वाले लोगों पर पड़ रहा है.

शाहरुख नहीं तो मन्नत कुछ नहीं...

एक आइसक्रीम वेंडर ने बातचीत के दौरान बताया कि कुछ दिनों में ही भारी बदलाव हो गया. चूंकि शाहरुख खान हैं नहीं इसलिए ज्यादा लोग नहीं आ रहे हैं. एक दूसरे वेंडर ने कहा कि पहले ऐसा होता था कि लोग आते थे तो अच्छे खासे समय के लिए रुककर भी जाते थे. लेकिन अब जैसे ही लोगों को पता चलता है कि शाहरुख खान मन्नत में नहीं रह रहे हैं तो ऐसे में लोग रुकते भी नहीं हैं और तुरंत चले जाते हैं. लोग टैक्सी और ऑटो को रोकते भी नहीं हैं और बैठे-बैठे ही निकल जाते हैं. शख्स ने कहा कि शाहरुख खान है तो मन्नत है नहीं तो ये जगह कुछ भी नहीं है. शाहरुख की बात करें तो वे अबराम, सुहाना, आर्यन और गौरी खान के साथ बांद्रा के पाली हिल में शिफ्ट हो गए हैं.

सुसाइड या एक्सीडेंट? कैसे हुई सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर मिशा अग्रवाल की मौत? दोस्त ने बता दी वजह

सोशल मीडिया इंफ्लूएंसर मीशा अग्रवाल ने 24 अप्रैल को दुनिया से अलविदा कह दिया है. इस बात की कंफर्मेशन उनके परिवार की तरफ से मिली है. मीशा कॉमिक कंटेंट बनाने के लिए जानी जाती थी. हालांकि, किसी को ये नहीं पता था कि आखिर वो किस सिचुएशन से गुजर रही हैं. मौत की खबर सामने आने के बाद हर तरफ सिर्फ ये सवाल उठ रहा है कि आखिर अचानक से ऐसा कैसे हो गया, इसी बीच मीशा की फ्रेंड ने एक बड़ा हिंट दिया है.मीशा के बारे में बात करें, तो वो उत्तर प्रदेश के प्रयागराज की रहने वाली थीं. काफी वक्त से मीशा ने सोशल मीडिया पर अपनी कमाल की पहचान बनाई हुई है. यूट्यूब पर मीशा ने साल 2017 पर द माशी अग्रवाल शो के नाम से चैनल शुरू किया था. इंस्टाग्राम पर भी मीशा के अच्छे खासे फॉलोवर्स थे. 26 अप्रैल को मीशा अपना 25वां बर्थडे सेलिब्रेट करने वाली थीं, हालांकि उससे 2 दिन पहले ही उनके परिवार ने उनकी डेथ की खबर दे दी. हालांकि, परिवार की तरफ से मीशा की डेथ की कोई भी वजह नहीं बताई गई थी. लेकिन, मीशा की फ्रेंड मीनाक्षी भेरवान ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी में उनकी डेथ की वजह बताई है.

दोस्त ने स्टोरी की थी शेयर

दरअसल मीनाक्षी ने स्टोरी शेयर करते हुए लिखा, कल से ही मुझे कई सारे मैसेज मिल रहे हैं, जिसमें पूछा जा रहा है कि क्या हुआ. वह अब हमारे साथ नहीं है, और जिस तरह से वह चली गई, उससे हम में से कई लोग बुरी तरह से हिल गए और सभी का दिल टूट गया है. हम में से किसी ने भी यह नहीं देखा कि उसने 4 अप्रैल के बाद से कोई पोस्ट नहीं किया है और ऑनलाइन इतना एक्टिव रहने वाले शख्स के लिए ये बहुत कुछ कहता है. सुबह से ही, मेरा इनबॉक्स हर जगह से आने वाले प्यार से भर गया है, मैं बस यही चाहता हूं कि काश वो इसे देख सकती. उसको ये एहसास नहीं हुआ कि जो कुछ भी वो फील कर रही थी, उसकी जिंदगी उससे कई ज्यादा बड़ी थी. तुम्हारी याद आती है, तुमसे प्यार किया जाता है और मुझे उम्मीद है कि तुम्हें शांति मिली होगी.

मेंटली तौर पर थीं परेशान

मीशा की दोस्त की इस स्टोरी के बाद से ये अंदाजा लगाया जा सकता है कि मीशा मेंटली तौर पर सही फील नहीं कर रही थीं. हालांकि, उनकी डेथ की पोस्ट में भी कई सारे लोगों ने उनके सुसाइड करने की बात कही है और अब उनकी दोस्त की स्टोरी से भी ये चीज साफ हो रही है. मीशा लॉ की स्टूडेंट थी, हालांकि, पढ़ाई के साथ उन्होंने कंटेंट क्रिएटर के तौर पर भी अपना करियर बनाने की पूरी कोशिश की. हालांकि, वो एक हद तक सफल भी रहीं. इंस्टाग्राम की बात करें, तो उन्हें 3 लाख से ज्यादा लोग फॉलो करते हैं.